जैन विधि विधान

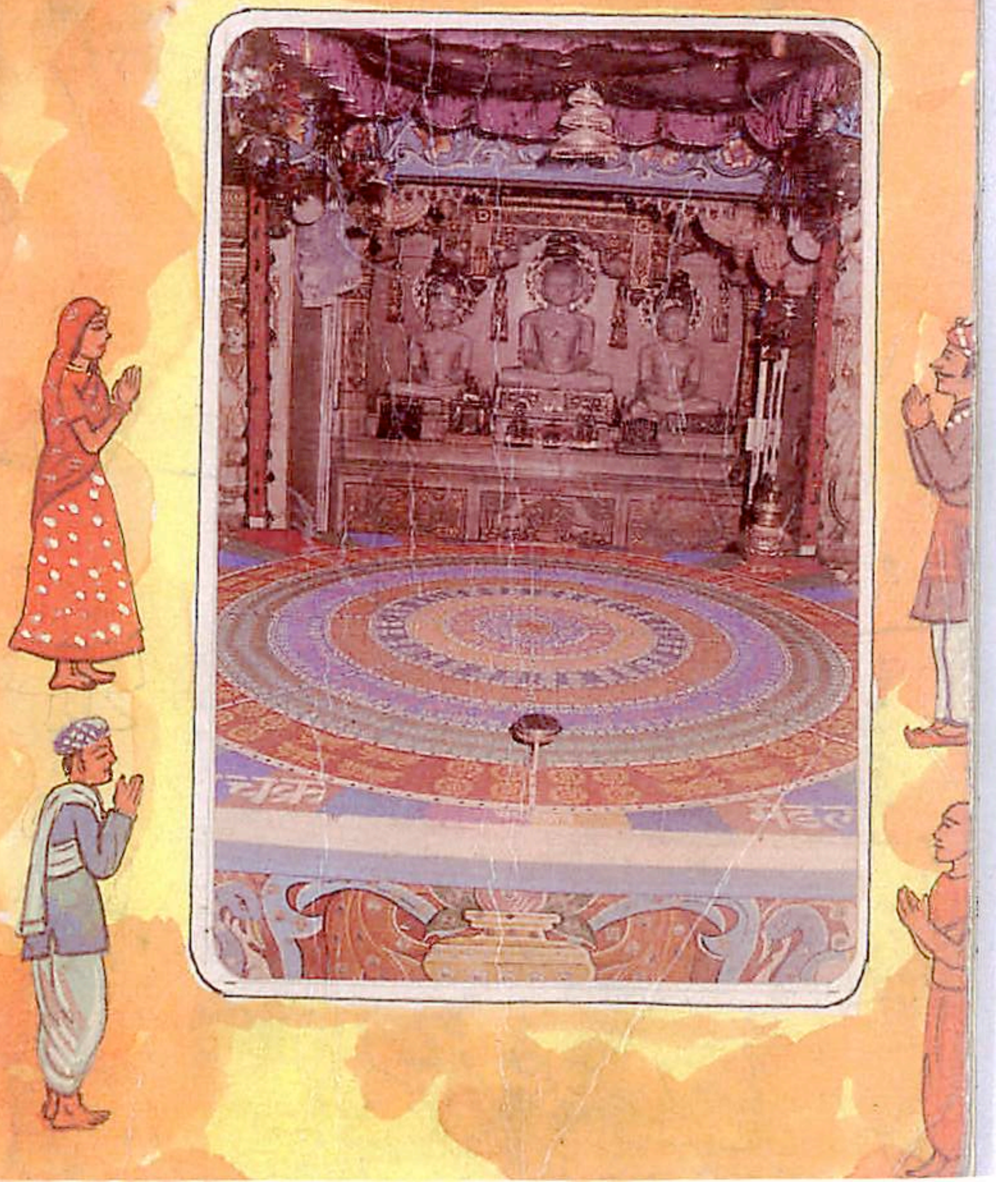

प्रथम संस्करण : 3000

(26 जनवरी,1996)

मूल्य : आठ रुपये

टाइप सेटिंग :
प्रिन्टोमैटिक्स
लालकोठी, जयपुर
फोन 515480

मुद्रक :
सेठी ग्राफिक ऑफसेट प्रिन्टर्स प्रा. लि
जयपुर, फोन - 568700

क्या/ कहाँ

मंगलाष्टक	5
मंगल पञ्चक	7
विधान प्रारम्भ करने की विधि	8
अभिषेक पाठ (संस्कृत)	18
जलाभिषेक पाठ (हिन्दी)	22
प्रतिमा प्रक्षाल पाठ	25
पूजा पीठिका	29
पञ्चपरमेष्ठी पूजन	33
विधान की समापन विधि	39
विभिन्न अवसरों पर उपयोगी मन्त्रों की सूची	49
मन्दिर शुद्धि वेदी शुद्धि, एवं कलश शुद्धि के ८१ मन्त्र	50
भक्ति पाठ	60
जिन मन्दिर शिलान्यास एवं नव तथा शिखर निर्माण शुभारम्भ विधि	76
नूतन गृह प्रवेश विधि	79
जैन विवाह विधि	80
जैन धर्म में हवन : एक स्पष्टीकरण	104
शान्ति पाठ	108

850, Geeta ... Johari Bazar ...

प्रकाशकीय

धर्म प्रभावना के बाह्य अनुष्ठानों को सम्पन्न कराने में सहयोगी कृति 'जैन विधि-विधान' प्रकाशित करते हुए हम अत्यन्त प्रसन्नता का अनुभव कर रहे हैं। यह तो सर्वविदित ही है कि पूजन एवं विधानों के अनेक संकलन प्रकाशित करके समाज को उपलब्ध कराने का गौरव "अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन" को ही है। बृहज्जिनवाणीसंग्रह, सिद्धचक्रविधान, इन्द्रध्वजविधान, शान्तिविधान, चौंसठऋद्धिविधान, जिनेन्द्र अर्चना आदि अनेक महत्वपूर्ण कृतियां प्रकाशित करके इस संस्था ने समाज की महिती आवश्यकता की पूर्ति हेतु सराहनीय प्रयास किये हैं।

समाज में जिनबिम्ब पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव, वेदी प्रतिष्ठा महोत्सव तथा अनेक प्रकार के पूजन-विधान के आयोजन प्रायः होते ही रहते हैं, जो धार्मिक रुचि उत्पन्न करने तथा पुष्ट करने का सशक्त निमित्त हैं।

इन आयोजनों को सम्पन्न कराने के लिये एक सुनिश्चित विधि अनेक प्रतिष्ठा पाठों में उपलब्ध है। इस विधि की जानकारी अधिक से अधिक लोगों को हो तथा वे उसे समझकर स्वयं धार्मिक आयोजन सम्पन्न करा सकें और ऐसे आयोजन सम्पन्न कराने वाले तत्वरसिक प्रतिष्ठाचार्य भी अधिक से अधिक तैयार हो सकें– इस उद्देश्य से यह कृति प्रकाशित की जा रही है। यद्यपि इससे पूर्व हमने विधान आरम्भ एवं समापन करने की विधि सिद्धचक्रविधान एवं इन्द्रध्वजविधान पुस्तकों में ही प्रकाशित की थी परन्तु इससे पुस्तक का आकार २०-२५ पृष्ठों का बढ़ जाता है तथा कीमत भी बढ़ जाती है; इसलिए यह उचित समझा गया कि विधान की पुस्तक में उक्त सामग्री प्रकाशित करने के बदले सभी अनुष्ठानों में काम में आने वाली जैनविधि अलग से संकलित करके प्रकाशित की जाय तो इस क्षेत्र में रुचि रखने वाले लोगों को सहज ही सामग्री उपलब्ध हो जायेगी तथा प्रत्येक पाठक के ऊपर अनावश्यक भार भी न पड़ेगा।

हमारे सहयोगी विद्वान ब्र. पं. अभिनन्दनकुमारजी शास्त्री द्वारा लिखित सिद्धचक्रविधान की प्रस्तावना एवं अन्य अनेक पुस्तकों के आधार से पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री, जैनदर्शनाचार्य ने अत्यन्त श्रम करके यह संकलन तैयार किया है। पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव के अलावा प्रायः सभी धार्मिक अनुष्ठान मात्र इसी संकलन के द्वारा सम्पन्न कराये जा सकते हैं। उन्होंने इसके प्रकाशन में गहरी रुचि लेते हुए सम्पादन एवं प्रूफरीडिंग स्वयं की है; अतः वे धन्यवाद के पात्र हैं।

इस संकलन की प्रकाशन व्यवस्था में हमारे साहित्य प्रकाशन एवं प्रचार विभाग के प्रभारी श्री अखिल बंसल भी धन्यवाद के पात्र हैं जिनका सहयोग प्रकाशन एवं बाइंडिंग व्यवस्था को प्राप्त हुआ है।

प्रस्तुत प्रकाशन की कीमत कम करने हेतु ३०००/- रु. गुप्तदान स्वरूप श्री गणेशीलाल सलावद उदयपुर के मार्फत प्राप्त हुए हैं। हम उक्त सहयोग कर्त्ता के हृदय से आभारी हैं।

मुझे आशा है कि यह संकलन धार्मिक अनुष्ठान सम्पन्न करने में रुचि रखने वाले विद्वानों के लिए अत्यन्त उपयोगी सिद्ध होगा।

ब्र. जतीश चन्द शास्त्री

अध्यक्ष अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन

सम्पादकीय

वीतरागी देव-गुरु-धर्म के प्रति भक्तिभाव के पोषण एवं उनकी अभिव्यक्ति हेतु दिगम्बर जैन समाज में सैकड़ों वर्षों से अनेक व्यवहारिक अनुष्ठान प्रचलित हैं। नित्य-नियम जिन पूजन, अष्टान्हिका, दशलक्षण आदि नैमित्तिक पूजन तो धर्मानुरागी श्रावकों की दिनचर्या में ही सम्मिलित है। बृहद स्तर पर आयोजित जिनबिम्ब-पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव, वेदी प्रतिष्ठा महोत्सव, सिद्धचक्र विधान, इन्द्रध्वज विधान आदि धार्मिक उत्सवों के आयोजन भी समाज में निरन्तर होते ही रहते हैं।

आध्यात्मिक सत्पुरुष श्री कानजीस्वामी कृत आध्यात्मिक क्रान्ति के फलस्वरूप आज ये अनुष्ठान जीवन्त हो गये हैं। पूजन-विधान आदि भक्ति प्रधान कार्यक्रमों के साथ-साथ आध्यात्मिक प्रवचनों, शिक्षण कक्षाओं तथा तात्विक विचार गोष्ठियों के आयोजनों से अब ये कार्यक्रम मात्र बाह्य क्रियाकाण्ड न रहकर वीतरागी तत्वज्ञान के प्रचार-प्रसार के सशक्त माध्यम बन गये हैं। मुमुक्षु समाज के प्रत्येक कार्यक्रम में प्रवचन आदि ज्ञानप्रधान कार्यक्रम अनिवार्य हो गये हैं, अतः पूजन- विधान के साथ-साथ आध्यात्मिक शिक्षण शिविरों का आयोजन भी होने लगा है। साहित्य एवं कैसेट विक्रय के माध्यम से भी ये कार्यक्रम जिनवाणी के प्रचार-प्रसार में अत्यन्त उपयोगी सिद्ध हो रहे हैं। अनेक सामाजिक संस्थाओं के सम्मेलनों के आयोजनों से इन कार्यक्रमों की सामाजिक उपयोगिता भी सिद्ध होती है।

उक्त अनुष्ठानों में जाप्य स्थापना, इन्द्र प्रतिष्ठा आदि अनेक कार्यक्रम सम्पन्न कराये जाते हैं, जिनके आवश्यक निर्देश, मंत्र आदि प्रायः प्रतिष्ठा पाठों में उपलब्ध होने से वे प्रत्येक प्रतिष्ठाचार्य को सुलभ नहीं हो पाते। समाज में ऐसे कार्यक्रमों की बढ़ती हुई संख्या को देखते हुये यह आवश्यकता महसूस की गई कि जैन विधि-विधान का एक ऐसा संकलन तैयार किया जाये जिसमें प्रत्येक कार्यक्रम के नियम, मंत्र आदि व्यवस्थित क्रम में हों तथा उन्हें सम्पन्न कराने की स्पष्ट प्रक्रिया दी गई हो ताकि साधारण अध्ययनशील विद्वान भी इन कार्यक्रमों को सम्पन्न करा सकें।

इस आवश्यकता को ध्यान में रखकर पंडित नाथूलालजी कृत प्रतिष्ठा प्रदीप एवं पण्डित पन्नालाल जी साहित्याचार्य द्वारा सम्पादित कृति वेदी प्रतिष्ठा एवं कलशारोहण विधि के आधार से इस जैन विधि-विधान का संकलन किया गया है। हमारे विशेष सहयोगी प्रतिष्ठाचार्य बाल ब्र. अभिनन्दनकुमारजी शास्त्री ने सिद्धचक्रविधान की प्रस्तावना विधान में प्रारम्भ करने एवं समापन करने की विधियाँ दी हैं जिनका विशेष आधार इस संकलन में लिया गया है। उन्होंने जैन धर्म में हवनःएक स्पष्टीकरण शीर्षक से एक लेख में शुद्धाम्नाय का सप्रमाण स्पष्टीकरण किया है, जिसे इस संकलन में सम्मिलित किया गया है। अतः इन सभी विद्वानोंका हार्दिक आभारी हूँ।

आशा है विधि-विधान सम्पन्न कराने में रुचि रखने वाले विद्वानों को यह संकलन एक मार्गदर्शक के रूप में सहायक सिद्ध होगा।

पण्डित अभयकुमार जैन
एम.कॉम. जैन दर्शनाचार्य

संजीव गोधा

मंगलाष्टक

शार्दूल विक्रीडित

अर्हन्तो भगवन्त इन्द्रमहिताः सिद्धाश्च सिद्धीश्वरा,
आचार्या जिनशासनोन्नतिकराः पूज्या उपाध्यायकाः ।
श्रीसिद्धान्तसुपाठकाः मुनिवराः रत्नत्रयाराधकाः,
पंचैते परमेष्ठिनः प्रतिदिनं कुर्वन्तु ते मंगलम् ॥ १ ॥

श्रीमन्नम्रसुरासुरेन्द्रमुकुट प्रद्योत रत्नप्रभा,
भास्वतपाद-नखेन्दवः प्रवचनाम्भोधीन्दवः स्थायिनः ।
ये सर्वे जिनसिद्ध सूर्यनुगतास्ते पाठकाः साधवः,
स्तुत्या योगिजनैश्च पंचगुरुवः कुर्वन्तु ते मंगलम् ॥ २ ॥

सम्यग्दर्शन—बोध—वृत्तममलं रत्नत्रयं पावनं,
मुक्तिश्री नगराधिनाथ-जिनपत्युक्तोऽपवर्गप्रदः ।
धर्मः सूक्तिसुधा च चैत्यमखिलं चैत्यालयं श्रयालयं,
प्रोक्तं च त्रिविधं चतुर्विधममी कुर्वन्तु ते मंगलम् ॥ ३ ॥

नाभेयादि-जिनाधिपास्त्रिभुवनख्याताः चतुर्विंशतिः,
श्रीमन्तो भरतेश्वरप्रभृतयो ये चक्रिणो द्वादश ।
ये विष्णु प्रतिविष्णु-लांगलधराः सप्तोत्तरा विंशतिः,
त्रैकालये प्रथितास्त्रिषष्ठिपुरुषाः कुर्वन्तु ते मंगलम् ॥ ४ ॥

ये सर्वौषधऋद्धयः सुतपसो वृद्धिंगता पंच ये,
ये चाष्टांग महानिमित्तकुशला येऽष्टाविधाश्चारणाः ।
पंचज्ञानधरास्त्रयोऽपिबलिनो ये बुद्धि-ऋद्धीश्वराः,
सप्तैते सकलार्चिता गणभृतः कुर्वन्तु ते मंगलम् ॥ ५ ॥

कैलासे वृषभस्य निवृतिमही वीरस्य पावापुरे,
चम्पायां वसुपूज्य सज्जिनपतेः सम्मेदशैलेऽर्हताम् ।
शेषाणामपि चोर्जयन्तशिखरे नेमीश्वरस्यार्हतो,
निर्वाणावनयः प्रसिद्धविभवाः कुर्वन्तु ते मंगलम् ॥ ६ ॥

ज्योतिर्व्यन्तर-भावनामरगृहे मेरौ कुलाद्रौ स्थिता,
जम्बू-शाल्मलि-चैत्यशाखिषु तथा वक्षार-रौप्याद्रिषु ।
इष्वाकारगिरौ च कुण्डलनगे द्वीपे च नंदीश्वरे,
शैले ये मनुजोत्तरे जिनगृहा: कुर्वन्तु ते मंगलम् ॥ ७ ॥

यो गर्भावतरोत्सवो भगवतां जन्माभिषेकोत्सवो,
यो जात: परिनिष्क्रमेण विभवो य: केवलज्ञानभाक् ।
य: कैवल्यपुरप्रवेशमहिमा संभावित: स्वर्गिभि:
कल्याणानि च तानि पंच सततं कुर्वन्तु ते मंगलम् ॥ ८ ॥

इत्थं श्री जिनमंगलाष्टकमिदं सौभाग्यसंपत्पदं करं,
कल्याणेषु महोत्सवेषु सुधियस्तीर्थंकराणा मु[illegible] सः
ये श्रुण्वन्ति पठन्ति तैश्च सुजनैर्धर्मार्थकामान्विता,
लक्ष्मीराश्रियते व्यपायरहिता निर्वाणलक्ष्मीरपि ॥९ ॥

भजन

तर्ज :- ए मेरे वतन के लोगो......

तू जाग रे चेतन प्राणी, कर आतम की अगवानी ।
जो आतम को लखते हैं, उनकी है अमर कहानी ॥टेक ॥
है ज्ञान मात्र निज ज्ञायक, जिसमें है ज्ञेय झलकते ।
यह झलकन भी ज्ञायक है, इसमें नहीं ज्ञेय महकते ॥
मैं दर्शन — ज्ञान स्वरूपी, मेरी चैतन्य निशानी ॥१ ॥
अब समकित सावन आया, चिन्मय आनन्द बरसता ।
भीगा है कण-कण मेरा, हो गई अखण्ड सरसता ॥
समकित की मधु चितवन में झलकी है मुक्ति निशानी ॥२ ॥
ये शाश्वत भव्य जिनालय, है शांति बरसती इनमें ।
मानों आया सिद्धालय, मेरी बस्ती हो उसमें ॥
मैं हूं शिवपुर का वासी, भव भव की खतम कहानी ॥३ ॥

मंगल पंचक

हरिगीतिका

गुणरत्नभूषा विगतदूषाः सौम्यभावनिशाकराः
सद्बोध-भानुविभा-विभाषितदिक्चया विदुषांवराः
निःसीमसौख्यसमूह मण्डित योगखण्डितरतिवराः
कुर्वन्तु मंगलमत्र ते श्री वीरनाथ जिनेश्वराः ॥ १ ॥

सद्ध्यानतीक्ष्ण-कृपाणधारा निहतकर्मकदम्बका,
देवेन्द्रवृन्दनरेन्द्रवन्द्याः प्राप्तसुखनिकुरम्बकाः
योगीन्द्रयोगनिरुपणीयाः प्राप्तबोधकलापकाः
कुर्वन्तु मंगलमत्र ते सिद्धाः सदा सुखदायका ॥ २ ॥

आचारपंचकचरणचारणचुंचवः समताधराः
नानतपोभरहैतिहापितकर्मकाः सुखिताकराः
गुप्तित्रयीपरिशीलनादिविभूषिता वदतांवराः
कुर्वन्तु मंगलमत्र ते श्री सूरयोऽर्जितशंभराः ॥ ३ ॥

द्रव्यार्थ भेदविभिन्नश्रुतभरपूर्ण तत्त्वनिभालिनो
दुर्योगयोगनिरोधदक्षाः सकलवरगुणशालिनः
कर्तव्यदेशनतत्परा विज्ञानगौरवशालिनः
कुर्वन्तु मंगलमत्र ते गुरुदेवदीधितिमालिनः ॥ ४ ॥

संयमसमित्यावश्यका-परिहाणिगुप्तिविभूषिताः
पंचाक्षदान्तिसमुद्यताः समतासुधापरिभूषिताः
भूपृष्ठविष्टरसायिनो विविधर्द्धिवृन्द विभूषिता
कुर्वन्तु मंगलमत्र ते मुनयः सदा शमभूषिताः ॥ ५ ॥

* * *

विधान प्रारम्भ करने की विधि

जाप्य स्थापना

१. जाप में बैठने वालों के लिए आवश्यक नियम :-

(विधानाचार्य द्वारा निम्न नियम जाप में बैठने वाले भाइयों को बता दिए जायें)

(१) इन्द्रध्वज मंडल विधान में अपनी शक्ति व समय का विचार कर २१ हजार, ५१ हजार, ७१ हजार या सवा लाख तक जप प्रतिष्ठाचार्य द्वारा निर्दिष्ट मंत्र का किया जाना चाहिए।

(२) जप करनेवाले व्यक्ति गृहीतमिथ्यात्व, लोकनिंद्यकार्य, अन्याय व अभक्ष्य के त्यागी अवश्य हों।

(३) अनुष्ठान के दिनों में पूर्ण संयम, ब्रह्मचर्य से रहें।

(४) रात्रि में चारों प्रकार के आहार (खाद्य, पान, लेह, स्वाद्य) ग्रहण नहीं करें। बाजार (होटलादि) का भोजन न लें। दिन में दो बार शुद्ध भोजन करें। बीच में पान, सुपारी, गुटका आदि का सेवन न करें।

(५) मंत्र का शुद्ध उच्चारण करें एवं परस्पर बातें न करें।

(६) शारीरिक व मानसिक व्याधियुक्त न हों।

(७) जप के समय शुद्ध धोती-दुपट्टे पहनें।

(८) मन्त्र का जाप प्रतिदिन करें तथा अपना संकल्प पूरा करें।

(९) जप के पूर्ण होने पर्यंत यज्ञोपवीत धारण करें तथा सभी नियमों का पालन करें।

(१०) महोत्सव की अवधि तक चमड़े की वस्तुओं के प्रयोग का त्याग करें।

(११) सूर्योदय के पश्चात् एवं सूर्यास्त से पूर्व दिन में ही जप करें।

२. जाप्य स्थापना विधि में निम्न कार्य सम्पन्न होंगे :-

(क) प्रारम्भिक तैयारी (ख) मंगल कलश स्थापना (ग) यन्त्राभिषेक (घ) अमृत स्नान (ड) मंगलाचरण (त) अंगन्यास (थ) पंचपरमेष्ठी पूजन (द) जाप संकल्प।

(क) प्रारम्भिक तैयारी :-

विधान प्रारम्भ करने वाले दिन प्रातःकाल सूर्योदय के बाद जाप प्रारम्भ करें। जाप का स्थान एकान्त में हो, जहाँ बालक या अन्य जन जाप में व्यवधान न कर सकें। कमरा शुद्ध जल से धोकर साफ कर लिया जाए।

पूर्व या उत्तर दिशा में सन्मुख शुद्ध जल से धोकर टेबिल, चौकी एवं सिंहासन रखें। टेबिल के ऊपर चंदोवा बाँधे तथा चंदोवे के बीच में सिंहासन के ऊपर छत्र बाँधे। टेबिल पर यंत्राभिषेक के लिए थाली, शुद्ध जल के दो कलश एवं शुद्ध वस्त्र रखें।

टेबिल के दोनों ओर जाप में बैठनेवाले व्यक्तियों की संख्यानुसार शुद्धजल से धुले हुए पाटे लगा दिये जावें जिनपर निम्न सामग्री रखी जाए:-

[पूजन की सामग्री, पूजन की पुस्तक, माला, लवंग, एक कटोरी में संकल्प की सामग्री (हल्दी, सुपारी, पीली सरसों) एवं कागज पर लिखा हुआ जाप का मन्त्र]

सर्व प्रथम सिंहासन पर विनायकयन्त्र विराजमान करें।

(ख) मंगल कलश स्थापना :-

मंगल कलश में हल्दी, सुपारी, सवा रुपया, पुष्प, पीली सरसों आदि डालकर उसके मुँह पर नारियल रखकर केशरिया कपड़े से रक्षा बंधन के धागे से अच्छी तरह पहिले से बंद कर चंदन, गोटा, कागज आदि की माला तैयार रखें। विधानाचार्य निम्न मन्त्र बोलकर विधान कराने वाले या अन्य प्रमुख व्यक्ति द्वारा यन्त्रजी के बांये तरफ पुष्पों से स्वस्तिक बनाकर मंगल कलश स्थापित कराये।

ॐ अद्य भगवतो महापुरुषस्य श्रीमदादि ब्रह्मणो मतेऽस्मिन्......मासे......पक्षे...... तिथौ...... वासरे......वर्षे इह......नगरे......मन्दिरे......कार्यस्य निर्विघ्नसमाप्त्यर्थं मण्डपभूमिशुद्ध्यर्थं पात्रशुद्ध्यर्थं शान्त्यर्थं पुण्याहवाचनार्थं पंचरत्न-गंधपुष्पाक्षतादिबीजपूरशोभित मंगलकलशस्थापनं करोम्यहम् क्ष्वीं क्ष्वीं हं सः स्वाहा।

(ग) यन्त्राभिषेक :-

यन्त्र जी थाली में विराजमान करके विधानाचार्य निम्न मन्त्र बोलते हुए दो प्रमुख व्यक्तियों से यन्त्रजी का अभिषेक कराएं।

ॐ ह्रीं भूर्भुवः स्वरिह विघ्नौघवारकं यन्त्रं वयं परिषेचयामः।

(अभिषेक के पश्चात् शुद्ध वस्त्र से यन्त्रजी को पोंछकर पुनः सिंहासन पर विराजमान करें।)

(द) अमृतस्नान :-

विधानाचार्य, जाप में सम्मिलित होनेवाले सभी व्यक्तियों को हाथ धोकर दाहिने हाथ में जल लेने का निर्देश देते हुए निम्न मन्त्र बोलकर जल के छींटे मस्तक पर डालने को कहें।

ॐ अमृते अमृतोद्भवे अमृतवर्षिणि अमृतं स्रावय स्रावय सं सं क्लीं क्लीं ब्लूं ब्लूं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय हं सं क्ष्वीं क्ष्वीं हं सं स्वाहा।

(ङ) मंगलाचरण के लिए :-

प्रारम्भ में दिये गये मंगलाष्टक/मंगल पंचक पढ़ते समय प्रत्येक छन्द के अन्त में थाली में पुष्प क्षेपण करें।

(त) अंगन्यास

मंगलाष्टक के बाद शरीर की रक्षा और तत्तद् दिशाओं से आनेवाले विघ्नों की निवृत्ति के लिए नीचे लिखे अनुसार अंगन्यास करें। दोनो हाथों से अंगुष्ठ से लेकर कनिष्ठिका पर्यन्त पाँचो अंगुलियों में क्रम से अरहंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय और साधु परमेष्ठी की स्थापना करें।

सर्वप्रथम दोनों हाथों के अंगूठों को बराबरी से मिलाकर सामने करें। इस मन्त्र का उच्चारण कर सिर झुकावें।

ॐ ह्रां णमो अरहंताणं ह्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः

निम्न मन्त्र पढ़कर सिर झुकावें और दोनों हाथों की तर्जनियों (अंगूठे के पास की अंगुलियों) को बराबरी से मिलाकर सामने करें ।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः

निम्न मन्त्र पढ़कर सिर झुकावें फिर बीच की दोनों अंगुलियों को मिलाकर सामने करके-

ॐ ह्रूं णमो आइरीयाणं ह्रूं मध्यामाभ्यां नमः

निम्न मन्त्र पढ़कर दोनों अनामिकाओं को सामने करें, और-

ॐ ह्रौं णमो उवज्झायाणं ह्रौं अनामिकाभ्यां नमः

निम्न मन्त्र पढ़कर सिर झुकावें फिर दोनों छिंगुरियों को मिलाकर सामने करें और-

ॐ ह्रः णमो लोए सव्वसाहूणं ह्रः कनिष्ठिकाभ्यां नमः

निम्न मन्त्र पढ़कर सिर झुकावें फिर दोनों हथेलियों को बराबर सामने फैलाकर

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः करतलाभ्यां नमः

निम्न मंत्र पढ़कर सिर झुकावें फिर दोनों करपृष्ठों को बराबर सामने फैलाकर-

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः करपृष्ठाभ्यां नमः

निम्न मन्त्र पढ़कर सिर झुकावें और निम्न मन्त्र पढ़कर अपने सिर का स्पर्श करें।

ॐ ह्रां णमो अरहंताणं ह्रां मम शीर्षं रक्ष रक्ष स्वाहा

निम्न मंत्र पढ़कर अपने मुख का स्पर्श करें -

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं ह्रीं मम वदनं रक्ष रक्ष स्वाहा ।

निम्न मन्त्र पढ़कर हृदय का स्पर्श करें–

ॐ हूं णमो आइरीयाणं मम हृदयं रक्ष रक्ष स्वाहा

निम्न मन्त्र पढ़कर नाभि का स्पर्श करें–

ॐ ह्रौं णमो उवज्झायाण ह्रौं मम नाभिं रक्ष रक्ष स्वाहा

निम्न मन्त्र पढ़कर पैरों का स्पर्श करें–

ॐ ह्रः णमो लोएसव्वसाहूणं ह्रः मम पादौ रक्ष रक्ष स्वाहा

निम्न मन्त्र पढ़कर शरीर पर जल सिंचन करें–

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः मम सर्वांग शुद्धि कुरु कुरु स्वाहा ।

निम्न मन्त्र पढ़कर प्रष्ठिाचार्य पूर्व दिशा में पुष्प अथवा पीली सरसों क्षेपण करें।

ॐ ह्रां णमो अरहंताणं ह्रां पूर्वदिशः आगतविघ्नान् निवारय निवारय मां रक्ष रक्ष स्वाहा ।

निम्न मन्त्र पढ़कर दक्षिण दिशा में पुष्प अथवा पीली सरसों क्षेपण करें।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं ह्रीं दक्षिणदिशः आगतविघ्नान् निवारय निवारय मां रक्ष रक्ष स्वाहा ।

निम्न मन्त्र पढ़कर पश्चिम दिशा में पुष्प अथवा पीली सरसों क्षेपण करें।

ॐ ह्रूं णमो आइरियाणं ह्रूं पश्चिमदिशः आगतविघ्नान् निवारय निवारय मां रक्ष रक्ष स्वाहा ।

निम्न मन्त्र पढ़कर उत्तर दिशा में पुष्प अथवा पीली सरसों क्षेपण करें।

ॐ ह्रौं णमो उवज्झायाणं ह्रौं उत्तरदिशः आगतविघ्नान् निवारय निवारय मां रक्ष रक्ष स्वाहा ।

निम्न मन्त्र पढ़कर दशों दिशाओं में पुष्प या पीली सरसों क्षेपण करें।

ॐ ह्रः णमो लोएसव्वसाहूणं ह्रः सर्वदिग्भ्यः आगतविघ्नान् निवारय निवारय मां रक्ष रक्ष स्वाहा ।

निम्न मन्त्र पढ़कर अपने शरीर का स्पर्श करें–

ॐ ह्रां णमो अरहंताणं ह्रां मम गात्रं रक्ष रक्ष स्वाहा ।

निम्न मन्त्र पढ़कर अपने वस्त्रों का स्पर्श करें–

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं ह्रीं मम वस्त्रं रक्ष रक्ष स्वाहा ।

निम्न मन्त्र पढ़कर अपने पूजन सामग्री का स्पर्श करें–

ॐ हूं णमो आइरीयाणं हूं मम पूजा द्रव्यं रक्ष रक्ष स्वाहा ।

निम्न मन्त्र पढ़कर अपने खड़े होने की जगह की ओर देखें ।

ॐ ह्रौं णमो उवज्झायाणं मम पूजा स्थलं रक्ष रक्ष स्वाहा ।

निम्न मन्त्र पढ़कर चुल्लू में जल लेकर सब ओर क्षेपण करें ।

ॐ ह्रः णमो लोएसव्वसाहूणं ह्रः सर्वं जगत् रक्ष रक्ष स्वाहा ।

निम्न मन्त्र से चुल्लू के जल को मन्त्रित कर अपने सिर पर सींचें ।

क्षां क्षीं क्षूं क्षौं क्षः सर्वदिशासु, ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौ ह्रः सर्वदिशासु ॐ ह्रीं अमृते अमृतोद्भवे अमृतवर्षिणी अमृतं स्रावयं सं सं ब्लीं ब्लीं ब्लूं ब्लूं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय ठः ठः ह्रीं स्वाहा ।

तदनन्तर प्रतिष्ठाचार्य पुष्प अथवा पीली सरसों को सात बार निम्न मंत्र पढक्रर परिचारकों के सिर पर डालें ।

ॐ नमोऽर्हते सर्वं रक्ष रक्ष हूं फट् स्वाहा ।

तत्पश्चात निम्न मंत्र से पुष्प अथवा पीली सरसों को मंत्रित कर सब दिशाओं में फैकें ।

ॐ हूं फट् किरिट किरिट घातय घातय परिविघ्नान् स्फोटय स्फोटय सहस्रखण्डान् कुरु कुरु परमुद्रां छिन्द छिन्द परमन्त्रान् भिन्द भिन्द वाः वाः हूं फट् स्वाहा ।

निम्न मन्त्र पढ़कर जप करनेवाले महाशयों के दाहिने मणिबन्ध (कलाई) में रक्षासूत्र बांधें ।

ॐ नमोऽर्हते सर्वं रक्ष रक्ष हूं फट् स्वाहा ।

तदनन्तर निम्नोक्त श्लोक पढ़कर जप करनेवाले अपने ललाट पर केशर का तिलक लगावें-

मंगलं भगवान् वीरो मंगलं गौतमो गणी ।
मंगलं कुन्दकुन्दाद्यो जैनधर्मोस्तु मंगलम् ॥

निम्न मंत्र का सबसे उच्चारण कराकर यज्ञोपवीत धारण करावें ।

ॐ नमः परमशान्ताय शान्तिकराय पवित्रीकरणाय अहं रत्नत्रयस्वरूपं यज्ञोपवीतं दधामि मम गात्रं पवित्रं भवतु अर्हं नमः स्वाहा ।

(थ) पंच परमेष्ठी पूजन :-

पृष्ठ क्रमांक २९ पर दी गई पूजन पीठिका को पढ़कर पंचपरमेष्ठी पूजन करें ।

(द) जाप संकल्प :-

जिस मंत्र का जाप करना हो वह मंत्र जाप करने वाले प्रत्येक व्यक्ति से सुन लिया जाए, तथा शुद्ध उच्चारण का अभ्यास करा दिया जाए।

जाप में बैठनेवाले व्यक्तियों की संख्या के आधार पर जाप की कुल संख्या का परिणाम इस प्रकार निर्धारित करें कि प्रत्येक व्यक्ति प्रतिदिन अधिकतम ७ या ९ मालाओं का जाप करे।

जाप करनेवाले व्यक्ति खड़े होकर दाहिने हाथ में संकल्प की सामग्री ले लें। विधानाचार्य द्वारा निम्न मन्त्र छोटे-छोटे हिस्सों में पढ़ा जाए जिसे सभी लोग दोहराएँ। संकल्प करने के बाद संकल्प की सामग्री पाटे के दायें कोने पर रख दी जाए। यह सामग्री पूरे विधान पर्यन्त इसी स्थान पर रखी रहे।

संकल्प लेने का मन्त्र

"ॐ जम्बूद्वीपे भरतक्षेत्रे आर्यखण्डे_ देशे_ प्रान्ते_ नगरे_ ऋतौ_मासे_तिथौ_संवत्सरे_जैन मन्दिरे_कार्यस्य निर्विघ्नसमाप्त्यर्थं_ इति प्रमितस्य जापस्य संकल्पं कुर्म:, निर्विघ्न समाप्तिर्भवतु अर्हं नम: स्वाहा।"

जाप के मंत्र – निम्न में से प्रसंगानुसार किसी एक मन्त्र के जाप का संकल्प करायें।

(१) ॐ ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा सर्वशान्ति कुरु कुरु स्वाहा।

(२) ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्र: अ सि आ उ सा सर्वशान्ति कुरु कुरु स्वाहा।

(३) ॐ ह्रौं ह्रीं श्री क्लीं अर्हं अ सि आ उ सा अनाहत विद्यायै णमो अरहंताणं सर्व शान्ति कुरु कुरु स्वाहा।

(४) ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्र: अ सि आ उ सा मध्यलोकसम्बन्धी चतुशताष्टपंचाशज्जिन चैत्यचैत्यालयेभ्यो नम:।

(५) ॐ ह्रीं मध्यलोकसंबंधी शाश्वतजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नम:।

* * *

ध्वजारोहण विधि

मण्डप की अग्रभूमि में व्यवस्थानुसार ध्वजदण्ड के पास ऊँची टेबुल पर सिंहासन में विनायक यंत्र विराजमान कर पंचपरमेष्ठी की पूजन करें। पूजनोपरान्त मन्त्रोच्चार करते हुये ध्वजारोहणकर्त्ता द्वारा ध्वजदण्ड की शुद्धि कराके उस पर रक्षा सूत्र बंधवा दें।

निम्न मन्त्र द्वारा ध्वजदण्ड की शुद्धि करावें—

ॐ ह्रीं श्री नमोऽर्हते पवित्र जलेन ध्वजदण्ड शुद्धिं करोमि।

निम्न मन्त्र द्वारा ध्वजदण्ड में रक्षा सूत्र बंधावें—

ॐ ह्रीं त्रिवर्णसूत्रेण ध्वजदण्डं परिवेष्टयामि।

ध्वजदण्ड एवं ध्वज पर केसर से स्वस्तिक बनाकर धर्मात्मा, ज्ञानी आदि प्रतिष्ठित व्यक्तियों द्वारा ध्वजारोहण कराया जाये। ध्वजारोहण के समय निम्न श्लोक एवं मंत्रोच्चार करें—

तदग्रदेशे ध्वजदण्डमुच्चैर्भास्वद्विमानं गमनाद्रिस्थत्।
निवेश्यलग्ने शुभभोपदेश्यं महत्पताकोच्छ्रयणं विदध्यात्॥

ॐ ह्रीं अर्हं जिनशासनपताके सदोच्छ्रिता तिष्ठ तिष्ठ भव भव वषट् स्वाहा।
ध्वजारोहण के पश्चात् सावधान होकर निम्न गीत बोला जाय

जैन ध्वज गीत

तर्ज– जन-गण-मन अधिनायक जय हे। .....

मंगलमय अरु मंगलकारी, शासन ध्वज लहराता।
अनेकान्तमय वस्तु व्यवस्था, का यह बोध कराता॥
स्यादवाद शैली से जग का, संशय तिमिर मिटाता।
चहुँगति दु:ख नशाता, जन-गण-मन हरषाता॥
जिन शासन सुखदाता॥
सम्यक् दर्शन-ज्ञान-चरणमय मुक्ति मार्ग दरशाता।
जय हे... जय हे... जय हे... जय जय जय हे॥
शासन ध्वज लहराता॥

नांदी विधान (मंगल कलश स्थापना)

नंद धातु का प्रयोग आनन्दित होने के अर्थ में किया जाता है। इसमें पंच प्रत्यय लगाने से नांदी शब्द बनता है। नांदी विधान से आशय अनुष्ठान पर्यंत लोक के आरम्भ तथा इन्द्रियविषयों का त्याग करके आनन्दपूर्वक जिनेन्द्र प्रभु की उपासना करने से है। अनुष्ठान में सम्मिलित होने वाले सभी लोगों को नांदी विधान के समय उपस्थित रहना चाहिए। इसके अन्तर्गत मण्डल पर मंगल कलश की स्थापना की जाती है।

जिस व्यक्ति ने मंगल कलश की बोली ली हो अथवा अनुष्ठान में सम्मिलित होने वालों में से प्रमुख व्यक्ति के घर से प्रातःकाल मंगल कलश पर श्रीफल रखकर उसे केसरिया वस्त्र से ढंककर तथा मंगल कलश में सवा रुपये, हल्दी, सुपारी, पीली सरसों आदि वस्तुएँ डालकर मंगल कलश को सजाना चाहिए। विधानाचार्य को मंगलाष्टक पढ़ते हुए पुष्पक्षेपण करना चाहिए तथा परिवार की सौभाग्यवती बहिनों द्वारा कलश पर स्वास्तिक कराना चाहिए। इसके पश्चात् उत्साहपूर्वक जिनेन्द्रभक्ति करते हुए बाजे-गाजे से जुलूस के रूप में मंगल कलश विधानस्थल तक लाना चाहिए तथा निम्न मंत्र बोलकर सौभाग्यवती बहिनों द्वारा मण्डल पर कलश स्थापित करना चाहिए।

मंगल कलश स्थापना मन्त्र

ॐ अद्य भगवतो महापुरुषस्य श्रीमदादिब्रह्मणो मतेस्मिन...... मासे...... पक्षे......तिथौ...... वासरे......वर्षे इह......नगरे......जिनमन्दिरे........ मंडलविधानस्य निर्विघ्नसमाप्त्यर्थं मण्डपभूमिशुद्ध्यर्थं पात्रशुद्ध्यर्थं शान्त्यर्थं पुण्याहवाचनार्थं पंचरत्नगन्धपुष्पाक्षतादिबीज पूरशोभितं मंगलकलशस्थापनं करोम्यहं क्ष्वीं क्ष्वीं हं सः स्वाहा।

इन्द्र प्रतिष्ठा

इन्द्रों, इन्द्राणियों के लिए आवश्यक निर्देश—

(१) नियमित रूप से विधान में अन्त तक सम्मिलित रहें।

(२) स्वस्थ हों।

(३) विकलांग न हों।

(४) हीन आचरण वाले न हों।

(५) विधान के अन्त तक संयम (ब्रह्मचर्य) से रहें।

(६) गृहस्थोचित शुद्ध भोजन एक या दो बार करें। बीच में पान, सुपारी, गुटका, तम्बाखू आदि न खायें।

(७) विधान पर्यन्त व्यापार आदि लौकिक कार्यों की चिन्ता से मुक्त रहें।

(इन्द्राणी ६ माह से अधिक गर्भवती न हो)

इन्द्र-इन्द्राणियों को उत्तम पीत वस्त्र धारण करावें। मुकुट बांधें तथा निम्नानुसार मन्त्रोच्चारणापूर्वक क्रिया करावें।

निम्न मन्त्र द्वारा रक्षा सूत्र बांधें—

ॐ नमोऽर्हते सर्वं रक्ष हूं फट् स्वाहा।

निम्न मन्त्र द्वारा अमृत स्नान करावें—

ॐ अमृते अमृतोद्भवे अमृतवर्षिणि अमृतं स्रवय स्रवय सं सं क्लीं क्लीं ब्लूं ब्लूं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय हं सं क्ष्वीं क्ष्वीं हं सं स्वाहा।

तदनन्तर चन्दन, मुकुट, माला, केयूर, हार, कुण्डल आदि उपलब्ध आभूषणों को एक थाली में रखकर मण्डल के सामने रखें और प्रतिष्ठाचार्य निम्नलिखित मन्त्र बोलकर उन पर पुष्प तथा पीली सरसों डालें।

ॐ ह्रां णमो अरहंताणं ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं ॐ ह्रूं णमो आइरीयाणं ॐ ह्रौं णमो उवज्झायाणं ॐ ह्रः णमो लोए सव्वसाहूणं इन्द्र-इन्द्राण्योराभूषणानि पवित्राणि कुरु कुरु स्वाहा।

निम्न श्लोक और मन्त्र बोलकर ललाट, मस्तक, ग्रीवा, हृदय, दोनों भुजाएँ, प्रकोष्ठ, नाभि और पृष्ठ भाग में नौ तिलक लगावें।

पात्रेऽर्पितं चन्दनमौषधीशं शुभ्रं सुगन्धाहृतचंचरीकम्।
स्थाने नवांके तिलकाय चर्च्यं न केवलं देहविकारहेतोः॥

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः मम सर्वांगशुद्धिं कुरु कुरु स्वाहा।

निम्न श्लोक पढ़कर माला पहिनावें—

जिनांघ्रिभूमिस्फुरितां स्रजं मे स्वयंवरं यज्ञविधानपत्नी।
करोतु यत्नादचलत्वहेतोरितीव मालामुररीकरोमि॥

निम्न श्लोक पढ़कर अधोवस्त्र का स्पर्श करावें—

धौतान्तरीयं विधुकान्तिसूत्रैः सद्ग्रन्थितं धौतनवीनशुद्धम्।
नग्नत्वलब्धिर्न भवेच्च यावत् संधार्यते भूषणमूरुभूम्याः॥

निम्न श्लोक पढ़कर दुपट्टे का स्पर्श करावें—

संव्यानमंचद्दशया विभान्तमखण्डधौताभिनवं मृदुत्वम्।
संधार्यते पीत-सितांशुवर्णमंशोपरिष्टाद्धृतभूषणांकम्॥

निम्न श्लोक पढ़कर मुकुट बंधवावें—

शीर्षण्यशुम्भन्मुकुटं त्रिलोकी हर्षाप्तराज्यस्य च पट्टबन्धम् ।
दधामि पापोर्मिकुलप्रहन्तृ रत्नाद्यमालाभिरुदन्चितांगम् ॥

निम्न श्लोक पढ़कर कण्ठ में कण्ठाभरण पहिनावें—

ग्रैवेयकं मौक्तिकदामधाम - विराजितस्वर्णनिबद्धयुक्तम् ।
दधेऽध्वरार्पणविसर्पणेच्छु - र्महाधनाभोगनिरूपणांकम् ॥

निम्न श्लोक पढ़कर हार धारण करावें—

मुक्तावलीगोस्तनचन्द्रमाला विभूषणान्युत्तमनाकभाजाम् ।
यथार्हसंसर्गगतानि यज्ञ-लक्ष्मी समालिंगनकृद्दधेऽहम् ॥

निम्न श्लोक पढ़कर कानों में कर्णाभरण धारण करावें—

एकत्र भास्वानपरत्र सामः सवां विधातुं जिनपस्य भक्त्या ।
रूपं परावृत्य च कुण्डलस्य मिषादवाप्ते इव कुण्डले द्वे ॥

निम्न श्लोक पढ़कर केयूर-बाजूबंद धारण करावें—

भुजासु केयूरमपास्तदुष्टवीर्यस्य सम्यक् जयकृद् ध्याजांकम् ।
दधे निधीनां नवकैश्च रत्नै-र्विमण्डितं सद्ग्रथितं सुवर्णै ॥

निम्न श्लोक पढ़कर यज्ञोपवीत पहनावें—

यज्ञार्थमेव सृजतादिचक्रेश्वरेण चिन्हं विधिभूषणानाम् ।
यज्ञोपवीतं विततं हि रत्नत्रयस्य मार्गं विदधाम्यतोऽहम् ॥

निम्न श्लोक पढ़कर कटिसूत्र धारण करावें —

अन्यैश्च दीक्षां यजनस्य गाढं कुर्वद्भिरिष्टैः कटिसूत्रमुख्यैः ।
संभूषणैर्भूषयता शरीरं जिनेन्द्रपूजा सुखदा घटेत ॥

निम्न श्लोक पढ़कर घर गृहस्थी के कार्यों से उत्सव पर्यन्त निवृत्त रहने की प्रतिज्ञा करावें—

विधेर्विधातुर्यजनोत्सवेऽहं गेहादिमूर्च्छामपनोदयामि ।
अनन्यचेताः कृतिमादधामि स्वर्गादिलक्ष्मीमपि हापयामि ॥

निम्न मन्त्र २१ बार पढ़कर इन्द्रों पर सरसों क्षेपण करें—

ॐ वज्राधिपतये आं हां अः ऐं ह्रौं ह्रः क्षूं क्षं क्षः इन्द्राय संवौषट् ।

निम्न मंत्र पढ़कर यजमानादि पर पुष्प क्षेपण करें—

ॐ ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा णमो अरहन्ताणं सप्तर्द्धि समृद्धि समृद्धगणधराणां अनाहतपराक्रमस्ते भवतु भवतु ह्रीं नमः ।

अभिषेक पाठ

वसन्ततिलका

श्रीमन्नतामरशिरस्तटरत्नदीप्ति तोयावभासिचरणाम्बुजयुग्ममीशम् ।
अर्हन्तमुन्नतपदप्रदमाभिनम्य त्वन्मूर्तिषूद्यदभिषेकविधिं करिष्ये ॥ १ ॥

अथ पौर्वाह्णिकदेववन्दनायां पूर्वाचार्यानुक्रमेण सकलकर्मक्षयार्थं भावपूजास्तव वन्दनासमेतं श्रीपंचमहागुरुभक्तिकायोत्सर्गं करोम्यहम् ।

(नौ बार णमोकार मन्त्र पढ़ें)

निम्न श्लोक पढ़कर पुष्पांजलि क्षेपण करके अभिषेक की प्रतिज्ञा करें—

या: कृत्रिमास्तदितरा: प्रतिमा जिनस्य
संस्नापयन्ति पुरुहूतमुखादयस्ता: ।
सद्भावलब्धिसमयादिनिमित्तयोगा—
त्तत्रैवमुज्जवलधिया कुसुमं क्षिपामि ॥ २ ॥

इति अभिषेक प्रतिज्ञायै पुष्पांजलिं क्षिपामि ।

निम्न श्लोक पढ़कर अभिषेक की थाली में केशर से श्री लिखें—

उपजाति

श्रीपीठक्लृप्ते विशदाक्षतौघे श्रीप्रस्तरे पूर्णशशांककल्पे ।
श्रीवर्तके चन्द्रमसीति वार्तां सत्यापयन्तीं श्रियमालिखामि ॥ ३ ॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हं श्रीलेखनं करोमि ।

निम्न श्लोक पढ़कर सिंहासन स्थापित करें—

अनुष्टुप

कनकादिनिभं कम्रं पावनं पुण्यकारणम् ।
स्थापयामि परं पीठं जिनस्नपनाय भक्तित: ॥ ४ ॥

ॐ ह्रीं श्री पीठस्थापनं करोमि ।

निम्न श्लोक पढ़कर प्रतिमा विराजमान करें—

भृंगारचामरसुदर्पणपीठकुम्भ— तालध्वजातपनिवारकभूषिताग्रे ।
वर्धस्व नन्द जय पाठपदावलीभि: सिंहासनं जिनभवन्तमहं श्रयामि ॥ ५ ॥

ॐ ह्रीं श्रीधर्मतीर्थाधिनाथ ! भगवन्निहपाण्डुकशिलापीठेसिंहासने तिष्ठ तिष्ठ ।

निम्न श्लोक पढ़कर चारों कोनों में चार कलश रखें—

श्रीतीर्थकृत्स्नपनवर्यविधौ सुरेन्द्रः
क्षीराब्धिवारिभिरपूरयदर्थकुम्भान् ।
ताँस्ताँदृशानिव विभाव्य यथार्हणीयान्
संस्थापये कुसुमचन्दनभूषिताग्रे ॥ ६ ॥

ॐ ह्रीं चतुःकोणेषु चतुर्कलशस्थापनं करोमि ।

निम्न श्लोक पढ़कर अर्घ्य चढ़ावें, वादित्र नाद करावें तथा जय-जय शब्द का उच्चारण करें—

आनन्दनिर्भरसुरप्रमदादिगानैः
वादित्रपूरजयशब्दकलप्रशस्तैः ।
उद्गीयमानजगतीपतिकीर्तिमेनी
पीठस्थलीं वसुविधार्चनयोल्लसामि ॥ ७ ॥

ॐ ह्रीं स्नपनपीठस्थिताय जिनायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

निम्न श्लोक पढ़कर चारों कलशों से अभिषेक करें—

कर्मप्रबन्धनिगडैरपि हीनताप्तं ज्ञात्वापि भक्तिशतः परमादिदेवम् ।
त्वां स्वीयकल्मषगणोन्मथनाय देव शुद्धोदकैरभिनयामि नयार्थतत्वम् ॥ ८ ॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं वं मं हं सं तं पं वं वं हं हं सं सं तं तं पं पं झं झं क्ष्वीं क्ष्वीं क्ष्वीं क्ष्वीं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पवित्रतरजलेन जिनमाभिषेचयामि स्वाहा ।

निम्न श्लोक पढ़कर गन्धोदक माथे पर चढ़ावें—

दूरावनम्रसुरनाथकिरीटकोटी संलग्नरत्नकिरणच्छविधूसरांघ्रि ।
प्रस्वेदतापमलमुक्तमपिप्रकृष्टै- र्भक्त्या जलैर्जिनपतिबहुधाभिषिंचे ॥ ९ ॥

ॐ ह्रीं श्रीमन्तं भगवन्तं कृपालसन्तं वृषभादिमहावीरपर्यन्तं चतुर्विंशतितीर्थंकरपरमदेवं आद्यानामाद्ये जम्बूद्वीपे भरतक्षेत्रे आर्यखंडे.....नाम्नि नगरे मासानामुत्तमे मासे.....,मासे.....पक्षे.....शुभ दिने मुन्यार्यिकाश्रावकश्राविकाणां सकलकर्मक्षयार्थं जलेनाभिषिंचेयाम ।

निम्न श्लोक पढ़कर अर्घ्य चढ़ावें—

पानीयचन्दनसदक्षतपुष्पपुंज,
नैवेद्यदीपकसुधूपफलव्रजेन ।

कर्माष्टक— क्रथनवीरमनन्तशक्ति,

संपूजयामि महसा महसां निधानम् ॥ १० ॥

ॐ ह्रीं अभिषेकान्ते वृषभादिवीरान्तेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

निम्न श्लोक पढ़कर शान्ति के लिए पुष्पांजलि छोड़ें—

हे तीर्थपा निजयशोधवलीकृताशाः
सिद्धौषधाश्च भवदुःखमहागदानाम् ।
सद्द्रव्यहृज्जनितपंकजबन्धकल्पा
यूयं जिनाः सततशान्तिकरा भवन्तु ॥ ११ ॥

निम्न श्लोक पढ़कर गन्धोदक मस्तक पर चढ़ावें—

नत्वा परीत्य निजनेत्रललाटयोश्च
व्याप्तं क्षणेन हरताघसंचयं मे ।
शुद्धोदकं जिनपते तव पादयोगात्
भूयाद्भवातपहरं धृतमादरेण ॥ १२ ॥

अनुष्टुप

निर्मलं निर्मलीकरणं पवित्रं पापनाशनम् ।
जिनगन्धोदकं वन्दे सर्वकर्मविनाशनम् ॥ १३ ॥

शार्दूल विक्रीड़ित

मुक्ति श्री वनिताकरोदकमिदं पुण्यांकुरोत्पादकं,
नागेन्द्र त्रिदशेन्द्र चक्रपदवी राज्याभिषेकोदकं
सम्यग्ज्ञान चरित्र दर्शनलता संवृद्धिसम्पादकं,
कीर्ति श्रीजय साधकं तव जिन !स्नानस्य गंधोदकम् ॥ १४ ॥

निम्न श्लोक पढ़कर प्रतिमाजी को शुद्ध और स्वच्छ वस्त्र से पोंछे—

वसंततिलका

नत्वा मुहुर्निज करैरमृतोपमेयैः,
स्वच्छैर्जिनेन्द्र तव चन्द्रकरावदातैः ।
शुद्धांशुकेन विमलेन नितान्तरम्ये,
देहे स्थितान् जलकणान्परिमार्जयामि ॥ १५ ॥

ॐ अमलांशुकेन जिनबिम्बमार्जनं करोमि।

निम्न श्लोक पढ़कर प्रतिमा को सिंहासन पर विराजमान करें—

स्नानं विधाय भवतोऽष्टसहस्रनाम्ना—
मुच्चारणेन मनसो वचसो विशुद्धिं।
जिघ्रक्षुरिष्टिमिन तेऽष्टतयीं विधातुं,
सिंहासने विधिवदत्र निवेशयामि ॥ १६ ॥

निम्न श्लोक पढ़कर अर्घ्य चढ़ावें—

अनुष्टुप

जलगन्धाक्षतैः पुष्पैश्चरूदीपसुधूपकैः।
फलैरर्घैर्जिनमर्चे जन्मदुःखापहानये ॥ १७ ॥

ॐ ह्रीं श्री पीठस्थिताय जिनयार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निम्न श्लोक पढ़करपुष्प क्षेपण करें—

शिखरिणी

इमे नेत्रे जाते सुकृतजलसिक्ते सफलिते,
ममेदं मानुष्यं कृतिजनगणादेयमभवत्।
दृमदीयाद्भालादशुभवसुकर्माटनमभूत्
सदेदृक् पुण्यौघो मम भवतु ते पूजनविधौ ॥ १८ ॥

(पुष्पांजलि क्षिपेत करें)

* * *

जलाभिषेक पाठ

दोहा

जय जय भगवंते सदा, मंगल मूल महान।
वीतराग सर्वज्ञ प्रभु, नमौं जोरि जुगपान॥

अडिल्ल और गीता

श्रीजिन जग में ऐसो को बुधवंत जू।
जो तुम गुण वरननि करि पावै अन्त जू॥
इन्द्रादिक सुर चार ज्ञानधारी मुनि।
कहि न सकै तुम गुणगण हे त्रिभुवन धनी॥
अनुपम अमित तुम गुणनि वारिधि ज्यों अलोकाकाश है।
किमि धरै हम उर कोष में सो अकथ गुण-मणिराश है॥
पै जिन ! प्रयोजन सिद्धि की तुम नाम ही में शक्ति है।
यह चित्त में सरधान यातें नाम ही में भक्ति है॥ १॥

ज्ञानावरणी दर्शन-आवरणी भने।
कर्म मोहनी अन्तराय चारों हने॥
लोकालोक विलोक्यो केवलज्ञान में।
इन्द्रादिक के मुकुट नये सुरथान में॥
तब इन्द्र जान्यो अवधि तैं, उठि सुरनयुत वंदत भयौ।
तुम पुण्य को प्रेरयो हरि ह्वै मुदित धनपति सौं कह्यो॥
अब वेगि जाय रचौ समवसृति सफल सुरपद को करौ।
साक्षात् श्री अरहंत के दर्शन करौ कल्मष हरौ॥ २॥

ऐसे वचन सुने सुरपति के धनपति।
चल आयो तत्काल मोद धारैं अति॥
वीतराग छबि देखि शब्द जय-जय कह्यो।
देय प्रदच्छिना बार-बार वंदत भयौ॥
अति भक्ति भीनो नम्रचित ह्वै सवशरण रच्यो सही।
ताकी अनूपम शुभ गति को कहन समरथ कोउ नहीं॥

प्राकार तोरण सभामंडप कनक मणिमय छाजहीं।
नगजड़ित गंधकुटी मनोहर मध्यभाग विराजहीं ॥ ३ ॥

सिंहासन तामध्य बन्यौ अद्भुत दिपै।
तापर वारिज रच्यो प्रभा दिनकर छिपै ॥
तीन छत्र सिर शोभित चौंसठ चमरजी।
महाभक्तियुत ढोरत हैं तहाँ अमरजी ॥

प्रभु तरनतारन कमल ऊपर, अन्तरीक्ष विराजिया।
यह वीतराग दशा प्रतच्छ विलोकि, भविजन सुख लिया ॥
मुनि आदिद्वादश सभा के भवि जीव मस्तकनायकैं।
बहुभाँति बारम्बार पूजैं, नमैं गुणगण गायकैं ॥ ४ ॥

परमौदारिक दिव्य देह पावन सही।
क्षुधा तृषा चिन्ता भय गद दूषण नहीं ॥
जन्म जरा मृति अरति शोक विस्मय नसैं।
राग रोष निद्रा मद मोह सबैं खसैं ॥

श्रम बिना श्रमजलरहित पावन, अमल ज्योति स्वरूपजी।
शरणागतनि की अशुचिता हरि, करतविमल अनूपजी ॥
ऐसे प्रभु की शांतमुद्रा को न्हवन जलतैं करैं।
'जस' भक्तिवश मन उक्ति तैं, हम भानु ढिग दीपक धरैं ॥ ५ ॥

तुम तो सहज पवित्र यही निश्चय भयो।
तुम पवित्रता हेत नहीं मज्जन ठयो ॥
मैं मलीन रागादिक मलतैं ह्वै रह्यौ।
महामलिन तन में वसुविधिवश दुख सह्यौ ॥

बीत्यो अनंतो काल यह, मेरी अशुचिता ना गई।
तिस अशुचिताहर एक तुम ही, भरहु वांछा चित ठई ॥
अब अष्टकर्म विनाश सब मल, दोष—रागादिक हरौ।
तनरूप कारागेह तैं, उद्धार शिववासा करौ ॥ ६ ॥

मैं जानत तुम अष्टकर्म हरि शिव गये।
आवागमन विमुक्त रागवर्जित भये ॥

पर तथापि मेरो मनरथ पूरत सही।
नय-प्रमाण तैं जानि महा साता लही॥
पापाचरण तजि न्हवन करता चित्त में ऐसे धरूँ।
साक्षात् श्री अरहंत का मानों न्हवन परसन करूँ॥
ऐसे विमल परिणाम होते अशुभ नशि शुभबन्ध तैं।
विधि अशुभ नसि शुभ बन्धतैं ह्वै शर्म,सबविधि नासतैं॥ ७॥

पावन मेरे नयन भये तुम दरस तैं।
पावन पाणि भये तुम चरननि परस तैं॥
पावन मन ह्वै गयो तिहारे ध्यान तैं।
पावन रसना मानी, तुम गुण गान तैं॥
पावन भई परजाय मेरी, भयो मैं पूरण धनी।
मैं शक्तिपूर्वक भक्ति कीनी, पूर्णभक्ति नहीं बनी॥
धनि धन्य ते बड़भागि भवि तिन नींव शिवघर की धरी।
वर क्षीरसागर आदि जल मणि- कुम्भभरी भक्ति करी॥ ८॥

विघन-सघन-वन-दाहन दहन प्रचण्ड हो।
मोह-महातम-दलन प्रबल मार्तण्ड हो॥
ब्रह्मा विष्णु महेश आदि संज्ञा धरो।
जगविजयी जमराज नाश ताको करो॥
आनन्दकारण दुख निवारण, परममंगलमय सही।
मोसो पतित नहिं और तुमसो, पतित-तार सुन्यो नहीं॥
चिंतामणि पारस कल्पतरु, एक भव सुखकार ही।
तुम भक्ति-नौका जे चढ़े; ते भये भवदधि पार ही॥ ९॥

तुम भवदधि तैं तरि गये, भये निकल अविकार।
तारतम्य इस भक्ति को, हमैं उतारो पार॥ १०॥

निर्मलवस्त्र से प्रतिमाजी को साफ कर निम्न श्लोक बोलकर गन्धोदक ग्रहण करें।

निर्मलं निर्मलीकरणं, पावनम् पापनाशनम्।
जिनचरणोदकं वंदे, अष्टकर्म विनाशनम्॥ *

प्रतिमा प्रक्षाल पाठ

दोहा

परिणामों की स्वच्छता के निमित्त जिनबिम्ब ।
इसीलिए मैं निरखता, इनमें निज प्रतिबिम्ब ॥
पञ्च प्रभु के चरण में, वन्दन करूँ त्रिकाल ।
निर्मल जल से कर रहा, प्रतिमा का प्रक्षाल ॥

अथ पौर्वान्हिक देववन्दनायां पूर्वाचार्यानुक्रमेण सकलकर्मक्षयार्थं भावपूजा स्तवन्दनासमेतं श्री पंचमहागुरुभक्तिपूर्वककायोत्सर्गं करोम्यहम् ।

(नौ बार णमोकार मन्त्र पढ़ें)

(छप्पय)

तीन लोक के कृत्रिम और अकृत्रिम सारे ।
जिनबिम्बों को नित प्रति अगणित नमन हमारे ॥
श्री जिनवर की अन्तर्मुख छवि उर में धारूँ ।
जिन में निज का,निज में जिन-प्रतिबिम्ब निहारूँ ॥
मैं करूँ आज संकल्प शुभ, जिन प्रतिमा प्रक्षाल का ।
यह भाव सुमन अर्पण करूँ फल चाहूँ गुणमाल का ॥

ॐ ह्रीं प्रक्षाल प्रतिज्ञायै पुष्पांजलिं क्षिपामि ।

(प्रक्षाल की प्रतिज्ञा हेतु पुष्प क्षेपण करें)

रोला

अन्तरंग बहिरंग सुलक्ष्मी से जो शोभित ।
जिनकी मंगल वाणी पर है त्रिभुवन मोहित ॥
श्री जिनवर सेवा से क्षय मोहादि विपत्ति ।
हे जिन ! श्री लिख पाऊँगा निज-गुण सम्पत्ति ॥

ॐ ह्रीं श्री लेखनं करोमि ।

(थाली की चौकी पर केशर से श्री लिखें)

दोहा

अन्तर्मुख मुद्रा सहित शोभित श्री जिनराज ।
प्रतिमा प्रक्षालन करूँ, धरूँ पीठ यह आज ॥

ॐ ह्रीं श्री पीठस्थापनं करोमि ।

(प्रक्षाल हेतु थाली स्थापित करें)

(रोला)

भक्ति रत्न से जड़ित आज मंगल सिंहासन ।
भेद-ज्ञान जल से क्षालित भावों का आसन ॥
स्वागत है ! जिनराज तुम्हारा सिंहासन पर ।
हे जिनदेव ! पधारो श्रद्धा के आसन पर ॥

ॐ ह्रीं श्री धर्मतीर्थाधिनाथ भगवन्निह सिंहासने तिष्ठतिष्ठ ।

(थाली में जिनबिम्ब विराजमान करें)

क्षीरोदधि के जल से भरे कलश ले आया ।
दृग-सुख-वीरजज्ञान स्वरूपी आतम पाया ॥
मंगल कलश विराजित करता हूँ जिनराजा ।
परिणामों के प्रक्षालन से सुधरें काजा ॥

ॐ ह्रीं अर्हं कलश स्थापनं करोमि ।

(चारों कोनों में निर्मल जल से भरे कलश स्थापित करें)

जल-फल आठों द्रव्य मिलाकर अर्घ्य बनाया ।
अष्ट अंग युत मानो सम्यग्दर्शन पाया ॥
श्री जिनवर के चरणों में यह अर्घ्य समर्पित ।
करूँ आज रागादि विकारी भाव विसर्जित ॥

ॐ ह्रीं श्री स्नपनपीठस्थिताय जिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

(पीठ स्थित जिन प्रतिमा को अर्घ्य चढ़ायें)

मैं रागादि विभावों से कलुषित हे जिनवर ।
और आप परिपूर्ण वीतरागी हो प्रभुवर ॥
कैसे हो प्रक्षाल, जगत के अघ-क्षालक का ।
क्या दरिद्र होगा पालक ? त्रिभुवनपालक का ॥

भक्ति भाव के निर्मल जल से अघ-मल धोता ।
है किसका अभिषेक भ्रान्त चित खाता गोता ॥
नाथ ! भक्तिवश जिनबिम्बों का करूँन्हवन मैं ।
आज करूँ साक्षात जिनेश्वर का पर्शन मैं ॥

दोहा

क्षीरोदधि सम नीर से करूँ बिम्ब प्रक्षाल ।
श्री जिनवर की भक्ति से जानूँ निज पर चाल ॥
तीर्थंकर का न्हवन शुभ सुरपति करें महान ।
पंचमेरु भी हो गए महातीर्थ सुखदान ॥
करता हूँ शुभ भाव से प्रतिमा का अभिषेक ।
बचूँ शुभाशुभ भाव से यही कामना एक ॥

ॐ ह्रीं श्रीमन्तं भगवन्तं कृपालसन्तं वृषभादि महावीरपर्यन्तं चतुर्विंशतितीर्थंकर परमदेवम्आद्यानामाद्ये जम्बूद्वीपे भरतक्षेत्रे आर्य खण्डे.......नाम्निनगरे मासा नामुत्तमे.......मासे........पक्षे........दिने मुन्यार्यिकाश्रावकश्राविकाणां सकलकर्म- क्षयार्थं पवित्रतरजलेन जिनमभिषेचयामि ।

(चारों कलशों से अभिषेक करें तथा वादित्र नाद करावें एवं जय-जय शब्दोच्चारणकरें)

दोहा

जिन संस्पर्शित नीर यह, गन्धोदक गुण खान ।
मस्तक पर धारूँ सदा, बनूँ स्वयं भगवान ॥

(मस्तक पर गन्धोदक चढ़ावें । अन्य किसी अंग से गन्धोदक का स्पर्श वर्जित है)

जल-फलादि वसु द्रव्य ले, मैं पूजूँ जिनराज ।
हुआ बिम्ब अभिषेक अब, पाऊँ निज पदराज ॥

ॐ ह्रीं अभिषेकान्ते वृषभादिवीरान्तेभ्योऽर्घ्यंनिर्वपामीति स्वाहा ।

श्री जिनवर का धवल यश त्रिभुवन में है व्याप्त ।
शान्ति करें मम चित्त में, हे परमेश्वर आप्त ॥

(पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

रोला

जिन प्रतिमा पर अमृत सम जल कण अति शोभित ।
आत्म-गगन में गुण अनन्त तारे, भवि मोहित ॥
हो अभेद का लक्ष्य, भेद का करता वर्जन ।
शुद्ध वस्त्र से जल कण का करता परिमार्जन ॥

ॐ अमलांशुकेन जिनबिम्बमार्जनं करोमि ।

(प्रतिमा को शुद्ध वस्त्र से पोंछे)

दोहा

श्री जिनवर की भक्ति से, दूर होय भव-भार ।
उर-सिंहासन थापिये, प्रिय चैतन्य कुमार ॥

(जिन-प्रतिमा को सिंहासन पर विराजमान करें तथा निम्न छन्द बोलकर अर्घ्य चढ़ायें ।)

जल गन्धादिक द्रव्य से, पूजूँ श्री जिनराज ।
पूर्ण अर्घ्य अर्पित करूँ, पाऊँ चेतनराज ॥

ॐ ह्रीं श्री पीठस्थितजिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

प्रक्षाल के सम्बन्ध में प्रमुख विचारणीय बिन्दु :

१. अर्हन्त भगवान का अभिषेक नहीं होता, जिनबिम्ब का प्रक्षाल किया जाता है, जो अभिषेक के नाम से प्रचलित है ।

२. जिनबिम्ब का प्रक्षाल मात्र शुद्ध जल से शुद्ध वस्त्र पहनकर किया जाए ।

३. प्रक्षाल मात्र पुरुषों द्वारा ही किया जाए । महिलायें जिनबिम्ब को स्पर्श न करें ।

४. जिनबिम्ब का प्रक्षाल प्रतिदिन एक बार हो जाने के पश्चात् बार-बार न करें ।

पूजा पीठिका

ॐ जय जय जय। नमोऽस्तु नमोऽस्तु नमोऽस्तु।
णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं।
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं॥

ॐ ह्रीं अनादिमूलमन्त्रेभ्यो नमः, पुष्पांजलिं क्षिपामि।

चत्तारि मंगलं—अरिहंता मंगलं, सिद्धा मंगलं,
साहू मंगलं, केवलिपण्णत्तो धम्मो मंगलं।

चत्तारि लोगुत्तमा—अरिहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा,
साहू लोगुत्तमा, केवलिपण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमो।

चत्तारि सरणं पव्वज्जामि—अरिहंते सरणं पव्वज्जामि,
सिद्धे सरणं पव्वज्जामि, साहू सरणं पव्वज्जामि,
केवलिपण्णत्तं धम्मं सरणं पव्वज्जामि।

ॐ नमोऽर्हते स्वाहा, पुष्पांजलिं क्षिपामि।

मंगल विधान

अपवित्रः पवित्रो वा सुस्थितो दुःस्थितोऽपि वा।
ध्यायेत्पञ्चनमस्कारं सर्व पापैः प्रमुच्यते॥ १॥
अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा।
यः स्मरेत्परमात्मानं स बाह्याभ्यन्तरे शुचिः॥ २॥
अपराजितमन्त्रोऽयं सर्व विघ्नविनाशनः।
मङ्गलेषु च सर्वेषु प्रथमं मङ्गलं मतः॥ ३॥
एसो पंच णमोयारो सव्व पावप्पणासणो।
मंगलाणं च सव्वेसिं पढमं होई मंगलं॥ ४॥
अर्हमित्यक्षरं ब्रह्मवाचकं परमेष्ठिनः।
सिद्धचक्रस्य सद्बीजं सर्वतः प्रणमाम्यहम्॥ ५॥

कर्माष्टक — विनिर्मुक्तं मोक्ष-लक्ष्मी निकेतनम् ।
सम्यक्त्वादि-गुणोपेतं सिद्धचक्रं नमाम्यहम् ॥ ६ ॥
विघ्नौघा: प्रलयं यान्ति शाकिनी-भूत-पन्नगा: ।
विषं निर्विषतां याति स्तूयमाने जिनेश्वरे ॥ ७ ॥

पुष्पांजलि क्षिपेत्

जिनसहस्त्रनाम अर्घ्य

उदक-चन्दन-तन्दुलपुष्पकैश्चरु-सुदीप-सुधूप-फलार्घ्यकैः ।
धवल-मङ्गल-गान-रवाकुले जिन-गृहे जिननाथमहं यजे ॥

ॐ ह्रीं श्रीभगवज्जिनसहस्त्रनामेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

पूजा प्रतिज्ञा पाठ

श्रीमज्जिनेन्द्र—मभिवन्द्य जगत्त्रयेशं,
स्याद्वाद—नायकमनन्त—चतुष्टयार्हम् ।
श्रीमूलसंघ—सुदृशां सुकृतैकहेतु,
जैनेन्द्र-यज्ञ-विधिरेष मयाऽभ्यधायि ॥ १ ॥

स्वस्ति त्रिलोक-गुरवे जिन-पुंङ्गवाय,
स्वस्ति स्वभाव-महिमोदय-सुस्थिताय ।
स्वस्ति प्रकाश-सहजोर्ज्जि-दृङ् मयाय,
स्वस्ति प्रसन्न-ललिताद्भुत-वैभवाय ॥ २ ॥

स्वस्त्युच्छलद्विमल-बोधसुधा प्लवाय,
स्वस्ति स्वभाव-परभाव-विभासकाय ।
स्वस्ति त्रिलोकविततैक-चिदुद्गमाय
स्वस्ति त्रिकाल-सकलायत-विस्तृताय ॥ ३ ॥

द्रव्यस्य शुद्धिमधिगम्य यथानुरूपं,
भावस्य शुद्धिमधिकामधिगन्तुकामः ।
आलम्बनानि विविधान्यवलम्ब्य वल्गन्,
भूतार्थ-यज्ञ-पुरुषस्य करोमि यज्ञम् ॥ ४ ॥

अर्हन् पुराणपुरुषोत्तम पावनानि,
वस्तून्यनूनमखिलान्ययमेक एव।
अस्मिन्ज्वलद्विमल- केवल- बोधवह्नौ,
पुण्यं समग्रमहमेकमना जुहोमि ॥ ५ ॥

ॐ विधियज्ञ प्रतिज्ञायै जिनप्रतिमाग्रे पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि।

स्वस्ति मंगलपाठ

श्रीवृषभो नः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीअजितः।
श्रीसम्भवः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीअभिनन्दनः।
श्रीसुमतिः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीपद्मप्रभः।
श्रीसुपार्श्वः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीचन्द्रप्रभः।
श्रीपुष्पदन्तः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीशीतलः।
श्रीश्रेयान्सः स्वस्ति, स्वस्ति श्री वासुपूज्यः।
श्रीविमलः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीअनन्तः।
श्रीधर्मः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीशान्तिः।
श्रीकुन्थुः स्वस्ति, स्वस्ति श्री अरनाथः।
श्रीमल्लिः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीमुनिसुव्रतः।
श्रीनमिः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीनेमिनाथः।
श्रीपार्श्वः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीवर्द्धमानः।

पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

परमर्षि स्वस्ति मंगलपाठ

(प्रत्येक श्लोक के बाद पुष्प क्षेपण करें)

नित्याप्रकम्पाद्भुत-केवलौघाः स्फुरन्मनः पर्यय-शुद्धबोधाः।
दिव्यावधिज्ञान-बलप्रबोधाः स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः ॥ १ ॥

कोष्ठस्थ—धान्योपममेकबीजं संभिन्न—संश्रोतृ-पदानुसारि।
चतुर्विधं बुद्धिबलं दधानाः स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः ॥ २ ॥

संस्पर्शनं संश्रवणं च दूरादास्वादन—घ्राण—विलोकनानि।
दिव्यान्मतिज्ञान-बलाद्वहन्तः स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः ॥ ३ ॥

प्रज्ञाप्रधानाः श्रमणाः समृद्धाः प्रत्येकबुद्धा दशसर्वपूर्वैः ।
प्रवादिनोऽष्टाङ्गनिमित्तविज्ञाः स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः ॥ ४ ॥

जङ्घावलि—श्रेणि-फलाम्बु-तन्तु-प्रसून-बीजांकुर-चारणाह्वाः ।
नभोऽङ्गणस्वैर— विहारिणश्च स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः ॥ ५ ॥

अणिम्निदक्षाः कुशलामहिम्नि लघिम्निशक्ताः कृतिनो गरिम्णि,
मनो-वपुर्वाग्बलिनश्च नित्यं स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः ॥ ६ ॥

सकामरूपित्व-वशित्वमैश्यं प्रकाम्यमन्तर्द्धिमथाप्तिमाप्ताः ।
तथाऽप्रतीघातगुणप्रधानाः स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः ॥ ७ ॥

दीप्तं च तप्तं च तथा महोग्रं घोरं तपो घोरपराक्रमस्थाः ।
ब्रह्मापरं घोर गुणाश्चरन्तः स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः ॥ ८ ॥

आमर्ष — सर्वौषधयस्तथाशीर्विषा — विषा दृष्टिविषंविषाश्च ।
सखिल्ल-विड्जल्ल-मलौषधीशाः स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः ॥९ ॥

क्षीरं स्रवन्तोऽत्र घृतं स्रवन्तो मधुस्रवन्तोऽप्यमृतं स्रवन्तः ।
अक्षीणसंवास-महानसाश्च स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः ॥ १० ॥

(इति परमर्षिस्वस्तिमङ्गलविधानम् ।)

भजन

हे प्रभो ! चरणों में तेरे आ गये ।
भावना अपनी का फल हम पा गये ॥ टेक ॥

वीतरागी हो तुम्हीं सर्वज्ञ हो ।
सप्त तत्वों के तुम्हीं मर्मज्ञ हो ॥
मुक्ति का मार्ग तुम्हीं से पा गये ॥१ ॥

विश्व सारा है झलकता ज्ञान में ।
किन्तु प्रभुवर लीन है निज ध्यान में ॥
ध्यान में निज ज्ञान को हम पा गये ॥ २ ॥

तुमने बताया जगत के सब आत्मा ।
द्रव्य-दृष्टि से सदा परमात्मा ॥
आज निज परमात्मा पद पा गये ॥३ ॥

श्री पंच परमेष्ठी पूजन

अरहंत सिद्ध आचार्य नमन, हे उपाध्याय हे साधु नमन ।
जय पंच परम परमेष्ठी जय, भव सागर-तारणहार नमन ॥
मन-वच-काया पूर्वक करता हूँ, शुद्ध हृदय से आह्वानन ।
मम हृदय विराजो तिष्ठ तिष्ठ सन्निकट होहु मेरे भगवन ॥
निज आत्मतत्त्व की प्राप्ति हेतु, ले अष्ट द्रव्य करता पूजन ।
तुम चरणों की पूजन से प्रभु निज सिद्ध रूप का हो दर्शन ॥

ॐ ह्रीं श्री अरहंत-सिद्ध-आचार्य-उपाध्याय-सर्वसाधुपंचपरमेष्ठिनः ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम् । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् । अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम् ।

मैं तो अनादि से रोगी हूँ, उपचार कराने आया हूँ ।
तुम सम उज्ज्वलता पाने को, उज्ज्वल जल भरकर लाया हूँ ॥
मैं जन्म-जरा-मृतु नाश करूँ, ऐसी दो शक्ति हृदय स्वामी ।
हे पंच परम परमेष्ठी प्रभु, भव-दुख मेटो अन्तर्यामी ॥

ॐ ह्रीं श्री पंचपरमेष्ठिभ्यो जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय जलम् निर्वपामीति स्वाहा ।

संसार ताप में जल-जल कर, मैंने अगणित दुःख पाये हैं ।
निज शान्त स्वभाव नहीं भाया, पर के ही गीत सुहाए हैं ॥
शीतल चंदन है भेंट तुम्हें, संसार ताप नाशो स्वामी ।
हे पंच परम परमेष्ठी प्रभु, भव-दुख मेटो अन्तर्यामी ॥

ॐ ह्रीं श्री पंचपरमेष्ठिभ्यो संसारतापविनाशनाय चन्दनम् निर्वपामीति स्वाहा ।

दुःखमय अथाह रुभवसागर में, मेरी यह नौका भटक रही ।
शुभ-अशुभ भाव की भँवरों में, चैतन्य शक्ति निज अटक रही ॥
तन्दुल है धवल तुम्हें अर्पित, अक्षयपद प्राप्त करूँ स्वामी ।
हे पंच परम परमेष्ठी प्रभु, भव-दुख मेटो अन्तर्यामी ॥

ॐ ह्रीं श्री पंचपरमेष्ठिभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ।

मैं काम व्यथा से घायल हूँ, सुख की न मिली किंचित् छाया ।
चरणों में पुष्प चढ़ाता हूँ, तुम को पाकर मन हर्षाया ॥

मैं काम भाव विध्वंस करूँ, ऐसा दो शील हृदय स्वामी।
हे पंच परम परमेष्ठी प्रभु, भव-दुख मेटो अन्तर्यामी॥

ॐ ह्रीं श्री पंचपरमेष्ठिभ्यो कामबाणविध्वंसनाय पुष्पम् निर्वपामीति स्वाहा।

मैं क्षुधा रोग से व्याकुल हूँ, चारों गति में भरमाया हूँ।
जग के सारे पदार्थ पाकर भी, तृप्त नहीं हो पाया हूँ॥
नैवेद्य समर्पित करता हूँ, यह क्षुधा रोग मेटो स्वामी।
हे पंच परम परमेष्ठी प्रभु, भव-दुख मेटो अन्तर्यामी॥

ॐ ह्रीं श्री पंचपरमेष्ठिभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

मोहान्ध महा अज्ञानी मैं, निज को पर का कर्ता माना।
मिथ्यातम के कारण मैंने, निज आत्मस्वरूप न पहिचाना॥
मैं दीप समर्पण करता हूँ, मोहान्धकार क्षय हो स्वामी।
हे पंच परम परमेष्ठी प्रभु, भव-दुख मेटो अन्तर्यामी॥

ॐ ह्रीं श्री पंचपरमेष्ठिभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपम् निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मों की ज्वाला धधक रही, संसार बढ़ रहा है प्रतिपल।
संवर से आस्रव को रोकूँ, निर्जरा सुरभि महके पल-पल॥
मैं धूप चढ़ाकर अब आठों, कर्मों का हनन करूँ स्वामी।
हे पंच परम परमेष्ठी प्रभु, भव—दुख मेटो अन्तर्यामी॥

ॐ ह्रीं श्री पंचपरमेष्ठिभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपम् निर्वपामीति स्वाहा।

निज आत्मतत्त्व का मनन करूँ, चिंतवन करूँ निज चेतन का।
दो श्रद्धा-ज्ञान—चरित्र श्रेष्ठ, सच्चा पथ मोक्ष निकेतन का॥
उत्तम फल चरण चढ़ाता हूँ निर्वाण महाफल हो स्वामी।
हे पंच परम परमेष्ठी प्रभु, भव-दुख मेटो अन्तर्यामी॥

ॐ ह्रीं श्री पंचपरमेष्ठिभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलम् निर्वपामीति स्वाहा।

जल चन्दन अक्षत पुष्प दीप, नैवेद्य धूप फल लाया हूँ।
अब तक के संचित कर्मों का, मैं पुंज जलाने आया हूँ॥
यह अर्घ्य समर्पित करता हूँ, अविचल अनर्घ्य पद दो स्वामी।
हे पंच परम परमेष्ठी प्रभु, भव—दुख मेटो अन्तर्यामी॥

ॐ ह्रीं श्री पंचपरमेष्ठिभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

उपजाति

अनादिसन्तानभवान् जिनेन्द्रान् अर्हत्पदेष्टानुपदिष्टधर्मान्।
द्वेधाश्रियालिंगितपादपद्मान् यजामि भक्त्या प्रकृतिप्रसक्त्यै॥ १॥
ॐ ह्रीं अनन्तचतुष्टयसमवसरणलक्ष्मीं बिभ्रतेऽर्हत्परमेष्ठिनेऽर्घ्यं।

कर्माष्टनाशाच्युतभावकर्मोद्धतीन् निजात्मस्वविलासभूपान्।
सिद्धानन्तांस्त्रिक्कालमध्ये गीतान् यजामीष्टविधिप्रसक्त्यै॥ २॥
ॐ ह्रीं अष्टकर्मकाष्ठगणं भस्मीकुर्वते सिद्धपरमेष्ठिनेऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ये पंचधाचारपरायणानाम् अग्रे सरादक्षिणशिक्षिकासु।
प्रमाणनिर्णीतपदार्थसार्थानाचार्यवर्यान् परिपूजयामि॥ ३॥
ॐ ह्रीं पंचाचारपरायणाचार्यपरमेष्ठिनेऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्थश्रुतं सत्यविबोधनेन द्रव्यश्रुतं ग्रन्थविदर्भणेन।
येऽध्यापयन्ति प्रवरानुभावास्तेऽध्यापका मे हृणया दुहन्तु॥ ४॥
ॐ ह्रीं द्वादशांगपठनपाठनोद्यतोपाध्यायपरमेष्ठिनेऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्विधा तपोभावनया प्रवीणान् स्वकर्मभूवीघ्रविखण्डनेषु।
विविक्तशय्यासनहर्म्यपीठ स्थितान् तपस्विप्रवरान् यजामि॥ ५॥
ॐ ह्रीं त्रयोदशप्रकारचारित्राराधकसाधुपरमेष्ठिनेऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आर्या

अर्हन्मंगलमर्चे सुरनर- विद्याधरैकपूज्यपदम्।
तोयप्रभृतिभिरर्घ्यै-र्विनीतमूर्धा शिवाप्तये नित्यम्॥ ६॥
ॐ ह्रीं अर्हन्मंगलायार्घ्यं...... ।

ध्रौव्योत्पादविनाश रूपाखिलवस्तुबोधनार्थकरम्।
सिद्धं मंगलमिति वा मत्वाच चाष्टविधवस्तुभिः॥७॥
ॐ ह्रीं सिद्धमंगलायार्घ्यं...... ।

यद्दर्शनकृतविभवाद् रोगोपद्रवगणा मृग इव मृगेन्द्रात्।
दूरं भजन्ति देशं साधुभ्योऽर्च्यते विधिना॥८॥
ॐ ह्रीं साधुमंगलायार्घ्यं...... ।

केवलिमुखावगतया वाण्या निर्दिष्टभेदधर्मगणम् ।
मत्वा भवसिन्धुतरीं प्रयजे तन्मंगलं शुद्ध्यै ॥ ९ ॥

ॐ ह्रीं केवलिप्रज्ञप्तधर्ममंगलायार्घ्यं...... ।

लोकोत्तममथ जिनराट् पदाब्जसेवनयामितदोषविलयाय ।
शक्तं मत्वा घृतजलगन्धैरर्चे समीहितं प्रभवैः ॥ १० ॥

ॐ ह्रीं अर्हल्लोकोत्तमायार्घ्यं...... ।

सिद्धाश्च्युतदोषमला लोकाग्रं प्राप्य शिवसुखं व्रजिताः ।
उत्तमपथगा लोके तानच वसुविधार्चनया ॥ ११ ॥

ॐ ह्रीं सिद्धलोकोत्तमायार्घ्यं...... ।

इन्द्रनरेन्द्रसुरेन्द्रैरर्थिततपसां व्रतैषिणां सुधियाम् ।
उत्तममध्वानम-सावर्चेऽहं सलिलगन्धमुखैः ॥ १२ ॥

ॐ ह्रीं साधुलोकोत्तमायार्घ्यं...... ।

रागपिशाचविमर्दनमत्र भव धैर्यधारिणामतुलम् ।
उत्तममपगतकामो वृषमर्चे शुचितर कुसुमैः ॥ १३ ॥

ॐ ह्रीं केवलिप्रज्ञप्तधर्मोत्तमायार्घ्यं...... ।

अर्हच्छरणमथार्चेनन्तजनुष्यपि न जातु सम्प्राप्तम् ।
नर्तनगानादिविधि- मुद्दिश्याष्टकर्मणां शान्त्यै ॥ १४ ॥

ॐ ह्रीं अर्हच्छरणायार्घ्यं...... ।

निर्व्याबाधगुणादिकप्रागयं शरणं समेतचिदमनन्तम् ।
सिद्धानाममृतानां भूत्यै पूजेयमशुभहान्यर्थम् ॥ १५ ॥

ॐ ह्रीं सिद्धशरणायार्घ्यं...... ।

चिदचिद्भेदं शरणंलौकिकमाप्यं प्रयोजनातीतम् ।
त्यक्त्वा साधुजनानां शरणं भूत्यै यजामि परमार्थम् ॥ १६ ॥

ॐ ह्रीं साधुशरणायार्घ्यं...... ।

केवलिनाथ मुखोद्गतधर्मः प्राणिसुखहितार्थमुद्दिष्टः ।
तत्प्राप्त्यै तद्यजनं कुर्वे मखविघ्ननाशाय ॥ १७ ॥

ॐ ह्रीं केवलिप्रज्ञप्तधर्मशरणायार्घ्यं...... ।

वसन्ततिलका

संसारदुःखहनने निपुणं जनानां नाद्यकन्तचकमिति सप्तदशप्रमाणम्।
संपूजये विविधभक्तिभरावनम्रः शान्तिप्रदं भुवनमुख्यपदार्थसार्थैः ॥ १८ ॥

ॐ ह्रीं अर्हदादिसप्तदशमन्त्रेभ्यः समुदायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

जय वीतराग सर्वज्ञ प्रभो, निज ध्यान लीन गुणमय अपार।
अष्टादश दोष रहित जिनवर, अर्हन्त देव को नमस्कार॥

अविकल अविकारी अविनाशी, निजरूप निरंजन निराकार।
जय अजर अमर हे मुक्तिकंत, भगवंत सिद्ध को नमस्कार॥

छत्तीस सुगुण से तुम मण्डित, निश्चय रत्नत्रय हृदय धार।
हे मुक्तिवधू के अनुरागी, आचार्य सुगुरु को नमस्कार॥

एकादश अंग पूर्व चौदह के, पाठी गुण पच्चीस धार।
बाह्यान्तर मुनि मुद्रा महान, श्री उपाध्याय को नमस्कार॥

व्रत समिति गुप्ति चारित्र धर्म, वैराग्य भावना हृदय धार।
हे द्रव्य-भाव संयममय मुनिवर , सर्व साधु को नमस्कार॥

बहु पुण्य संयोग मिला नरतन, जिनश्रुत जिनदेव चरण दर्शन।
हो सम्यग्दर्शन प्राप्त मुझे, तो सफल बने मानव जीवन॥

निज-पर का भेद जानकर मैं, निज को ही निज में लीन करूँ।
अब भेदज्ञान के द्वारा मैं, निज आत्म स्वयं स्वाधीन करूँ॥

निज में रत्नत्रय धारण कर, निज परिणति को ही पहचानूँ।
पर-परिणति से हो विमुख सदा, निज ज्ञानतत्त्व को ही जानूँ॥

जब ज्ञान—ज्ञेय—ज्ञाता विकल्प तज, शुक्लध्यान मैं ध्याऊँगा।
तब चार घातिया क्षय करके , अर्हंत महापद पाऊँगा॥

है निश्चित सिद्ध स्वपद मेरा, हे प्रभु ! कब इसको पाऊँगा।
सम्यक् पूजा फल पाने को, अब निजस्वभाव में आऊँगा॥

अपने स्वरूप की प्राप्ति हेतु, हे प्रभु ! मैंने की है पूजन।
तब तक चरणों में ध्यान रहे, जब तक न प्राप्त हो मुक्ति सदन॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हंत-सिद्ध-आचार्य-उपाध्याय सर्वसाधुपंचपरमेष्ठिभ्यो महार्घ्यम्..... ।

हे मंगल रूप अमंगल हर, मंगलमय मंगल गान करूँ।
मंगल में प्रथम श्रेष्ठ मंगल, नवकार मन्त्र का ध्यान करूँ॥

पुष्पांजलिं क्षिपेत्

परमेष्ठी - वन्दना

पंच परम परमेष्ठी देखे .... ।
हृदय हर्षित होता है, आनन्द उल्लसित होता है।
हो ऽ ऽ ऽ सम्यग्दर्शन होता है ॥ टेक ॥

दर्श ज्ञान सुख वीर्य स्वरूपी गुण अनन्त के धारी हैं।
जग को मुक्ति मार्ग बताते निज चैतन्य विहारी हैं॥
मोक्षमार्ग के नेता देखे विश्व तत्त्व के ज्ञाता देखे ॥ १ ॥

द्रव्य भाव नोकर्म रहित जो सिद्धालय के वासी हैं।
आतम को प्रतिबिम्बित करते, अजर अमर अविनाशी हैं॥
शाश्वत सुख के भोगी देखे, योग रहित निजयोगी देखे ॥ २ ॥

साधु संघ के अनुशासक जो, धर्मतीर्थ के नायक हैं।
निज पर के हितकारी गुरुवर, देव धर्म परिचायक हैं॥
गुण छत्तीस सुपालक देखे, मुक्तिमार्ग संचालक देखे ॥ ३ ॥

जिनवाणी को हृदयंगम कर शुद्धातम रस पीते हैं।
द्वादशांग के धारक मुनिवर ज्ञानानन्द में जीते हैं॥
द्रव्य भाव श्रुत धारी देखे, बीस – पाँच गुणधारी देखे ॥ ४ ॥

निजस्वभाव साधनारत साधु, परम दिगम्बर वनवासी।
सहज शुद्ध चैतन्यराजमय, निजपरिणति के अभिलाषी॥
चलते-चलते सिद्ध प्रभु देखे, बीस-आठ गुणमय विभु देखे ॥ ५ ॥

विधान की समापन विधि

शान्तियज्ञ :- यह शान्ति और यज्ञ का सामासिक शब्द है । "शांति" का अर्थ (शम, वितन) प्रशमन, संसार एवं शरीर भोगों के प्रति उदासीनता, प्रायश्चितरूप अनुष्ठान आदि है । तथा 'यज्ञ' का अर्थ (यज भावे नङ्ग) याग, पूजा, पूजन समापन, उपसंहार आदि । शांतियज्ञ का अर्थ – प्रशम भावों सहित संसार, शरीर एवं भागों से विरक्त होकर जिनेन्द्रोपासना करना है । प्रतिदिन पूजन के समापन में समस्त पूजनों के समावेशित महार्घ्य पढ़ते हैं । पश्चात् शांतिभक्ति और समाधिभक्ति पढ़ते हैं । उसीप्रकार विशेष पूजन विधानों के समापन में शांतियज्ञ करते हैं। शांतियज्ञ में उच्चरित मंत्रों मे जिनेन्द्राराधना ही समाविष्ट है । वह आर्ष यज्ञ निश्चय-व्यवहार अपेक्षा दो प्रकार का है । निश्चययज्ञ की प्रधानता मुनियों के होती है और व्यवहारयज्ञ की प्रधानता गृहस्थों के होती है ।

निश्चययज्ञ :- जो यज्वन, यज्ञ, गजि, यजुस और यज्ञफल के विकल्परहित निरालम्बनपूर्वक शुद्ध भावों द्वारा निरुपाधित सहज स्वभाव का यज्ञ/पूजा/उपासना करता है उसे निश्चययज्ञ है ।

व्यवहारयज्ञ :- अपने भावों की परम शुद्धता को पाने की अभिलाषा से शुद्ध प्रासुक द्रव्यों के द्वारा जिनस्तवन, जिनबिम्बदर्शन आदि के आलम्बन से अर्हंतादिकों का पूजन करना तथा एकाग्रचित्त होकर अपने समस्त पुण्य को इस दैदीप्यमान केवलज्ञान रूपी अग्नि में हवन करना व्यवहारयज्ञ है ।

अत: ज्ञानी पुरुष निश्चय और व्यवहारयज्ञ दोनों को यथावत् करता हुआ संसार समुद्र को पार कर परिनिर्वाण पद को प्राप्त करता है ।

मण्डप में वेदी के सन्मुख चौकोर, गोल और त्रिकोण ऐसे थाली में चन्दन से स्वस्तिक व ॐ बनावें । समापन विधि में बैठनेवालों की संख्या अधिक हो तो अलग से थाली रख लेना चाहिये । प्रारम्भ में सब लोग अपने स्थान पर खड़े होकर मंगलाष्टक पढ़ते हुए पुष्पक्षेपण करें ।

निम्न मन्त्र पढ़कर भूमि में पुष्पक्षेपण करें ।

'ॐ ह्रीं क्ष्वीं भू: स्वाहा' ।

निम्न मंत्र पढ़कर भूमि पर जल सींचे–

ॐ ह्रीं मेघकुमार धरां प्रक्षालय प्रक्षालय अं हं सं तं पं स्वं झं यं क्षः फट् स्वाहा–

निम्न पढ़कर पश्चिम में पीठ स्थापन करें–

'ॐ ह्रीं अर्हं क्ष्ं वं वं श्री पीठस्थापनं करोमीति स्वाहा' ।

निम्न मन्त्र पढ़कर पीठ पर विनायक यन्त्र विराजमान करे। तदनन्तर नीचे लिखे मन्त्रों से यन्त्र की पूजा करें व अर्घ्य चढ़ावें–

'ॐ ह्रीं श्री क्लीं ऐं अर्हं जगतां सर्वशान्तिं कुर्वन्तु श्रीपीठयन्त्रस्थापनं करोमीति स्वाहा'।

निम्न मन्त्र पढ़कर धर्मचक्र को अर्घ्य दें–

ॐ ह्रीं अर्हं नमः परमेष्ठिभ्यः स्वाहा।

ॐ ह्रीं नमः परमात्मेभ्यः स्वाहा।

ॐ ह्रीं अर्हं नमोऽनादिनिधनेभ्य स्वाहा।

ॐ ह्रीं अर्हं नमो नृसुरासुरपूजितेभ्यः स्वाहा।

ॐ ह्रीं अर्हं नमोऽनन्तदर्शनेभ्यः स्वाहा।

ॐ ह्रीं अर्हं नमोऽनन्तवीर्येभ्यः स्वाहा।

ॐ ह्रीं अर्हं नमोऽनन्तसुखेभ्यः स्वाहा।

ॐ ह्रीं धर्मचक्रायाप्रतिहततेजसे स्वाहा

निम्न मंत्र पढ़कर छत्रत्रय को अर्घ्य देवें–

ॐ ह्रीं श्वेतछत्रत्रयाश्रिये स्वाहा।

निम्न मंत्र पढ़कर सरस्वती का आह्वान करें–

ॐ ह्रीं श्री क्लीं ऐं सौ हौ सर्वशास्त्रप्रकाशिनि वद वद वाग्वादिनि अवतर अवतर, तिष्ठ तिष्ठ सन्निहिता भव भव वषट्।

निम्न मंत्र पढ़कर सरस्वती/जिनवाणी को अर्घ्य देवें–

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भूतस्याद्वादनयगर्भितद्वादशांगश्रुतज्ञानायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निम्न मन्त्र पढ़कर गुरु को अर्घ्य चढ़ावें–

ॐ ह्रीं सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रादिगुणविराजमानाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निम्न मन्त्र पढ़कर चावलों पर जल से भरा हुआ एवं श्रीफल आदि से सुशोभित कलश स्थापित करें–

ॐ ह्रीं स्वस्तिविधानाय पुण्याहवाचनार्थञ्च कलशं स्थापयामीति स्वाहा।

निम्न मन्त्र पढकर कलश में थोड़ा प्रासुक जल डालें–

ॐ ह्रीं ह्रों ह्रूं ह्रौं ह्रः नमोऽर्हते भगवते पद्ममहापद्मतिगिंच्छ-केसरिपुण्डरीकमहापुण्डरीकगंगासिन्धुरोहिद्रोहितास्याहरिद्धरिकान्तासीता-सीतोदानारीनरकान्तासुवर्णरूप्यकूलारक्तारक्तोदापयोधिशुद्धजलसुवर्णघट-प्रक्षालितवररत्नगन्धाक्षतपुष्पोर्जिता-मादकं पवित्रं कुरु कुरु झं झं झ्रौं झ्रौं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं द्रां द्रां द्रीं द्रीं हं सः स्वाहा।

निम्न मंत्र पढकर क्रमशः जल आदि आठ द्रव्य चढ़ावें –

ॐ ह्रीं नीरजसे नमः (जलम्)

ॐ ह्रीं शीलगन्धाय नमः (चन्दनम्)

ॐ ह्रीं अक्षताय नमः (अक्षतम्)

ॐ ह्रीं विमलाय नमः (पुष्पम्)

ॐ ह्रीं दर्पमथनाय नमः (नैवेद्यम्)

ॐ ह्रीं ज्ञानद्योतनाय नमः (दीपम्)

ॐ ह्रीं श्रुतधूपाय नमः (धूपम्)

ॐ ह्रीं अभीष्टफलदाय नमः (फलम्)

ॐ ह्रीं परमसिद्धाय नमः (अर्घ्यम्)

निम्नलिखित मन्त्रों को पढते हुए थाली में पुष्प क्षेपण करें -

ॐ ह्रीं अर्हद्भ्यः स्वाहा। ॐ ह्रीं सिद्धेभ्यः स्वाहा। ॐ ह्रीं सूरिभ्यः स्वाहा। ॐ ह्रीं पाठकेभ्यः स्वाहा। ॐ ह्रीं साधुभ्यः स्वाहा। ॐ ह्रीं जिनधर्मेभ्यः स्वाहा। ॐ ह्रीं जिनागमेभ्यः स्वाहा। ॐ ह्रीं जिनबिम्बेभ्यः स्वाहा। ॐ ह्रीं जिनचैत्यालयेभ्यः स्वाहा। ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्राय स्वाहा।

निम्नलिखित प्रत्येक मन्त्र के बाद 'स्वाहा' शब्द का स्पष्ट उच्चारण करते हुए प्रत्येक मन्त्र पर अर्घ्य या पुष्प स्थंडिल (चबूतरे) पर रखी थाली में चढ़ावें–

पीठिकामन्त्रा :

ॐ सत्यजाताय नमः स्वाहा। ॐ अर्हज्जाताय नमः स्वाहा। ॐ अनुपमजाताय नमः स्वाहा। ॐ स्वप्रधानाय नमः स्वाहा। ॐ अचलाय नमः स्वाहा। ॐ अक्षयाय नमः स्वाहा। ॐ अव्याबाधाय नमः स्वाहा। ॐ अनन्तज्ञानाय नमः स्वाहा। ॐ अनन्तदर्शनाय नमः स्वाहा। ॐ अनन्तवीर्याय नमः स्वाहा। ॐ अनन्तसुखाय नमः स्वाहा। ॐ नीरजसे नमः स्वाहा। ॐ निर्मलाय नमः स्वाहा। ॐ अच्छेद्याय नमः स्वाहा। ॐ अभेद्याय नमः स्वाहा। ॐ अजराय नमः स्वाहा। ॐ अमराय नमः स्वाहा। ॐ अप्रमेयाय नमः स्वाहा। ॐ अगर्भवासाय नमः स्वाहा। ॐ अक्षोभाय

नमः स्वाहा। ॐ अविलीनाय नमः स्वाहा। ॐ परमघनाय नमः स्वाहा। ॐ परमकाष्ठायोगरूपाय नमः स्वाहा। ॐ लोकाग्रनिवासिने नमः स्वाहा। ॐ परमसिद्धेभ्यो नमः स्वाहा। ॐ अर्हत्सिद्धेभ्यो नम. स्वाहा। ॐ केवलिसिद्धेभ्यो नमः स्वाहा। ॐ अन्तःकृतसिद्धेभ्यो नमः स्वाहा। ॐ परम्परासिद्धेभ्यो नमः स्वाहा। ॐ अनादिपरम्परासिद्धेभ्यो नमः स्वाहा। ॐ अनाद्यनुपमसिद्धेभ्यो नमः स्वाहा। ॐ सम्यग्दृष्टि आसन्नभव्यनिर्वाणपूजार्ह अग्नीन्द्राय स्वाहा।

सेवाफलं षट्परमस्थानं भवतु अपमृत्युविनाशनं भवतु समाधिमरणं भवतु स्वाहा।

यह काम्यमन्त्र पढ़कर प्रतिष्ठाचार्य इन्द्र-इन्द्राणियों पर पुष्प फैंके अथवा जल के छींटे देवें। इसीप्रकार प्रत्येक मन्त्र के पश्चात करें।

जातिमन्त्रा :

ॐ सत्यजन्मनः शरणं प्रपद्ये स्वाहा। ॐ अर्हज्जन्मनः शरणं प्रपद्ये स्वाहा। ॐ अर्हन्मातुः शरणं प्रपद्ये स्वाहा। ॐ अर्हत्सुतस्य शरणं प्रपद्ये स्वाहा। ॐ अनादिगमनस्य शरणं प्रपद्ये स्वाहा। ॐ अनुपमजन्मनः शरणं प्रपद्ये स्वाहा। ॐ रत्नत्रयस्य शरणं प्रपद्ये स्वाहा। ॐ सम्यग्दृष्टये, सम्यग्दृष्टये, ज्ञानमूर्तये सरस्वत्यै सरस्वत्यै स्वाहा।

सेवाफलं षट्परमस्थानं भवतु, अपमृत्युविनाशनं भवतु, समाधिमरणं भवतु स्वाहा।

निस्तारकमन्त्रा :

ॐ सत्यजाताय स्वाहा। ॐ अर्हज्जाताय स्वाहा। ॐ षटकर्मणे स्वाहा। ॐ ग्रामपतये स्वाहा। ॐ अनादिश्रोत्रियाय स्वाहा। ॐ स्नातकाय स्वाहा। ॐ श्रावकाय स्वाहा। ॐ देवब्राह्मणाय स्वाहा। ॐ सुब्राह्मणाय स्वाहा। ॐ अनुपमाय स्वाहा। ॐ सम्यग्दृष्टये निधिपतये निधिपतये वैश्रवणाय वैश्रवणाय स्वाहा।

सेवाफलं षट्परमस्थानं भवतु, अपमृत्युविनाशनं भवतु, समाधिमरणं भवतु स्वाहा।

ऋषिमन्त्रा :

ॐ सत्यजाताय नमः स्वाहा। ॐ अर्हज्जाताय नमः स्वाहा। ॐ निर्ग्रन्थाय नमः स्वाहा। ॐ वीतरागाय नमः स्वाहा। ॐ महाव्रताय नमः स्वाहा। ॐ त्रिगुप्ताय नमः स्वाहा। ॐ महायोगाय नमः स्वाहा। ॐ विविधयोगाय नमः स्वाहा। ॐ विवर्द्धये नमः स्वाहा। ॐ अंगधराय नमः स्वाहा। ॐ पूर्वधराय नमः स्वाहा। ॐ गणधराय नमः स्वाहा। ॐ परमर्षिभ्यो नमः स्वाहा। ॐ अनुपमजाताय नमः स्वाहा। ॐ सम्यग्दृष्टये सम्यग्दृष्टये भूपतये नगरपतये नगरपतये कालश्रमणाय कालश्रमणाय स्वाहा।

सेवाफलं षट्परमस्थानं भवतु, अपमृत्युविनाशनं भवतु, समाधिमरणं भवतु स्वाहा।

सुरेन्द्रमन्त्रा :

ॐ सत्यजाताय स्वाहा। ॐ अर्हज्जाताय स्वाहा। ॐ दिव्यजाताय स्वाहा। ॐ दिव्यार्चिजाताय स्वाहा। ॐ नेमिनाथाय स्वाहा। ॐ सौधर्माय स्वाहा। ॐ कल्पाधिपतये स्वाहा। ॐ अनुचराय स्वाहा। ॐ परम्परेन्द्राय स्वाहा। ॐ अहमिन्द्राय स्वाहा। ॐ परमार्हते स्वाहा। ॐ अनुपमाय स्वाहा। ॐ सम्यगृष्टये सम्यग्दृष्टये कल्पपतये कल्पपतये दिव्यमूर्तये वज्रनामने स्वाहा।

सेवाफलं षट्परमस्थानं भवतु, अपमृत्युविनाशनं भवतु, समाधिमरणं भवतु स्वाहा।

परमराजादिमन्त्रा :

ॐ सत्यजाताय स्वाहा। ॐ अर्हज्जाताय स्वाहा। ॐ अनुपमेन्द्राय स्वाहा। ॐ विजयार्च्यजाताय स्वाहा। ॐ नेमिनाथाय स्वाहा। ॐ परमजाताय स्वाहा। ॐ परमार्हते स्वाहा। ॐ सम्यग्दृष्टये सम्यग्दृष्टये उग्रतेजसे उग्रतेजसे दिशांजननेमिविजयाय स्वाहा।

सेवाफलं षट्परमस्थानं भवतु, अपमृत्युविनाशनं भवतु समाधिमरणं भवतु स्वाहा।

परमेष्ठिमन्त्रा :

ॐ सत्यजाताय नमः स्वाहा। ॐ अर्हज्जाताय नमः स्वाहा। ॐ परमजाताय नमः स्वाहा। ॐ परमार्हते नमः स्वाहा। ॐ परमरूपाय नमः स्वाहा। ॐ परमतेजसे नमः स्वाहा। ॐ परमगुणाय नमः स्वाहा। ॐ परमस्थानाय नमः स्वाहा। ॐ परमयोगिने नमः स्वाहा। ॐ परमभाग्याय नमः स्वाहा। ॐ परमर्द्धये नमः स्वाहा। ॐ परमप्रसादाय नमः स्वाहा। ॐ परमविज्ञानाय नमः स्वाहा। ॐ परमदर्शनाय नमः स्वाहा। ॐ परमवीर्याय नमः स्वाहा। ॐ परमसुखाय नमः स्वाहा। ॐ परमसर्वज्ञाय नमः स्वाहा। ॐ अर्हते नमः स्वाहा। ॐ परमेष्ठिने नमः स्वाहा। ॐ परमनेत्रे नमः स्वाहा। ॐ सम्यग्दृष्टये सम्यग्दृष्टये त्रैलोक्यविजयाय त्रैलोक्यविजयाय धर्ममूर्तये धर्ममूर्तये धर्मनेमे स्वाहा।

सेवाफलं षट्परमस्थानं भवतु, अपमृत्युविनाशनं भवतु, समाधिमरणं भवतु स्वाहा।

तदनन्तर जिस मन्त्र का जितना जाप किया हो, उसकी दशांश पुष्पों द्वारा आहूतियाँ देना चाहिए। यह मन्त्र प्रतिष्ठाचार्य मन में बोलकर स्वाहा शब्द का उच्चारण करें और जाप में बैठे हुए सब महाशय स्वाहा बोलकर पुष्प क्षेपण करें।

समापन विधि समाप्त होने पर जो घट स्थापित किया था, उसे हाथ में लेकर इन्द्र बृहच्छान्तिधारा दें।

बृहच्छान्तिमन्त्राः

ॐ णमो अरहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं, णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं। चत्तारि मंगलं-अरहंता मंगलं, सिद्धा मंगलं, साहू मंगलं, केवलिपण्णत्तो धम्मो मंगलं। चत्तारि लोगुत्तमा, अरहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा, साहू लोगूत्तमा, केवलिपण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमो। चत्तारि शरणं पव्वज्जामि-अरहंते शरणं पव्वज्जामि, सिद्धे शरणं पव्वज्जामि, साहू शरणं पव्वज्जामि, केवलिपण्णतं धम्मं शरणं पव्वज्जामि ह्रौं, अनादिसिद्धमहामंत्रपूजनभक्तिप्रसादात् सर्वशान्तिर्भवतु स्वाहा।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं अ सि आ उ सा अनाहतविद्यायै णमो अरहंताणं ह्रौं सर्वशान्तिर्भवतु स्वाहा।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं वं मं हं सं तं पं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं झं झं झ्वीं झ्वीं क्ष्वीं क्ष्वीं द्रां द्रां द्रीं द्रीं नमोऽर्हते भगवते स्वाहा।

ॐ ह्रीं श्री सिद्धचक्राधिपतये अष्टगुणसमृद्धाय फट् स्वाहा।

ॐ ह्रीं अर्हन्मुखकमलनिवासिनि पापमलक्षयंकरि श्रुतज्वालासहस्रप्रज्वलिते सरस्वति तव भक्तिप्रसादात् मम पापविनाशनं भवतु क्षां क्षीं क्षं क्षः क्षीरवरधवले अमृतसम्भवे बं बं हू हू स्वाहा। सरस्वतीभक्तिप्रसादात् सुज्ञानं भवतु।

ॐ णमो भयवदो वड्ढमाणरिसहस्स जस्स चक्कं जलं तं गच्छइ आयासं पायलं भूयलं जुए वा विवादे वा रणांगणे वा थंभणे वा मोहणे वा सव्वजीवसताणं अपराजिदो भवदु मे रक्ख रक्ख स्वाहा। वर्द्धमानमन्त्रेण सर्वरक्षा भवतु।

ॐ क्षीं क्षां क्षं क्षें क्षैं क्षों क्षौं क्षं क्षः नमोऽर्हते सर्वं रक्ष रक्ष हूं फट् स्वाहा। सर्वरक्षा भवतु।

ॐ उसहाइजिणं पणमामि सया अमलो विमलो विरजो वरया, कल्पतरु सव्वकामदुहा माम् रक्ख सहापुरुविज्जणिही।

अट्ठेव य अट्ठसया अठसहस्सा य अठकोडीओ।
रक्खं तुम्म सरीरं देवासुरपणमिया सिद्धा॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हं नमः स्वाहा स्वधा। ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा नमः एतन्मन्त्रप्रसादात् सर्वभूतव्यन्तरादिबाधाविनाशनं भवतु। ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं महालक्ष्म्यै नमः। ॐ नमोऽर्हते सर्वं रक्ष हूं फट् स्वाहा। ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः सर्वदिशागतविघ्नविनाशनं भवतु। ॐ क्षां क्षीं क्षूं क्षौं क्षः सर्वदिशागतविघ्नविनाशनं भवतु।

ॐ सम्प्रतिकालश्रेयस्करस्वर्गावतरण-जन्माभिषेक-परिनिष्क्रमण-केवलज्ञान निर्वाणकल्याणविभूषितमहाभ्युदयाः श्रीऋषभाजित-सम्भवाभिनन्दन-समतिपद्मप्रभ- सुपार्श्व-चन्द्रप्रभ-पुष्पदन्त-शीतल-श्रेयो-वासुपूज्य-विमलानंत-धर्म-शान्ति-कुन्थ्वर-मल्लि-मुनिसुव्रत-नमि-नेमि-पार्श्व-वर्धमान-परमदेवपूजनभक्ति-प्रसादात् सर्वशान्तिर्भवतु तुष्टिः पुष्टिश्च भवतु।

ॐ ह्रीं लोकोद्योतनकरा अतीतकालसंजाता निर्वाणसागर महासाधु-विमलप्रभ-शुद्धाभ-श्रीधर-सुदत्तामलप्रभोद्धाराग्नि-सन्मति-शिव-कुसुमांजलि-शिवगणोत्साह-ज्ञानेश्वर-परमेश्वर-विमलेश्वर-यशोधर-कृष्णज्ञानमति-शुद्धमति-श्रीभद्रशान्ताश्चेति चतुर्विंशतिभूतपरमदेवपूजनभक्तिप्रसादात्सर्वशान्तिर्भवतु।

ॐ भविष्यत्कालाभ्युदयप्रभवाः महापद्म-देव-सुप्रभ-स्वयम्प्रभ-सर्वायुध-नयनदेवोयदेव-प्रभादेवोदंकदेव-प्रश्नकीर्ति-जयकीर्ति-पूर्णवृद्धि-निष्कषाय-विमल-प्रभ-वहल-निर्मल-चित्रगुप्त-स्वयम्भू-कन्दर्प-जयनाथ-विमलनाथ-दिव्यवागनन्तवी-र्याश्चेति चतुर्विंशतिभविष्यत्परमदेवपूजनभक्तिप्रसादात् सर्वशान्तिर्भवतु।

ॐ त्रिकालवर्तिपरमधर्माभ्युदयाः सीमन्धर-युगमंधर-बाहु-सुबाहु-संजातक-स्वयम्प्रभ-वज्रधर-चन्द्रानन-चन्द्रबाहु-भुजंगेश्वर-नेमिप्रभु-वीरसेन-महाभद्रजयदेव-अजितवीर्याश्चेति पंचविदेहक्षेत्रविद्यमानविंशतिपरमदेव-पूजनभक्तिप्रसादात्सर्व-शान्तिर्भवतु तुष्टि पुष्टिश्च भवतु।

पूजिता भरताद्यैश्च भूपेन्द्रैर्भूरिभूतिभिः।
चतुर्विधस्य संघस्य शान्ति कुर्वन्तु शाश्वतीम्॥ १॥

विघ्नौघाः प्रलयं यान्ति शाकिनीभूतपन्नगाः।
विषं निर्विषतां याति स्तूयमाने जिनेश्वरे॥ २॥

दुर्भिक्षादि महादोष निवारणपरम्पराः।
कुर्वन्तु जगतः शान्ति जिन-श्रुत-मुनीश्वराः॥ ३॥

यत्संस्मरणमात्रेण विघ्नाः नश्यन्ति मूलतः।
कुर्वन्तु जगतः शान्ति जिन-श्रुत-मुनीश्वराः॥ ४॥

पदार्थान् लभंते प्राणी यत्प्रसादात्प्रसादतः।
कुर्वन्तु जगतः शान्ति जिन-श्रुत-मुनीश्वरा॥ ५॥

ॐ ह्रीं णमो अरहंताणं णमो जिणाणं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झौं झौं स्वाहा। ऋद्धिमन्त्रभक्तिप्रसादात्सर्वेषां शान्तिर्भवतु। विसूचिकाज्वरादिरोगविनाशनं भवतु। ॐ ह्रीं अर्हं णमो ओहिजिणाणं परमोहिजिणाणं शिरोरोगविनाशनं भवतु। ॐ ह्रीं अर्हं णमो सव्वोहिजिणाणं अक्षिरोगविनाशं भवतु। ओं ह्रीं अर्हं णमो अणंतोहिजिणाणं कर्णरोगविनाशनं भवतु। ॐ ह्रीं अर्हं णमो कोट्ठबुद्धीणं बीजबुद्धीणं ममात्मनि विवेकज्ञानं भवतु। ॐ ह्रीं अर्हं णमो पदानुसारीणं परस्परविरोधविनाशनं भवतु। ॐ ह्रीं अर्हं णमो संभिण्णसोदाराणं श्वासरोगविनाशनं भवतु। ॐ ह्रीं अर्हं णमो पत्तेयबुद्धाणं प्रतिवादिविद्याविनाशनं भवतु। ॐ ह्रीं अर्हं णमो सयंबुद्धाणं कवित्वं पाण्डित्यं च भवतु। ॐ ह्रीं अर्हं णमो बोहियबुद्धाणं अन्यगृहीतं श्रतुज्ञानं भवतु। ॐ ह्रीं अर्हं णमो उजुमदीणं सर्वशान्तिर्भवतु। ॐ ह्रीं अर्हं णमो विउलमदीणं बहुश्रुतज्ञानं भवतु। ॐ ह्रीं अर्हं णमो दसपुव्वीण सर्ववेदिनो भवन्तु। ॐ ह्रीं अर्हं णमो चउदसपुव्वीणं स्वसमय-परसमयवेदिनो भवन्तु। ॐ ह्रीं अर्हं णमो अट्ठंगमहाणिमित्तकुसलाणं जीवितमरणादिज्ञानं भवन्तु। ॐ ह्रीं अर्हं णमो वियणयड्ढिपत्ताणं कामितवस्तुप्राप्तिर्भवतु। ॐ ह्रीं अर्हं णमो विज्जाहराणं उपदेशप्रदेशमात्रज्ञानं भवतु। ओं ह्रीं अर्हं णमो चारणाणं नष्टपदार्थचिन्ताज्ञानं भवतु।ॐ ह्रीं अर्हं णमो पण्णसमणाणं आयुष्यावसानज्ञानं भवन्तु। ॐ ह्रीं अर्हं णमो आगासगामिणं अन्तरीक्षगमनं भवतु। ॐ ह्रीं अर्हं णमो आसीविसाणं विद्वेषप्रतिहतं भवतु। ॐ ह्रीं अर्हं णमो दिट्ठीविसाणं स्थावरजंगमकृतविघ्नविनाशानं भवतु। ॐ ह्रीं अर्हं णमो उग्गतवाणं वचःस्तम्भनं भवतु। ॐ ह्रीं अर्हं णमो तत्ततवाणं अग्निस्तम्भनं भवतु। ॐ ह्रीं अर्हं णमो महातवाणं जलस्तम्भनं भवतु। ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोरतवाणं विषरोगादिविनाशनं भवतु। ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोरगुणाणं दुष्टमृगादिभयविनाशो भवतु। ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोरगुणपरक्कमाणं लूतागर्भान्तिकावर्लिविनाशो भवतु। ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोरगुणचारिणं भूतप्रेतादिभयविनाशो भवतु। ॐ ह्रीं अर्हं णमो खिल्लोसहिपत्ताणं सर्वापमृत्युविनाशो भवतु। ॐ ह्रीं अर्हं णमो विप्पोसहियपत्ताणं गजमारीविनाशनं भवतु। ॐ ह्रीं अर्हं णमो सवव्वीसहिपत्ताणं मनुष्यामरोपसर्गविनाशो भवतु। ॐ ह्रीं अर्हं णमो मणबलीणं वचबलीणं कायबलीणं अपस्मारिगोअजमारीविनाशनं भवतु। ॐ ह्रीं अर्हं णमो खीरसवीणं

अष्टादशकुष्ठगण्डमालादिकविनाशनं भवतु। ॐ ह्रीं अर्हं णमो सप्पिसवीणं सर्वव्याधि-विनाशनं भवतु। ॐ ह्रीं अर्हं णमो महुरसवीणं समस्तोपसर्गविनाशनं भवतु। ॐ ह्रीं अर्हं णमो अक्खीणमहाणसाणं अक्षीणऋद्धिर्भवतु। ॐ ह्रीं अर्हं णमो वड्ढमाणाणं राजपुरुषादिभयविनाशनं भवतु। ॐ ह्रीं अर्हं णमो अभिषसवीणं सव्वसाहूणं सर्वशान्तिर्भवतु।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो भयवदो महदि महावीरवड्ढमाणबुद्धरिसीणं समाधिसुख भवतु चतु:षष्टिऋद्धिमन्त्रपूजनभक्तिप्रसादात् चतु:संघानां सर्वशान्तिर्भवतु तुष्टि: पुष्टिश्च भवतु धनधान्यसमृद्धिर्भवतु रत्नत्रयं भवतु।

ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते श्रीमत्पार्श्वतीर्थंकराय श्रीमद्रत्नत्रयरूपाय दिव्यतेजोमूर्तये प्रभामण्डलमण्डिताय द्वादशगणसहिताय अनन्तचतुष्टयसहिताय समवसरणकेवलज्ञानलक्ष्मीशोभिताय अष्टादशदोषरहिताय षट्चत्वारिंशद्गुण-संयुक्ताय परमेष्ठिपवित्राय सम्यग्ज्ञानाय स्वयम्भुवे सिद्धाय बुद्धाय परमात्मने परमसुखाय त्रैलोक्यमहिताय अनन्तसंसारचक्रपरिमर्दनाय अनन्तज्ञानदर्शनवीर्य-सुखास्पदाय त्रैलोक्यवंशकराय सत्यब्रह्मणे उपसर्गविनाशकराय घातिकर्मक्षयंकराय अजराय अभवाय ऋष्यार्यिकाश्रावकश्राविकाप्रमुखचतु:संघोपर्सविनाशकाय अघातिकर्मविनाशकाय देवाधिदेवाय नमो नम:। पूर्वोक्तमन्त्राणां पूजन-भक्तिप्रसादात् ऋष्यार्यिका-श्रावक-श्राविकाणां सर्वक्रोधमानमाया-लोभहास्यरत्यरति-शोकभय-जुगुप्सास्त्रीपुरुषनपुंसकवेदविनाशनं भवतु। मिथ्यात्वरागद्वेषमोह-मत्सरासूयेर्ष्याविभाव-विकार-विषाद-प्रमाद-कषाय-विकथा-विनाशनं भवतु। सर्वपंचेन्द्रियविषयेच्छास्नेहाशारौद्राकुलताव्याधिदीनतापापदोष विरोधविनाशनं भवतु।सर्वममकरी विकल्प निद्रातृष्णाधिताप दु:ख वैराहंकार संकल्प विमशो भवतु। सर्वाहारभयमैथुनपरिग्रहसंज्ञाविनाशो भवतु। सर्वोपसर्गाविघ्नराजचोरदुष्टमृगेहलोकपरलोकाकस्मान्मरणवेदनाशरणात्राण भयविनाशो भवतु। सर्वक्षयरोगकुष्टरोगज्वरातिसारादिरोगविनाशो भवतु। सर्वनरगजगोमहिषधान्यवृक्षगुल्मपत्रफलमारीराष्ट्रदेशमारीविश्वमारीविनाशो भवतु। सर्वमोहनीयज्ञानावरणीयदर्शनावरणीयवेदनीयनामगोत्रायुरन्तरायकर्मविनाशनं भवतु।

* * *

पुण्याहवाचन

शान्तियज्ञ में बैठे हुए महानुभावों द्वारा शान्तिधारा कराते हुए निम्नानुसार पुण्याहवाचन करावें :-

ॐ पुण्याहं पुण्याहं लोकोद्योतनकरा अतीतकालसंजाता निर्वाण-सागरप्रभृतयश्चतुर्विंशतिपरमदेवाः वः प्रीयन्ताम् प्रीयन्ताम् । (धारा)

ॐ सम्प्रतिकालसंभवा वृषभादिवीरान्ताश्चतुर्विंशतिपरमजिनेन्द्राः वः प्रीयन्ताम् प्रीयन्ताम् । (धारा)

ॐ भविष्यत्कालाभ्युदयप्रभवा महापद्मादिचतुर्विंशतिभविष्यत्परमदेवाः वः प्रीयन्ताम् प्रीयन्ताम् । (धारा)

ॐ विंशति परमदेवाः वः प्रीयन्ताम् प्रीयन्ताम् । (धारा)

ॐ वृषभसेनादिगणधरदेवा वः प्रीयन्ताम् प्रीयन्ताम् । (धारा)

ॐ सप्तर्द्धिविशोभिताः कुन्दकुन्दाद्यनेकदिगम्बरसाधुचरणाः वः प्रीयन्तां प्रीयन्ताम् । (धारा)

इह वान्यनगरग्रामदेवतामनुजाः सर्वे गुरुभक्ताः जिनधर्मपरायणा भवन्तु । दानतपोवीर्यानुष्ठानं नित्यमेवास्तु । सर्वजिनधर्मभक्तानां धनधान्यैश्वर्यबलद्युतियशः प्रमोदोत्सवाः प्रवर्तन्ताम् ।

तुष्टिरस्तु, पुष्टिरस्तु, वृद्धिरस्तु, कल्याणमस्तु, अविघ्नमस्तु, आयुष्यमस्तु, आरोग्यमस्तु, कर्मसिद्धिरस्तु, इष्टसम्पत्तिरस्तु, काममांगल्योत्सवाः सन्तु, पापानि शाम्यन्तु, घोराणि शाम्यन्तु, पुण्यं वर्धताम्, धर्मोवर्धताम्, श्रीवर्धताम्, कुलं गोत्रं चाभिवर्धताम्, स्वस्ति भद्रं चास्तु, आयुष्यमस्तु, क्ष्वीं क्ष्वीं हं सः स्वाहा। श्रीमज्जिनेन्द्रचरणारविन्देष्वानन्दभक्तिः सदास्तु ।

तदनन्तर शान्तिपाठ और विसर्जनपाठ पढ़ें ।

भजन

ऊँचे ऊँचे शिखरों वाले रे , यह तीरथ हमारा ।
तीरथ हमारा हमें लागे प्यारा ॥ टेक ॥
श्री जिनवर से भेंट करावें ।
जग को मुक्ति मार्ग दिखावें ॥
मोह का नाश करावे रे, यह तीरथ हमारा ॥ १ ॥
जड़-चेतन को भिन्न बतावे ।
चेतन की महिमा दरशावे ॥
भेद-विज्ञान करावे रे, यह तीरथ हमारा ॥ २ ॥

विभिन्न अवसरों पर उपयोगी मन्त्रों की सूची

१. अमृत स्नान का मन्त्र :-

ॐ अमृते अमृतोद्भवे अमृतवर्षिणि अमृतं द्रावय द्रावय सं सं क्लीं क्लीं ब्लूं ब्लूं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय हं सं क्ष्वीं क्ष्वीं हं सं स्वाहा।

२. यन्त्राभिषेक का मन्त्र :-

ॐ ह्रीं भूर्भुव : स्वरिह विघ्नौघवारकं यन्त्रं वयं परिषेचयामः ।

३. मंगल कलश स्थापना का मन्त्र :-

ॐ अद्य भगवतो महापुरुषस्य श्रीमदादि ब्रह्मणो मतेऽस्मिन्......मासे......पक्षे......तिथौ...... वासरे......वर्षे इह......नगरे......मन्दिरे...... कार्यस्य निर्विघ्नसमाप्त्यर्थं मण्डपभूमिशुद्ध्यर्थं पात्रशुद्ध्यर्थं शान्त्यर्थं पुण्याहवाचनार्थं पंचरत्न-गंधपुष्पाक्षतादिबीजपूर शोभितमंगल कलश स्थापनं करोम्यहम् क्ष्वीं क्ष्वीं हं सः स्वाहा।

४. रक्षासूत्र बांधने का मन्त्र :-

ॐ नमोऽर्हते सर्वं रक्ष रक्ष हूं फट् स्वाहा।

५. यज्ञोपवीत धारण करने का मन्त्र :-

ॐ नमः परमशान्ताय शान्तिकराय पवित्रीकरणाय अहं रत्नत्रयस्वरूपं यज्ञोपवीतं दधामि मम गात्रं पवित्रं भवतु अर्हं नमः स्वाहा ।

६. जाप्य संकल्प का मन्त्र :-

"ॐ जम्बूद्वीपे भरतक्षेत्रे आर्यखण्डे.....देशे......प्रान्ते......नगरे......ऋतौ...... मासे......तिथौ......संवत्सरे......जैन मन्दिरे......कार्यस्य निर्विघ्नसमाप्त्यर्थं...... इति प्रमितस्य जापस्य संकल्पं कुर्मः निर्विघ्नसमाप्तिर्भवतु अर्हं नमः स्वाहा।"

निम्न में से प्रसंगानुसार किसी एक मन्त्र के जाप का संकल्प करायें।

(१) *ॐ ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा सर्वशान्तिं कुरु कुरु स्वाहा।*

(२) *ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा सर्वशान्तिं कुरु कुरु स्वाहा।*

(३) *ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं अ सि आ उ सा अनाहतविद्यायै णमो अरहंताणं ह्रौं सर्व शान्तिं कुरु कुरु स्वाहा।*

(४) *ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा मध्यलोकसम्बन्धी चतुःशताष्टपंचाशज्जिन चैत्यचैत्यालयेभ्यो नमः ।*

(५) *ॐ ह्रीं मध्यलोकसंबंधी शाश्वतजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः ।*

मन्दिर शुद्धि, वेदी शुद्धि एवं कलश शुद्धि के ८१ मन्त्र

अनुष्टुप

कुम्भमिन्द्राह्वयं दिव्यमिन्द्रशस्त्रसमप्रभम्।
ऐन्द्रपुष्पैः समर्चामि नवार्हद्भवनोत्सवे ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं इन्द्रकलशेन मन्दिर (वेदिका /कलश जिसकी शुद्धि का प्रसंग हो तदनुसार मन्दिर/वेदिका/कलश शब्द का उच्चारण करें) शुद्धिं करोमीति स्वाहा ॥

अग्निज्वालासमानाभमग्न्याख्यं बहुलाक्षतैः।
पूजयामि जिनागारस्नानाय सुखहेतवे ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं अग्निकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा।

यमदण्डसमानाभमलौकिकमणि श्रितम्।
यमाख्ययमदिक्षालमान्यं संचर्चयेऽनघम् ॥ ३ ॥

ॐ ह्रीं यमककलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा।

नैऋत्याख्यं महाकुम्भं नेऋत्याधिपरक्षितम्।
संशब्दये जिनागारं स्नानाय मधुरस्तवैः ॥ ४ ॥

ॐ ह्रीं नैऋत्यकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा।

वरुणाख्यं घटं दिव्यं वरुणासुररक्षितम्।
संशब्दये जिनेन्द्रस्य वेश्मस्नानाय चम्पकैः ॥ ५ ॥

ॐ ह्रीं वरुणकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा।

पवनामरसंसेव्यं पवनामरसुरक्षितम्।
पवनाख्यं घटं नीर-गन्धप्रसूनशालिजैः ॥ ६ ॥

ॐ ह्रीं पवनकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा।

कुबेराख्यं घटं दिव्यं कुबेरगृहशोभितम्।
जिनवेश्मप्लवायात्र समाह्वये कदम्बकैः ॥ ७ ॥

ॐ ह्रीं कुबेरकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा।

ईशानाख्यमदाधारमीशादिदिग्विभासितम्।
ओं ह्रीं तिष्ठेद्विधानेन काश्मीरैस्तन्महे मुदा ॥ ८ ॥

ॐ ह्रीं ईशानकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा।

कुम्भं गारुन्मताह्वानं गरुन्मणिविनिर्मितम्।
सरसैर्दिव्यपूजार्घैः श्रये जैनमहोत्सवे ॥ ९ ॥

ॐ ह्रीं गारुन्मतकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा।

कलशं सुन्दराकारं वैडूर्यमणिनिर्मितम्।
दिव्यं मरकताभिख्यं स्थापयेऽर्हद्गृहोत्सवे ॥ १० ॥

ॐ ह्रीं मरकतमणिकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा।

गङ्गानिर्मितं कुम्भं गाङ्गेयाख्यं महोन्नतम्।
गङ्गावनरसापूर्णं पूजयेऽर्हत्सुवेश्मनि ॥ ११ ॥

ॐ ह्रीं गाङ्गेयकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा।

प्रतप्तहाटकैः स्पष्टं श्रीमद्धाटकसंज्ञकम्।
कुम्भं तीर्थजलापूर्णमर्चयामि यथाविधि ॥ १२ ॥

ॐ ह्रीं हाटककलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा।

हिरण्याख्यं महाकुम्भं हिरण्येन समर्जितम्।
लसत्पङ्कजमालाढयं यजेऽर्हत्सद्मसंमहे ॥ १३ ॥

ॐ ह्रीं हिरण्यकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा।

कनत्कनकसंकाशं नानामणिविमण्डितम्।
यजेऽर्हन्मन्दिरे कुम्भं शुद्धनीरसमाश्रितम् ॥ १४ ॥

ॐ ह्रीं कनककलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा।

अष्टापदाख्यं सत्कुम्भं हेमस्त्रक्प्रविराजितम्।
क्षीरोदवारिसंपूर्ण - मर्चयेऽर्हद्गृहोत्सवे ॥ १५ ॥

ॐ ह्रीं अष्टापदकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा।

महारजतनामाढ्यं महारजतनिर्मितम्।
तीर्थाम्बूपूरनिभृतमर्हद्गेहेऽर्चये मुदा ॥ १६ ॥

ॐ ह्रीं महारजतकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा।

आनन्ददायकं दिव्यं सानन्दाख्यं मनोहरम्।
नित्यं तीर्थजलैः पूर्णं स्थापये चैत्यसंमहे ॥ १७ ॥

ॐ ह्रीं आनन्दकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा ।

नन्दाख्यं नन्दनोत्कृष्टं प्रणन्दितगमं जितम् ।
कुम्भं समर्चये दिव्यं नानामणिविनिर्मितम् ॥ १८ ॥

ॐ ह्रीं नन्दकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा ।

कुम्भं विजयनामानं विजयोर्जितविश्वकम् ।
पूर्णं तीर्थजलैर्दिव्यमर्चयेऽर्हद्गृहोत्सवे ॥ १९ ॥

ॐ ह्रीं विजयकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा ।

नानातीर्थजलाकीर्णं कुम्भं त्वजितनामकम् ।
मानये विविधार्हाभिः स्मरजिनमन्दिरोत्सवे ॥ २० ॥

ॐ ह्रीं अजितकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा ।

अपराजितनामानं घटं काञ्चनसंनिभम् ।
संप्रतिष्ठापये चैत्यमहे जलसुमाक्षतैः ॥ २१ ॥

ॐ ह्रीं अपराजितकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा ।

महोदरं शतानन्दनामधेयं प्रभास्वरम् ।
कलशं कमलैः पूर्णं प्रार्चयेऽर्हद्गृहोत्सवे ॥ २२ ॥

ॐ ह्रीं शतानन्दकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा ॥

सह स्नानदसत्ख्यातिं पद्मादितीर्थसंभृतम् ।
पुष्पमालावृतं कुम्भं महाम्यर्हद्गृहक्षणे ॥ २३ ॥

ॐ ह्रीं स्नानदकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा ।

कुन्दाख्यं कुन्दपुष्पाढ्यं कुन्दस्रक्प्रविराजितम् ।
प्रार्चये कुन्दपुष्पौघैः कुम्भं भव्यजिनालये ॥ २४ ॥

ॐ ह्रीं कुन्दकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा ।

प्रस्फुटन्मल्लिका- पुष्पसमूहामोदवासितैः ।
नीरैः पूर्णं यजे हेममल्लिकाख्यं महाघटम् ॥ २५ ॥

ॐ ह्रीं मल्लिकाख्यकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा ।

अपूर्वचम्पकामोद- प्रवासितजलैर्भृतम् ।
चम्पकाख्यं घटं दिव्यं सूत्रितं सम्यगर्चये ॥ २६ ॥

ॐ ह्रीं चम्पककलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा।

कदम्बरजसाव्याप्तकदम्बाख्यं महाघटम्।
उपाक्षिप्तविधानेनार्चये जैनगृहालये ॥ २७ ॥

ॐ ह्रीं कदम्बकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा।

मन्दाराख्यं महाकुम्भं मन्दारस्त्रग्विभूषितम्।
दिव्यैरर्चामि मन्दारैः प्रत्यग्रजिनमन्दिरे ॥ २८ ॥

ॐ ह्रीं मन्दारकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा।

प्रत्यग्रपारिजातौघ समर्चितजलैर्भृतम्।
पारिजाताभिधं कुम्भमर्चयामि पयोभरैः ॥ २९ ॥

ॐ ह्रीं पारिजातकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा।

संतानपल्लवोत्फुल्लप्रसूननिकरार्चितम्।
संतानाख्यं जलैः पूर्णं संस्थाप्यापूजयेऽनिशम् ॥ ३० ॥

ॐ ह्रीं सन्तानकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा॥

हरिचन्दनपुष्पाभं हरिचन्दनसंज्ञकम्।
हरिचन्दनकर्पूरैः कुम्भं संप्रार्चये मुदा ॥ ३१ ॥

ॐ ह्रीं हरिचन्दनकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा।

कल्पवृक्षमहापुष्पप्रकरेण प्रसाधितम्।
कल्पवृक्षाभिधं कुम्भं पूजनाय प्रकल्पये ॥ ३२ ॥

ॐ ह्रीं कल्पवृक्षकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा।

जपाख्यं जगदाभाभं जपापुष्पाख्यबालकम्।
यजे जगत्प्रभोर्नव्यचैत्यस्नानाय केवलम् ॥ ३३ ॥

ॐ ह्रीं जपाकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा।

विशालाख्यं घटं दिव्यं विशालं रत्ननिर्मितम्।
विशालयामि पुष्पौघैः कुन्दमन्दारसंभवैः ॥ ३४ ॥

ॐ ह्रीं विशालकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा।

कुम्भं श्रीभद्रकुम्भाख्यं भद्रेभकुम्भसुन्दरम्।
पारिभद्रप्रसूनौघैः शोभयामि मनोहरैः ॥ ३५ ॥

ॐ ह्रीं भद्रकुम्भकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा।

घटं श्रीपूर्णकुम्भाख्यं पूर्णकुम्भमिवोन्नतम्।
क्षीरोदनीरसंपूर्णैः सुरत्नैर्वर्णयाम्यहम्॥ ३६ ॥

ॐ ह्रीं पूर्णकुम्भकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा।

जयन्तं सर्वकुम्भानां जयन्ताख्यं महाघटम्।
विकसज्जयपुष्पौघैः संयजामि तदुत्सवे ॥ ३७ ॥

ॐ ह्रीं जयन्तकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा।

वैजयन्ताभिधं कुम्भं सत्यं विजयदायकम्।
नव्यप्रासादचर्यार्थैश्चर्चयेऽहं बनादिभिः ॥ ३८ ॥

ॐ ह्रीं वैजयन्तकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा।

चन्द्रकान्तमहारत्नविनिर्मित- महाघटम्।
चन्द्राख्यं जगदुत्कृष्टं पूजये विविधार्चनैः ॥ ३९ ॥

ॐ ह्रीं चन्द्रकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा।

सूर्यकान्ताश्मसन्दोहविराजितं महोदयम्।
सूर्याख्यं कुम्भमुत्कृष्टैः प्रयजे तन्महार्घकैः ॥ ४० ॥

ॐ ह्रीं सूर्यकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा।

लोकालोकप्रविख्यातं लोकालोकविधानकम्।
कुम्भं संस्थापयाम्यत्र संपूज्य विविधार्चनैः ॥ ४१ ॥

ॐ ह्रीं लोकालोककलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा।

त्रिकूटनामकं कुम्भं त्रिकूटाद्रिसमानकम्।
समर्च्य विविधार्घ्येण स्थापये तन्महोत्सवे ॥ ४२ ॥

ॐ ह्रीं त्रिकूटकलशेन मन्दिर शुद्धिं करोमीति स्वाहा।

उदयाख्यं महाकुम्भमुदयाचलसन्निभम्।
स्थापयामि जिनागारेऽभिषवाय महोन्नतिम् ॥ ४३ ॥

ॐ ह्रीं उदयाचलकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा।

हिमवत्पर्वताभिख्यं हिमाचलसमुन्नतिम्।
कुटं निवेशयाम्यत्र स्नानाय नव्यवेश्मनः ॥ ४४ ॥

ॐ ह्रीं हिमाचलकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा ।

निषधाद्रिसमोत्सेधं निषधाख्यं घटं वरम् ।
संविधायार्हणां दिव्यां स्थापयेऽर्हन्महोत्सवे ॥ ४५ ॥

ॐ ह्रीं निषधकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा ।

माल्यवत्कुम्भनामानं नानामालविराजितम् ।
शुद्धस्फटिकसंकाशं कुम्भं तत्र निवेशये ॥ ४६ ॥

ॐ ह्रीं माल्यवत्कलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा ।

सत्पारिपात्रकोत्सेधं सत्पारिपात्रकाह्वयम् ।
कलशं श्रीजिनागारस्नानाय पूजयेऽनघम् ॥ ४७ ॥

ॐ ह्रीं सत्पात्रकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा ।

गन्धमादननामानं गन्धमादप्रपूरितम् ।
संपूजये जलाद्यर्घैर्जिनौकस्नानहेतवे ॥ ४८ ॥

ॐ ह्रीं गन्धमादनकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा ।

सुदर्शनसमाह्वानं सुदर्शनगरिष्ठकम् ।
कलशं विशुद्धये जैनवेश्मनः स्थापयेऽनघम् ॥ ४९ ॥

ॐ ह्रीं सुदर्शनकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा ।

कलशं मन्दराकारं मन्दराख्यं महोन्नतिम् ।
विधापयामि जैनेन्द्रभवनस्नानहेतवे ॥ ५० ॥

ॐ ह्रीं मन्दरकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा ।

अचलेत्यब्धिना पूर्णमलाख्यं घटं नवम् ।
आम्रपल्लवशोभाद्यं तदर्थं स्थापयाम्यहम् ॥ ५१ ॥

ॐ ह्रीं अचलकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा ।

विद्युन्मालासमाकारं विद्युन्माल्यभिधानकम् ।
कलशं स्थापये दिव्यं नानापूजनवस्तुभिः ॥ ५२ ॥

ॐ ह्रीं विद्युन्मालिकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा ।

चूडामण्याख्यमुत्तुगं चूडामणिसमुन्नतिम् ।
पूर्णं तीर्थोदकैः कुम्भं तदुत्सवे निधापये ॥ ५३ ॥

ॐ ह्रीं चूडामणिकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा।

सद्धारगुलिकाभालं गुलिकाह्वयमुत्तमम्।
कुम्भं निवेशयाम्यत्र जैनमन्दिरशुद्धये ॥ ५४ ॥

ॐ ह्रीं गुलिकाकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा।

दक्षिणावर्तनामानं दक्षिणावर्तसन्निभम्।
घटं च घटितं लक्ष्म्या तत्कृते सन्निवेशये ॥ ५५ ॥

ॐ ह्रीं दक्षिणावर्तकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा।

कोकाख्यं कोकसंकाशं वारिजाश्मविनिर्मितम्।
घटं निधापये जैनवेश्मनः शुद्धहेतवे ॥ ५६ ॥

ॐ ह्रीं कोककलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा।

राजहंससमानाभं राजहंसमाह्वयम्।
घटं तं जाघटीम्यत्र नवार्हद्वेश्मशुद्धये ॥ ५७ ॥

ॐ ह्रीं राजहंसकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा।

कलशं हरिताभिख्यं हरिताश्मविनिर्मितम्।
पूजये दिव्यरत्नेन दिव्यगन्धाम्बुचम्पकैः ॥ ५८ ॥

ॐ ह्रीं हरितकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा।

मृगेन्द्राह्वयमुत्तुङ्गं समाह्वायार्चनादिभिः।
मृगेन्द्रवत्प्रगर्जन्तं स्नानकालेषु वेश्मनः ॥ ५९ ॥

ॐ ह्रीं मृगेन्द्रकलशेन मन्दिर शुद्धिं करोमीति स्वाहा।

कुम्भं कोकनदाकारं श्रीमत्कोकनदाह्वयम्।
त्रिभङ्गानीरसंपूर्णं घटयेऽस्मिन्महोत्सवे ॥ ६० ॥

ॐ ह्रीं कोकनदकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा।

स्निग्धाञ्जनसमाकारमणिनिर्मितमुत्तमम्।
कालाख्यं कलशं हृद्यं तदुत्सवे निवेशये ॥ ६१ ॥

ॐ ह्रीं कालकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा।

पद्माख्यं पद्मचक्राख्यं पद्मरागविनिर्मितम्।
कुम्भं समाह्वये नव्यप्रसादस्नपनाय वै ॥ ६२ ॥

ॐ ह्रीं पअकलशेन मन्दिर शुद्धिं करोमीति स्वाहा ।

अत्यन्तश्यामलाकारप्रस्तरैर्निर्मितं घटम् ।
प्रासादस्नानकालऽेत्र महाकालं निवेशये ॥ ६३ ॥

ॐ ह्रीं महाकालकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा ।

पञ्चप्रकारसद्रत्नविनिर्मितं महोन्नतम् ।
कलशं सर्वरत्नाख्यं स्नानाय श्रीजिनौकसः ॥ ६४ ॥

ॐ ह्रीं सर्वरत्नकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा ।

पाण्डुकाकारपाषाणनिर्मितं पाण्डुकाह्वयम् ।
कुम्भं तीर्थोदकसम्पूर्णं निवेशये यथाविधि ॥ ६५ ॥

ॐ ह्रीं पाण्डुककलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा ।

नैःसर्पकाङ्गलाकारमणिनिर्मितमुन्नतम् ।
कुम्भं स्थापयाम्यत्र तीर्थवारिप्रपूरितम् ॥ ६६ ॥

ॐ ह्रीं नैसर्पकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा ।

मानवाख्यं घटं नव्यमानये तीर्थवार्भृतम् ।
स्थापयेर्हन्महावेश्मस्नपनाय जलार्जितम् ॥ ६७ ॥

ॐ ह्रीं मानवकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा ।

शंखसंकाशरत्नौघविनिर्मितमहोन्नतम् ।
संस्थाप्य पूजये दिव्यं शंखाख्यं जलचन्दनैः ॥ ६८ ॥

ॐ ह्रीं शङ्खनिधिकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा ।

पिंगलाख्यं च पिंगाभं पिंगाश्मभिर्विनिर्मितम् ।
घटं तीर्थाम्बुसम्पूर्णं तदर्थं सन्निधापये ॥ ६९ ॥

ॐ ह्रीं पिङ्गलकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा ।

पुष्करावर्तनामानं कलशं रत्ननिर्मितम् ।
जिनोदवासितस्नानालोकं - संकल्पयाम्यहम् ॥ ७० ॥

ॐ ह्रीं पुष्करावर्तकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा ।

मकरध्वजनामानमिन्द्र- नीलविधापितम् ।
कुटं गंगाम्बुपर्याप्तं पवित्रं स्थापयेद्वरम् ॥ ७१ ॥

ॐ ह्रीं मकरध्वजकलशेन मन्दिर शुद्धिं करोमीति स्वाहा।

ब्रह्माभिख्यं चतुर्वक्त्रं कुम्भं ब्रह्मसमर्चितम्।
ब्रह्मतीर्थजलैः पूर्णं स्थापये नीरचन्दनैः॥ ७२॥

ॐ ह्रीं ब्रह्मकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा।

सुवर्णनिर्मितं कुम्भं सुवर्णाख्यं महासुखम्।
स्फुरद्दलचयं चारुं संस्थाप्याहं समर्चये॥ ७३॥

ॐ ह्रीं सुवर्णकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा।

कदलीपत्रसंकाशं नीलाश्मकमयं घटम्।
स्थापयामीन्द्रनीलाख्यं संभृतं तीर्थवारिणा॥ ७४॥

ॐ ह्रीं इन्द्रनीलकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा।

अशोककुसुमामोदवासिताम्भः- प्रपूरितम्।
अशोकाख्यं महाकुम्भं निधापये जिनौकसाम्॥ ७५॥

ॐ ह्रीं अशोककलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा।

पुष्पदन्तसमानाभं पुष्पदन्तसमाह्वयम्।
कलशं सलिलैः पूर्णं संस्थापयेऽर्हन्मन्दिरे॥ ७६॥

ॐ ह्रीं पुष्पदन्तकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा।

कुमुदाख्यं घटं नव्यं कुमुदस्त्रग्विराजितम्।
कुमुदैरर्चये स्नाने संस्थाप्य श्रीजिनौकसः॥ ७७॥

ॐ ह्रीं कुमुदकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा।

येषु दृष्टेषु भव्यानां सम्यक्त्वं प्रकटीभवेत्।
दर्शनाख्यं महाकुम्भं सभावये जलादिभिः॥ ७८॥

ॐ ह्रीं दर्शनकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा।

यस्य दर्शनमात्रेण धर्मोऽधर्मः प्रबुध्यते।
कुम्भं ज्ञानाख्यमुत्तंगं निवेशये जलैर्भृतम्॥ ७९॥

ॐ ह्रीं ज्ञानकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा।

दर्शनाद्यस्य भव्यानां वृत्ते मतिः प्रजायते।
चारित्राख्यं वनैःपूर्णं कुम्भं संस्थापये मुदा॥ ८०॥

ॐ ह्रीं चारित्रकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा ।

सर्वार्थसिद्धिकर्तारं सर्वार्थसिद्धिनामकम् ।
कुम्भं समर्चये जैनवेश्मनः स्नानहेतवे ॥ ८१ ॥

ॐ ह्रीं सर्वार्थसिध्दिकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा ।

इस प्रकार ८१ कलशों के द्वारा शुद्धि करने के बाद निम्न मंत्रों द्वारा शुद्धि करें ।

ॐ ह्रीं वायुकुमार सर्वविघ्नविनाशनाय महीपूतां कुरु कुरु फट् स्वाहा ।

यह मन्त्र पढकर वेदी पर दर्भ की बनी कूचिंका से मार्जन करें

ॐ ह्रीं मेघकुमार धरां प्रक्षालय प्रक्षालय अं हं सं वं झं यः क्षः फट् स्वाहा ।

यह मन्त्र पढकर दर्भ की कूचिका से वेदी पर जल छीटें

ॐ ह्रीं अग्निकुमार भूमिं ज्वलय ज्वलय अं हं सं वं झं यः क्षः फट् स्वाहा ।

यह मन्त्र पढकर कपूर जलाकर वेदी पर डालें और उसे दर्भ की कूचिंका से सब जगह चलावें ।

ॐ ह्रीं फट् किरिटिं किरिटिं घातय घातय परविघ्नान् स्फोटय परमन्त्रान् सहस्त्रखण्डान् कुरु कुरु परमुद्रां छिन्द छिन्द भिन्द भिन्द ।

यह मन्त्र पढकर मन्दिर की दशों दिशाओं में पुष्प फेंकें ।

रोम रोम पुलकित हो जाय

रोम रोम पुलकित हो जाय, जब जिनवर के दर्शन पाय ।
ज्ञानानन्द कलियाँ खिल जाँय, जब जिनवर के दर्शन पाय ॥
जिन-मन्दिर में श्री जिनराज, तन-मन्दिर में चेतनराज ।
तन-चेतन को भिन्न पिछान, जीवन सफल हुआ है आज ॥टेक ॥
वीतराग सर्वज्ञ-देव प्रभु, आए हम तेरे दरबार ।
तेरे दर्शन से निज दर्शन, पाकर होवें भव से पार ॥
मोह-महातम तुरत विलाय, जब जिनवर के दर्शन पाय ॥१ ॥
दर्शन-ज्ञान अनन्त प्रभु का, बल अनन्त आनन्द अपार ।
गुण अनन्त से शोभित हैं प्रभू, महिमा जग में अपरम्पार ॥
शुध्दातम की महिमा आय, जब जिनवर के दर्शन पाय ॥२ ॥
लोकालोक झलकते जिसमें, ऐसा प्रभु का केवलज्ञान ।
लीन रहें निज शुध्दातम में, प्रतिक्षण हो आनन्द महान् ॥
ज्ञायक पर दृष्टि जम जाय, जब जिनवर के दर्शन पाय ॥३ ॥
प्रभु की अन्तर्मुख -मुद्रा लखि, परिणति में प्रगटे समभाव ।
क्षण-भर में हों प्राप्त विलय को, पर-आश्रित सम्पूर्ण विभाव ॥
रत्नत्रय-निधियाँ प्रगटाय, जब जिनवर के दर्शन पाय ॥४ ॥

भक्ति पाठ

१. सिद्धभक्ति

असरीरा जीवघना उवजुत्ता दंसणेय णाणेय ।
सायारमणायारा लक्खणमेयंतु सिद्धाणं ॥ १ ॥

मूलोत्तपयडीणं बन्धोदयसत्तकम्म उम्मुक्का ।
मंगलभूदा सिद्धा अट्ठगुणा तीदसंसारा ॥ २ ॥

अट्ठवियकर्मविघडा सीदीभूदा णिरंजणा णिच्चा ।
अट्ठगुणा किदिकिच्चा लोयग्गणिवासिणो सिद्धा ॥ ३ ॥

सिद्धा णट्ठट्ठमला विसुद्धबुद्धी य लद्धिसब्भावा ।
तिहुअणसिरिसेहरया पसियन्तु भडारया सव्वे ॥ ४ ॥

गमणागमणविमुक्के विहडियकम्मपयडिसंघारा ।
सासहसुहसंपत्ते ते सिद्धा वंदियो णिच्चा ॥ ५ ॥

जयमंगलभूदाणं विमलाणं णाणदंसणमयाणं ।
तइलोइसेहराणं णमो सदा सव्वसिद्धाणं ॥ ६ ॥

सम्मत्तणाणदंसण वीरिय सुहुमं तहेव अवग्गहणं ।
अगुरुलघु अव्वावाहं अट्ठगुणा होंति सिद्धाणं ॥ ७ ॥

तवसिद्धे णयसिद्धे संजमसिद्धे चरित्तसिद्धे ये ।
णाणम्मि दंसणम्मि य सिद्धे सिरसा णमस्सामि ॥ ८ ॥

इच्छामि भंते सिद्धभत्ति काओसग्गो कओ तस्सालोचेओ सम्मणाणसम्मदंसणसम्म- चरित्तजुत्ताणं अट्ठविहकम्ममुक्काणं अट्ठगुणसम्पण्णाणं उड्ढलोयमच्छयम्मि पयड्ढियाणं तवसिद्धाणं णयसिद्धाणं संजमसिद्धाणं चरित्तसिद्धाणं सम्मणाणसम्मदं-सणसम्मचरित्त-सिद्धाणं तीदाणागदवहमाणकालत्तयसिद्धाणं सव्वसिद्धाणं बंदामि णमस्सामि दुक्खक्खओ कम्मक्खओ बोहिलाओ सुगइगमणं समाहिमरणं जिणगुणसम्पत्ति होउ मज्झं ।

इति पूर्वाचार्यानुक्रमेण भावपूजास्तवसमेतं कायोत्सर्गं करोमि ।

२. श्रुतभक्ति

स्त्रग्धरा

अर्हद्वक्त्रप्रसूतं गणधररचितं द्वादशांगं विशालं,
चित्रं बह्वर्थयुक्तं मुनिगणवृषभैर्धारितं बुद्धिमद्‌भिः ॥
मोक्षाग्रद्वारभूतं व्रतचरणफलं ज्ञेयभावप्रदीपं,
भक्त्या नित्यं प्रबन्दे श्रुतमहमखिलं सर्वलोकैकसारम् ॥१ ॥

वंशस्थ

जिनेन्द्रवक्त्रप्रविनिर्गतं वचो यतीन्द्रभूतिप्रमुखैर्गणाधिपैः ।
श्रुतं धृतं तैश्च पुनः प्रकाशितं द्विषट्‌प्रकारं प्रणमाम्यहं श्रुतं ॥ २ ॥
कोटीशत द्वादश चैव कौट्‌यो लक्षाण्यशीतिस्त्रयधिकानि चैव ।
पंचाशदष्टौ च सहस्त्रसंख्यमेतछ्रुतम् पंचपदं नमामि ॥ ३ ॥

अनुष्टुप

अंगबाह्यश्रुतोद्‌भूतान्यक्षराण्यक्षराम्नये ।
पंचसप्तैकमष्टौ च दशाशीतिं समर्चये ॥ ४ ॥

आर्या

अरहंतभासियत्थं गणहरदेवेहिं गंथियं सम्मं ।
पणमामि भत्तिजुत्तो सुदणाणमहोबहिं सिरसा ॥ ५ ॥

इच्छामि भंते सुदभत्ति काओसग्गो कओ तस्सालोचेओ अंगोबंगपइण्णयपाहु-उपरियम्मसुत्तपढमासिओय पुव्वगयचूलिया चेव सुत्तत्थयत्थुइधम्मकहाइयं सुदं णिच्चकालं अंचेमि पूजेमि बंदामि णमस्सामि दुक्खक्खओ कम्मक्खओ बोहिलाओ सुगइगमणं सम्मं समाहिमरणं जिणगुणसंपत्ति होउ मज्झं ।

> परद्रव्यनतें प्रीति जो, है संसार अबोध ।
> ताको फल गति चार में, भ्रमण कह्यो श्रुत शोध ॥
>
> — बारहभावना : पण्डित जयचन्दजी छावड़ा

३. चारित्रभक्ति

शार्दुलविक्रीडित

संसारव्यसनाहतिप्रचलिता नित्योदयप्रार्थिनः
प्रत्यासन्नविमुक्तयः सुमतयः शांतैनसः प्राणिनः ।
मोक्षस्यैव कृतं विशालमतुलं सोपानमुच्चैस्तरा-
मारोहंतु चरित्रमुत्तममिदं जैनेंद्रमोजस्विनः ॥ १ ॥

अनुष्टुप

तिलोए सव्वजीवाणं हियं धम्मोवदेसणं ।
वड्ढमाणं महावीरं बंदित्ता सव्ववेदिनं ॥ २ ॥

घाइकम्मविघातत्थं घाइकम्मविणासिणा ।
भासियं भव्वजीवाणं चारित्तं पंचभेददो ॥ ३ ॥

सामायियं तु चारित्तं छेदोवड्ढावणं तहा ।
तं परिहारविसुद्धिं च संयमं सुहमं पुणो ॥ ४ ॥

जहाखायं तु चारित्तं तहाखायं तु तं पुणे ।
किच्चाहं पंचहाचार मंगलं मलसोहणं ॥ ५ ॥

अहिंसादीणि वुत्तानि महव्वयाणि पंच य ।
समिदीओ तदो पंच पंचइंदियणिग्गहो ॥ ६ ॥

छब्भेयावासभूसिज्जा अण्हाणत्तमचेलदा ।
लोयत्तं ठिदिभुत्तिं च अदंतवणमेव च ॥ ७ ॥

एयभत्तेण संजुत्ता रिसिमूलगुणा तहा ।
दसधम्मा तिगुत्तीओ सीलाणि सयलाणि च ॥ ८ ॥

सव्वे विय परीसहा वुत्तुत्तरगुणा तहा ।
अण्णे वि भासिया संता तेसिंहाणीमयेकया ॥ ९ ॥

जइ रागेण दोसेण मोहेण णदरेण वा ।
वंदित्ता सव्वसिद्धाणं सजुहा सामुमुक्खुण ॥ १० ॥

संजदेण मए सम्मं सव्वसंजमभाविणा ।
सव्वसंजमसिद्धीओ लब्भदे मुत्तिजं सुहं ॥ ११ ॥

धम्मो मंगलमुक्किट्ठं अहिंसासंजमो तओ ।
देवा वितस्स पणमंति जस्स धम्मे सया मणो ॥ १२ ॥

इच्छामि भंते चारित्तभत्ति काओसग्गो कओ तस्सालोचेओ सम्मणाणजोयस्स सम्मत्ताहिट्ठियस्स सव्वपहाणस्स णिव्वाणमग्गस्स संजमस्स कम्मणिज्जरफलस्स खमाहरस्स पंचमहव्वयसंपण्णस्स तिगुत्तित्तस्स पंचसमिदिजुत्तस्स णाणज्झाणसाहणस्स समयाइपवेसयस्स सम्मचरित्तस्स सदाणिच्चकालं अंचेमि पूजेमि वंदामि णमसामि दुक्खक्खओ कम्मक्खओ बोहिलाओ सुगइगमणं समाहिमरणं जिणगुणसंपत्ति होउ मज्झं ।

४. आचार्यभक्ति

आर्या

देसकुलजाइसुद्धा विसुद्धमणवयणकायसंजुत्ता ।
तुम्हं पायपयोरुहमिह मंगलत्थि मे णिच्चं ॥ १ ॥

सगपरसमयविदूए आगमहेदूहि चावि जाणित्ता ।
सुसमच्छा जिणवयणे विणएसुताणुरूवेण ॥ २ ॥

बालगुरुबुड्ढसेहे गिलाणथेरेयखमणसंजुत्ता ।
अट्ठावयग्गअण्णे दुस्सीले चावि जाणित्ता ॥ ३ ॥

वयसमिदिगुत्तिजुत्ता मुत्तिपहे ठावया पुणो अण्णे ।
अज्झावयगुणणिलया साहुगुणेणावि संजुत्ता ॥ ४ ॥

उत्तमखमाइपुढवी पसण्णभावेण अच्छजलसरिसा ।
कम्मिंघणदहणादो अगणी वाऊ असंगादो ॥ ५ ॥

गयणमिव णिरुवलेवा अक्खोहा सायरुव्व मुनिवसहा ।
एरिसगुणणिलयाणं पायं पणमामि सुद्धमणो ॥ ६ ॥

संसारकाणणे पुण वंभममाणेहिं भव्वजीवेहिं ।
णिव्वाणस्स दु मग्गो लद्धो तुम्हं पसाएण ॥ ७ ॥

अविसुद्धलेसरहिया विसुद्धलेसेहिं परिणदा सुद्धा ।
रुद्दट्टे पुणचत्ता धम्मे सुक्के य संजुत्ता ॥ ८ ॥

ओग्गहईहावायाधारणगुणसम्पएहिं संजुत्ता ।
सुत्तत्थभावणाए भावियमाणेहि वंदामि ॥ ९ ॥

तुम्हे गुणगणसंथुदि अयाणमाणेण जं मए वुत्ता ।
दिंतु मम बोहिलाहं गुरुभत्तिजुदत्थओ णिच्चं ॥ १० ॥

इच्छामि भंत्ते आइरियभत्ति काओसग्गो कओ तस्सालोचेओ सम्मणाण-सम्मदंसण-सम्मचरित्तजुत्ताणं पंचविहाचाराणं आयरियाणं आयारादिसुदणाणोवदेसणाणं उवज्झायाणं तिरयणगुणपालणरयाणं सव्वसाहूणं णिच्चकालं अच्चेमि पूजेमि वंदामि णमस्सामि दुक्खक्खओ कम्मक्खओ बोहिलाओ सुगइगमणं समाहिमरणं जिणगुण-सम्पत्ति होउ मज्झं ।

५. योगभक्ति

आर्या

थोसामि गणधराणं अणयाराणं गुणेहि तच्चेहि ।
अंजुलिमउलियहत्थो अहिबंदंतो सविभवेण ॥ १ ॥

सम्मं चेव य भावे मिच्छाभावे तहे व बोद्धव्वा ।
चइऊग मिच्छभावे सम्ममि उवट्ठिदे वंदे ॥ २ ॥

दोदोसविप्पमुक्के तिदंडविरदे तिसल्लपरिसुद्धे ।
तिण्णियगारवरहिए तियरणसुद्धे णमस्सामि ॥ ३ ॥

चउविहकसायमहणे चउगइसंसारगमणभयभीए ।
पंचासवपडिविरदे पंचेंदियणिज्जदे वंदे ॥ ४ ॥

छज्जीवदयावण्णे छडायदणविवज्जिये समिदभावे ।
सत्तभयविप्पमुक्के सत्ताणभयंकरे वंदे ॥ ५ ॥

णदट्ठमघट्ठाणे पणट्ठकम्मट्ठणट्ठसंसारे ।
परमट्ठणिट्ठिमट्ठे अट्ठगुणट्ठीसरे वंदे ॥ ६ ॥

णवबंभचेरगुत्ते णवणयसब्भावजाणगे बंदे ।
दसविहधम्मट्ठाई दससंजमसंजुदे वंदे ॥ ७ ॥

एयारसंगसुदसायरपारगे बारसंगसुदणिउणे ।
बारसविहतवणिरदे तेरसकिरयापडे वंदे ॥ ८ ॥

भूदेसु दयावण्णे चउ दस चउदस सुगंथपरिसुद्धे ।
चउदसपुव्वपगब्भे चउदसमल वज्जिदे वंदे ॥ ९ ॥

वन्दे चउत्थभत्ता जावदि छम्मासखवणि पाडिपुण्णे ।
बंदे अदावन्ते सूरस्स य अहिमुहट्ठिदे सूरे ॥ १० ॥

बहुविहपडिमट्ठाई णिसेज्जवीराणोज्झवासीयं ।
अणिट्ठु अकुडुंबदीये चतदेहे य णमस्सामि ॥ ११ ॥

ठाणियमोणवदीए अब्भोवासी य रुक्खमूलीय ।
धुदकेसमंसु लोमे णिप्पडियम्मे च वंदामि ॥ १२ ॥

जल्लमललित्तगत्ते बंदे कम्ममलकलुसपरिसुद्धे ।
दीहणहणमंसु लोये तवसिरिभरिए णमस्सामि ॥ १३ ॥

णाणोदयाहिसित्ते सीलगुणविहूसिये तवसुगन्धे ।
ववगयरायसुदट्ठे सिवगइपहणायगे वंदे ॥ १४ ॥

उग्गतवे दित्ततवे तत्ततवे महातवे य घोरतवे ।
वंदामि तवमहंते तवसंजमइड्ढिसम्पत्ते ॥ १५ ॥

आमोसहिएखेलोसहिएजल्लोसहिय तवसिद्धे ।
विप्पोसहिए सव्वोसहिए वंदामि तिविहेण ॥ १६ ॥

अमयमुहघीरसथी सव्वी अक्खीण महाणसे वंदे ।
मणवत्तिवचंवलिकायवण्णिणो य वंदामि तिविहेण ॥ १७ ॥

वरकुट्ठ वीयबुद्धी पयाणुसारीयसमिण्णसोयारे ।
उग्गहईहसमत्थे सुतत्थविसारदे वंदे ॥ १८ ॥

आभिणिबोहियसुदई ओहिणाणमणणाणि सव्वणाणीय ।
वंदे जगप्पदीवे पच्चक्खपरोक्खणाणीय ॥ १९ ॥

आयासततुजलसे ढिचारणे जंघचारणे वंदे ।
विउव्वणइद्धिहाणे विज्जाहरपण्णसमणे य ॥ २० ॥

गइच्चउरंगुलगमणे तहेव फलफुल्लचारणे वंदे ।
अणुवमतवमहंते देवासुरवंदिदे वंदे ॥ २१ ॥

जियभयजियउवसग्गे जियइंदियपरिसहे जियकसाये ।
जियरायदोसमोहे जियसुहदुक्खे णमस्सामि ॥ २२ ॥

एवमए अभित्थुआ अणयारा रायदोसपरिसुद्धा ।
संघस्स वरसमाहिं मज्झवि दुक्खक्खयं दिंतु ॥ २३ ॥

इच्छामि भंते जोगभत्ति काओसग्गो कओ तस्सालोचेओ अड्ढाइजजीवदोससुद्धसु पण्णरसकम्मभूमीसु आदावणरुक्खमूल अब्भावासठाणमोणवीरासणेक्कवासकुक्कडास-णचउत्थपरकरक्खवणादिजोगजुत्ताणं सव्वसाहूणं णिच्चकालं अंचेमि पूजेमि वंदामि णमंस्सामि दुक्खक्खय कम्मक्खय बोहिलाओ सुगइगमणं सम्म समाहिमरणं जिणगुण- संपत्ति होउ मज्झं ।

६. निर्वाणभक्ति

आर्या

अट्ठावयम्मि उसहो चंपाए वासुपुज्ज जिणणाहो ।
उज्जंते णेमिजिणो पावाए णिव्वुदो महावीरो ॥ १ ॥

वीसं तु जिणवरिंदा अमरासुरवंदिता धुदकिलेसा ।
सम्मेदे गिरिसिहरे णिव्वाणगया णमो तेसिं ॥ २ ॥

वरदत्तो य बरंगो सायरदत्तो य तारवरणयरे ।
आहुट्ठयकोडीओ णिव्वाणगया णमो तेसिं ॥ ३ ॥

णेमिसामि पज्जण्णो संबुकुमारो तहेव अणिरुद्धो ।
बाहत्तरिकोडीओ उज्जंते सत्तसया सिद्धा ॥ ४ ॥

रामसुबा वेण्णि जणा लाडणरिंदाण पंचकोडीओ ।
पावागिरिवरसिहरे णिव्वाणगया णमो तेसिं ॥ ५ ॥

पंडुसुआ तिण्णिजणा दविडणरिंदाण अट्ठकोडीओ ।
सेत्तुंजयगिरिसिहरे णिव्वाणगया णमो तेसिं ॥ ६ ॥

संते जे बलभद्दा जदुवणरिंदाण अट्ठकोडीओ ।
गजपंथे गिरिसिहरे णिव्वाणगया णमो तेसिं ॥ ७ ॥

रामहणू सुग्गीओ गवयगवाक्खो य णीलमहाणीलो ।
णवणवदीकोडीओ तुंगीगिरिणिव्वुदे वंदे ॥ ८ ॥

णंगाणंगकुमारा कोडीपंचद्धमुणिवरा सहिया ।
सुवणागिरिवरसिहरे णिव्वाणगया णमो तेसिं ॥ ९ ॥

दहमुहरायस्स सुवा कोडीपंचद्धमुणिवरा सहिया ।
रेवाउहयतडग्गे णिव्वाणगया णमो तेसिं ॥ १० ॥

रेवाणइए तीरे पच्छिमभायम्मि सिद्धवरकूडे ।
दो चक्की दह कप्पे जाहुट्ठयकोडिणिव्वुदे वंदे ॥ ११ ॥

वड़वाणीवरणयरे दक्खिणभायम्मि चूलगिरिसिहरे ।
इंदजीदकुंभयणो णिव्वाणगया णमो तेसिं ॥ १२ ॥

पावागिरिवरसिहरे सुव्वण्णभद्दाइमुणिवरा चउरो ।
चलणाणईतडग्गे णिव्वाणगया णमो तेसिं ॥ १३ ॥

फलहोडीवरगामे पच्छिमभायम्मि दोणगिरिसिहरे ।
गुरुदत्ताइमुणिंदा णिव्वाणगया णमो तेसिं ॥ १४ ।

णायकुमारमुणिंदो बालि महाबाली चेव अज्झेया ।
अट्ठावयगिरिसिहरे णिव्वाणगया णमो तेसिं ॥ १५ ॥

अच्चलपुरवरणयरे ईसाणे भाए मेढगिरिसिहरे।
आहुट्ठयकोडीओ णिव्वाणगया णमो तेसिं ॥ १६ ॥

वंसत्थल वरणियरे पच्छिमभायम्मि कुन्थुगिरिसिहरे।
कुलदेसभूसणमुणी णिव्वणाणगया णमो तेसिं ॥ १७ ॥

जसरटरायस्स सुआ पंचसयाइं कलिंगदेसम्मि।
कोडिसिलाकोडिमुणी णिव्वाणगया णमो तेसिं ॥ १८ ॥

पासस्स समवसणे सहिया वरदत्तमुणिवरा पंच।
रिस्सिदे गिरिसिहरे णिव्वाणगया णमो तेसिं ॥ १९ ॥

इच्छामि भंते परिणिव्वाणभत्ति काओसग्गो कओ तस्सालोचेओ इमम्मि अवसप्पिणीए चउत्थसमयस्स पच्छिमे भागे आहुट्ठयमासहीणे वासचउक्कम्मि सेस-कालम्मि पावाए णयरीए कत्तियमासस्स किण्हचउद्दसिए रत्तीए सादीए णखत्ते पच्चूसे भयवदोमहदि महावीरो वड्ढमाणो सिद्धिगदो तीसुवि लोएसु भवणवासियवाणवितर-जोइसिइ कप्पवासिय त्ति चउव्विहा देवा सपरिवारा दिव्वेण गंधेण दिव्वेण पुप्फेण दिव्वेण धुवेण दिव्वेण चुण्णेण दिव्वेण वासेण दिव्वेण ण्हाणेण णिच्चकालं अच्चंति पुज्जंति वंदंति णमंसंति परिणिव्वाणतहाकल्लाणपुज्जं करंति अहमवि इहसंतो तत्थ सत्ताइ णिच्चकालं अंचेमि पूजेमि वंदामि णमंस्सामि परिणिव्वाण महाकल्लाणपुज्जं करेमि दुक्खक्खओ कम्मक्खओ बोहिलाओ सुगइगमणं सम्मं समाहिमरणं जिणगुणसंपत्ति होउ मज्झं।

७. तीर्थंकरभक्ति

आर्या

चउवीसं तित्थयरे उसहाईवीरपच्छिमे वंदे।
सव्वेसिं मुणिगणहर सिद्धे सिरसा णमंसामि ॥ १ ॥

शार्दूलविक्रीड़ित

ये लोकेष्टसहस्रलक्षणधरा ज्ञेयार्णवांतर्गता।
ये सम्यग्भवजालहेतुमथनाश्चन्द्रार्कतेजोधिकाः ॥
ये साध्विद्रसुराप्सरोगणशतैर्गीतप्रणुत्यार्चिताः ।
तान्देवान्वृषभादिवीरचरमान्भक्त्या नमस्याम्यहम् ॥ २ ॥

स्रग्धरा

नाभेयं देवपूज्यं जिनवरमजितं सर्वलोकप्रदीपं ।
सर्वज्ञं सम्भवाख्यं मुनिगणवृषभं नंदनं देवदेवम् ॥
कर्मारिघ्नं सुबुद्धिं वरकमलनिभं पद्मपुष्पाभिगन्धं ।
क्षांतं दांतं सुपार्श्वं सकलशशिनिभं चन्द्रनामानमीडे ॥ ३ ॥

विख्यातं पुष्पदंतं भवभयमथनं शीतलं लोकनाथं ।
श्रेयांसं शीलकोशं प्रवरनरगुरुं वासुपूज्यं सुपूज्यम् ॥
मुक्तं दान्तेन्द्रियाश्वं विमलमृषिपतिं सिंहसैन्यं मुनींद्रं ।
धर्मं सद्धर्मकेतुं शमदमनिलयं स्तौमि शांतिं शरण्यम् ॥ ४ ॥

कुन्थुं सिद्धालयस्थं श्रमणपतिमरं त्यक्तभोगेषुचक्रम् ।
मल्लिं विख्यातगोत्रं खचरगणनुतं सुव्रतं सौख्यराशिम् ॥
देवेन्द्रार्च्यं नमीशं हरिकुलतिलकं नेमिचन्द्रं भवांतम् ।
पार्श्वं नागेन्द्रवन्द्यं शरणमहमितो वर्द्धमानं च भक्त्या ॥ ५ ॥

इच्छामि भंते चउवीसतित्थयरभत्तिकाउस्सग्गो कओ तस्सालोचेउं। पंचमहाकल्लाणसम्पण्णाणं, अट्ठमहापाडिहेरसहियाणं चउतीसअतिसयविसेससंजुत्ताणं, बत्तीसदेविंदमणिमउडमत्थयमहियाणं, बलदेववासुदेवचक्कहररिसिमुणिजइ अणगारो-वगूढाणं, थुइसयसहस्सणिलयाणं, उसहाइवीरपच्छिममंगलमहापुरिसाणं णिच्चकालं अंचेमि, पुज्जेमि, वंदामि, णमस्सामि, दुक्खक्खओ, कम्मक्खओ, बोहिलाओ, सुगइगमणं समाहिमरणं, जिणगुणसम्पत्ति होउ मज्झं।

कान्त्यैव स्नपयन्ति ये दश दिशो धाम्ना निरून्धन्ति ये ।
धामोद्दाम महस्विनां जनमनो मुष्णन्ति रूपेण ये ॥
दिव्येन ध्वनिना सुखं श्रवणयोः साक्षात्क्षरन्तोऽमृतम् ।
वन्द्यास्तेऽष्ट सहस्त्र लक्षण धरा- स्तीर्थेश्वराः सूरयः ॥

—आत्मख्याति : आचार्य अमृतचन्द्र

८. शांतिभक्ति

शार्दूविक्रीड़ित

न स्नेहाच्छरणं प्रयान्ति भगवन्पादद्वयं ते प्रजा: ।
हेतुस्तत्र विचित्रदु:खनिचय: संसारघोरार्णव: ॥
अत्यन्तस्फुरदुग्र रश्मिनिकर व्याकीर्णभूमण्डलो ।
ग्रैष्म: कारयतीन्दुपादसलिलच्छायानुराग रवि: ॥ १ ॥

क्रुद्धाशीविषदष्टदुर्जयविषय- ज्वालावलीविक्रमो ।
विद्याभेषजमन्त्रतोयहवनेर्याति प्रशांतिं यथा ॥
तद्वत्ते चरणारुणांबुजयुगस्तोत्रोन्मुखानां नृणाम् ।
विघ्ना: कायविनायकाश्च सहसा शामयंत्यहो विस्मय: ॥ २ ॥

संतप्तोत्तमकांचनक्षितिधर - श्रीस्पर्द्धिगौरद्युते ।
पुंसां त्वच्चरणप्रणामकरणात्पीडा: प्रयान्ति क्षयम् ॥
उद्यद्भास्करविस्फुरत्करशतव्याघात निष्कासिता ।
नानादेहिविलोचनद्युतिहरा शीघ्रं यथा शर्वरी ॥ ३ ॥

त्रैलोक्येश्वरमंगलब्ध विजयादत्यंतरौद्रात्मकान् ।
नानाजन्मशतांतरेषु पुरतो जीवस्य संसारिण: ॥
को वा प्रस्खलतीय केन विधिना कालोग्रदावानला—
न्न स्याच्चेत्तव पादपद्मयुगल - स्तुत्यापगावारणम् ॥ ४ ॥

लोकालोकनिरंतरप्रवितत ज्ञानैकमूर्ते विभो !
नानारत्नपिनद्धदण्डरुचिर श्वेतातपत्रत्रय ॥
त्वत्पादद्वयपूतगीतरवत: शीघ्रं द्रवन्त्यामया: ।
दर्पाध्मातमृगेन्द्रभीमनिनदा - द्वन्यायथा कुंजरा: ॥ ५ ॥

दिव्यस्त्रीनयनाभिराम‍विपुल- श्रीमेरुचूडामणे ।
भास्वद्बालदिवाकरद्युतिहर प्राणीष्टभामंडलम् ॥
अव्याबाधमचिंत्यसारमतुलं त्यक्तोपमं शाश्वतम् ।
सौख्यं त्वच्चरणारविंदयुगलस्तुत्येव संप्राप्यते ॥ ६ ॥

यावन्नोदयते प्रभापरिकरः श्रीभास्करो भासयं—
स्तावद्धारयतीह पंकजवनं निद्रातिभारश्रमम् ॥
यावत्त्वच्चरणद्वयस्य भगवन्न स्यात्प्रसादोदय—
स्तावज्जीवनिकाय एष वहति प्रायेण पापं महत् ॥ ७ ॥

शान्ति शान्तिजिनेन्द्र शांतमनसस्त्वत्पादपद्माश्रयात् ।
संप्राप्ताः पृथिवीतलेषु बहवः शान्त्यर्थिनः प्राणिनः ॥
कारुण्यान्मम भाक्तिकस्य च विभो दृष्टिं प्रसन्नां कुरु ।
त्वत्पादद्वयदैवतस्य गदतः शांत्यष्टकं भक्तितः ॥ ८ ॥

चौपाई

शांतिजिनं शशिनिर्मलवक्त्रं शीलगुणव्रतसंयमपात्रं ।
अष्टशतार्चितलक्षणगात्रं नौमि जिनोत्तममंबुजनेत्रम् ॥
पंचमभीप्सितचक्रधराणां पूजितमिन्द्रनरेन्द्रगणैश्च ।
शांतिकरं गणशांतिमभीप्सुः षोडशतीर्थंकरं प्रणमामि ॥ ९ ॥

दिव्यतरुः सुरपुष्पसुवृष्टिर्दुन्दुभिरासनयोजनघोषौ ।
आतपवारणचामरयुग्मे यस्य विभाति च मण्डलतेजः ॥
तं जगदर्चितशांतिजिनेन्द्रं शांतिकरं शिरसा प्रणमामि ।
सर्वगणाय तु यच्छतु शांतिं मह्यमरं पठते परमां च ॥ १० ॥

वंसततिलका

येऽभ्यर्चिता मुकुटकुण्डलहाररत्नैः ।
शक्रादिभिः सुरगणैः स्तुतपादपद्मा ।
ते मे जिनाः प्रवरवंशजगत्प्रदीपाः ।
तीर्थंकराः शततशांतिकरा भवन्तु ॥ ११ ॥

इन्द्रवज्रा

संपूजकानां प्रतिपालकानां यतीन्द्रसामान्यतपोधनानां ।
देशस्य राष्ट्रस्य पुरस्य राज्ञः करोतु शांतिं भगवान् जिनेन्द्र ! ॥ १२ ॥

स्त्रग्धरा

क्षेमं सर्वप्रजानां प्रभवतु बलवान्धार्मिको भूमिपालः ।
काले काले च वृष्टिं बिकिरतु मघवा व्याधयो यांतु नाशम् ॥
दुर्भिक्षं चौरमारी क्षणमपि जगतां मास्मभूज्जीवलोके ।
जैनेन्द्रं धर्मचक्रं प्रभवतु सततं सर्वसौख्यप्रदायि ॥ १३ ॥

वंसततिलका

तद्द्रव्यमन्व्ययमुदेतु शुभः स देशः ।
सन्तन्यता प्रतपतां सततं स कालः ॥
भावः स नन्दतु सदा यदनुग्रहेण ।
रत्नत्रयं प्रतपतीह मुमुक्षुवर्गे ॥ १४ ॥

इच्छामि भंते शांतिभत्तिकाउस्सग्गो कओ तस्सालोचेउ। पंचमहाकल्याण-सम्पण्णाणं, अट्ठमहापाडिहेरसहियाणं, चउतीसातिसयविसेस- संजुत्ताणं, बत्तीसदेवेंद्र-मणिमउडमत्थमहियाणं, बलदेववासुदेवचक्कहररिसिमुणिज- दिअणगारोवगूढाणं, थुइ-समसहस्सणिलयाणं, उसहाइवीरपच्छिममंगल- महापुरिसाणं णिच्चकालं अंचेमि, वंदामि, णमस्सामि, दुक्खक्खओ, कम्मक्खओ, बोहिलाओ, सुगइगमणं, समाहिमरणं, जिणगुणसम्पत्ति होउ मज्झं ।

१. समाधिभक्ति

अनुष्टुप

स्वात्माभिमुखसंवित्तिलक्षणं श्रुतचक्षुषा ।
पश्यन्पश्यामि देव त्वां केवलज्ञानचक्षुषा ॥ १ ॥

मन्दक्रान्ता

शास्त्राभ्यासो जिनपतिनुतिः संगतिः सर्वदार्यैः ।
सद्वृत्तानां गुणगणकथा दोषवादे च मौनम् ॥
सर्वस्यापि प्रियहितवचो भावना चात्मतत्त्वे ।
संपद्यंतां मम भवभवे यावदेतेऽपवर्गः ॥ २ ॥

स्वागता

जैनमार्गरुचिरन्यमार्गनिर्वेगता जिनगुणस्तुतौ मतिः ।
निष्कलंकविमलोक्तिभावनाः संभवन्तु मम जन्मजन्मनि ॥ ३ ॥

आर्या

गुरुमूले यतिनिचिते चैत्यसिद्धांतवार्धिसद्घोषे ।
मम भवतु जन्मजन्मनि सन्यसनसमन्वितं मरणम् ॥ ४ ॥

अनुष्टुप

जन्मजन्मकृतं पापं जन्मकोटिसमर्जितम् ।
जन्ममृत्युजरामूलं हन्यते जिनवन्दनात् ॥ ५ ॥

शार्दूल विक्रीडित

आबाल्याज्जिनेदेवदेव भवतः श्रीपादयोः सेवया ।
सेवासक्तविनेयकल्पलतया कालोद्ययावद्गतः ॥
त्वां तस्याः फलमर्थये तदधुना प्राणप्रयाणक्षणे ।
त्वन्नामप्रतिबद्धवर्णपठने कण्ठोऽष्ठकुण्ठो मम ॥ ६ ॥

आर्या

तव पादौ मम हृदये मम हृदयं तव पदद्वये लीनम् ।
तिष्ठतु जिनेन्द्र तावद्यावन्निर्वाणसंप्राप्तिः ॥ ७ ॥

एकापि समर्थेयं जिनभक्तिर्दुर्गति निवारयितुम् ।
पुण्यानि च पूरयितुं दातुं मुक्तिश्रियं कृतिनः ॥ ८ ॥

पंचसुअ दीवणामे पंचम्मिय सायरे जिणे वंदे ।
पच जसोयरणामे पंचम्मिय मंदरे वंदे ॥ ९ ॥
रयणत्तयं च वंदे चव्वीसजिणे च सव्वदा वंदे ।
पंचगुरूणं वंदे चारणचरणं सदा वंदे ॥ १० ॥

अनुष्टुप

अर्हमित्यक्षरंब्रह्म वाचकं परमेष्ठिनः ।
सिद्धचक्रस्य सद्बीजं सर्वतः प्रणमाम्यहं ॥ ११ ॥
कर्माष्टकविनिर्मुक्तं मोक्षलक्ष्मीनिकेतनम् ।
सम्यक्त्वादि गुणोपेतं सिद्धचक्रं नमाम्यहम् ॥ १२ ॥

शार्दुलविक्रीडित

आकृष्टिं सुरसम्पदां विदधते मुक्तिश्रियो वश्यतां ।
उच्चाटं विपदां चतुर्गतिभुवां विद्वेषमात्मैनसाम् ॥
स्तम्भं दुर्गमनं प्रति प्रयततो मोहस्य सम्मोहनम् ।
पायात्पंचनमस्क्रियाक्षरमयी साराधना देवता ॥ १३ ॥

अनुष्टुप

अनन्तानन्तसंसार- सन्ततिच्छेदकारणम् ।
जिनराजपदाम्भोजस्मरणं शरणं मम ॥ १४ ॥

अन्यथा शरणं नास्ति त्वमेव शरणं मम ।
तस्मात्कारुण्यभावेन रक्ष रक्ष जिनेश्वरः ॥ १५ ॥

नहि त्राता नहि त्राता नहि त्राता जगतत्रये ।
वीतरागात्परो देवो न भूतो न भविष्यति ॥ १६ ॥

जिने भक्तिर्जिने भक्तिर्जिने भक्तिर्दिने दिने ।
सदामेऽस्तु सदामेस्तु सदामेऽस्तु भवे भवे ॥ १७ ॥

याचेहं याचेहं जिन तव चरणारविंदयोर्भक्तिम् ।
याचेहं याचेहं पुनरपि तामेव तामेव ॥ १८ ॥

इच्छामि भंते समाहिभत्तिकाउस्सग्गो कओ तस्सालोचेउं। रयणत्तयपरूव परमप्पज्झाणलक्खणं समाहिभत्तीये णिच्चकालं अंचेमि, पूजेमि, वंदामि, णमस्सामि दुक्खक्खओ, कम्मक्खओ बोहिलाहो, सुगइगमणं, समाहिमरणं, जिणगुणसंपत्ति होउ मज्झं ।

भजन

निरखी-निरखी मनहर मूरति

निरखी-निरखी मनहर मूरति, तोरी हो जिनन्दा ।
खोई-खोई आतम निज-निधि, पाई हो जिनन्दा ॥ टेक ॥

मोह दुःख का घर है मैंने आज सरासर देखा है . . . २
आतम-धन के आगे झूठा, जग का सारा लेखा है . . . २
मैं अपने में घुल-मिल जाऊँ, तो पाऊँ जिनन्दा ॥ १ ॥

तू भवनाशी मैं भववासी, भवसागर से तिरना है . . . २
शुद्ध-स्वरूपी तुझसा बनकर, शिवरमणी को वरना है . . .२
मैं अपने में ही रम जाऊँ, वर पाऊँ जिनन्दा ॥ २ ॥

नादानी में अबलों मैंने, पर को अपना माना है . . . २
काया की माया में भूला, तुझको नहीं पहचाना है . . . २
अब भूलों पर रोता ये मन, मोरा हो जिनन्दा ॥ ३ ॥

जिनमन्दिर शिलान्यास एवं बेदी तथा शिखर निर्माण शुभारम्भ विधि

सर्वप्रथम निर्माण अथवा शिलान्यास का शुभ मुहूर्त्त निकलवा लें। विशेष धर्म प्रभावना करने के लिये कार्यक्रम की आमन्त्रण पत्रिका छपाकर प्रमुख स्थानों पर भिजवायें।

प्रमुख प्रवचनकार तथा प्रतिष्ठाचार्य विद्वान, समारोह के अध्यक्ष, मुख्य अतिथि, विशेष अतिथि, उद्घाटनकर्त्ता एवं शिलान्यासकर्त्ता आदि के नाम पहले से निश्चित करके आमन्त्रण पत्रिका में छपावें। निम्न निर्देशानुसार कार्यक्रम आयोजित करें।

आवश्यक सामग्री

प्रशस्ति पत्र, संगमरमर की '२ × २' की शिला, चाँदी के कन्नी-कटोरे, पन्चरत्न पुड़िया, सवा रुपया, पारा, हल्दी १०० ग्राम, सुपारी १०० ग्राम, पीली सरसों ५०० ग्राम, कलावा २५० ग्राम, कपूर ५० ग्राम, घी ५० ग्राम, मूँगफली तेल १०० ग्राम, रूई १०० ग्राम, ताँबे का लोटा, (जिसमें छेद करके स्वस्तिक बना हुआ) ताँबे का दीपक, लोटे का ढक्कन, ७ के लोहे के टुकड़े नग ४, ९ का लोहे का टुकड़ा बड़ा एक नया तसला २, फावड़ा एक, कप्ची एक, सीमेन्ट २ पेटी ऐसी ईटें कम से कम ५०० नग, २ कारीगर नये कपड़े पहिने हुए, २ मजदूर।

पूजन सामग्री, पूजन पुस्तकें, चाँदी के सिक्के, सोने की ईंट, चांदी की ईंट, सोने की छोटी सी सलाई, चांदी की छोटी सी सलाई।

पूर्व तैयारी :-

१. शिलान्यास स्थल के समीप जिनेन्द्र पूजन एवं प्रवचन तथा शिलान्यास समारोह की व्यवस्था करें। (पूजन हेतु टेबिल, सिंहासन, छत्र, यन्त्र/जिन प्रतिमा, चटाई, पूजा की साभग्री एवं पुस्तकें तथा समारोह हेतु सुसज्जित मन्च एवं पंडाल में लोगों के बैठने के लिए समुचित व्यवस्था करें।)

२. शिलान्यास हेतु ४ फुट लम्बा, ४ फुट चौड़ा तथा ५ फुट गहरा गडढा खुदवा दें। सुरक्षा के लिए तीन तरफ से बॉस आदि बाँधकर घेरा बना दें गडढे के भीतर २" x २" x १" नाप का एक छोटा गडढा खुदवायें। वेदी एवं शिखर की शुभारंभ विधि उनके निर्माण स्थल पर ही सम्पन्न कराएं।

३. जिनेन्द्र भक्ति तथा आवश्यक सूचना आदि के लिए कम से कम २ माइक तथा पर्याप्त स्पीकर आदि की व्यवस्था करें।

कार्यक्रम

१. शिलान्यास कर्त्ता परिवार के पुरुष सदस्यों द्वारा अभिषेक तथा सभी सदस्यों द्वारा जिनेन्द्र पूजा की जाए।

२. जिनेन्द्र पूजन के पश्चात् प्रवचन का आयोजन किया जाए।

३. प्रवचन के बाद शिलान्यास समारोह प्रारम्भ किया जाए जिसमें प्रमुख वक्तागण प्रासंगिक विचार व्यक्त करें।

४. शिलान्यास कर्त्ता के परिवार का परिचय देते हुए उनका तिलक माल्यार्पण आदि द्वारा विशेष सम्मान किया जाए।

५. शिलान्यास कर्त्ता परिवार के सदस्यों द्वारा संगमरमर के शिलापट्ट पर स्वस्तिक कराया जाए तथा उस पर कलावा बंधवाया जाए।

६. शिलान्यास कर्त्ता को काँच में मढ़ी हुई आमन्त्रण पत्रिका, चाँदी की कन्नी, कटोरा तथा प्रमुख विद्वान से वाचन कराके ताँबे का प्रशस्ति पत्र भेंट किया जाए।

७. उक्त सामग्री लेकर शिलान्यास कर्त्ता परिवार के सदस्य विधि करने के शिलान्यास स्थल पहुँचें।

८. मंगलाष्टक पढ़ते हुए पुष्प क्षेपण करें।

९. शिलान्यास कर्त्ताओं से कर्पूर जलाकर शुद्धि करवायें, केशर से साथियां बनवायें, मंगल कलश में हल्दी, सुपारी, सरसों, पंचरत्न तथा सवा रुपया डलवायें, शुद्ध घी का दीपक जलवाकर कलश में रखवायें।

१०. कलश में सोने की सुई खोस दें। तेल और रूई से लिपटे सरियों को गड्ढे के चारों ओर ८ जगह लगवा दें, बड़ा सरिया भी गड्ढे के बीच में लगवायें तथा उसके पास कलश स्थापन करा दें। चारों तरफ लकड़ी के खूँटे लगवा दें।

११. लकड़ी के खूँटो को तीन बार घेरकर नाड़ाछड़ी (कलावा) बाँध दें।

१२. गड्ढे में शुद्ध जल में धुली हुई ईंटें रखवाकर मसाला भरते हुए चबूतरा बनवा दें। चबूतरे पर प्रशस्तिपत्र रखवाकर उस पर मसाला भर दें। उस पर संगमरमर की शिला रखवाकर ऊपर से ईंटें रखवा दें।

१३.. उपस्थित विद्वानों एवं अन्य दानदाताओं द्वारा दानराशि के क्रमानुसार सोने चाँदी तथा ताँबे की (पीले, सफेद, और लाल कागज से लिपटी हुई ईंटें कागज निकालकर) ईंटें रखवाई जायें।

१४. शिलान्यास विधि के पश्चात् शिलान्यासकर्त्ता पुनःपूजन स्थल पर जाकर शान्ति पाठ एवं विसर्जन पाठ पढ़ें।

सम्पूर्ण कार्यक्रम के दौरान उपस्थित जनसमुदाय द्वारा प्रासंगिक भक्ति की जाए।

शिलान्यास-प्रशस्ति

श्री १००८ .... दिगम्बर जैन पंचायती मन्दिर/समिति द्वारेण ....नगरस्थ श्री १००८ .... दिगम्बर जिनमन्दिरे बेदिकाया: शिलान्यास विधाने।

प्रशस्ति पत्रम्

विनायकयन्त्रम्

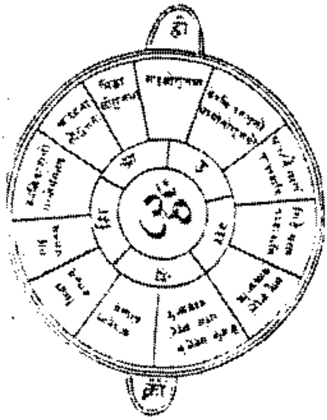

अथ प्रशस्ति:

मंगलं भगवान वीरो मंगलं गौतमो गणी।
मंगलं कुन्दकुन्दाद्यो जैन धर्मोऽस्तु मंगलम्।।

श्री वीर निर्वाण सं. .... वर्षे ...... मासे....... पक्षे .... तिथौ.......... वासरे श्री मूलसंघे सरस्वतीगच्छे श्री कुन्दकुन्दाचार्याम्नाये...... .गरस्थ....... ... उपनगर-स्थित श्री १००८... .... .जिनमन्दिरे....... गोत्रज .... निवासिना स्व. .... पुत्रेण पौत्रेण च वेदिकाया:शिलान्याविधानम् पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट निर्देशने सम्पन्नम्:। इति शुभं भूयात्।

दिनाँक ....

श्रीमत् परमगम्भीरं स्याद्वादामोघ लाञ्छनम्।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनम् जिनशासनम्।।

नूतन गृह प्रवेश विधि

आवश्यक सामग्री

जाप की सामग्री, चँदोवा, विनायकयन्त्र, पाटे, चौकी, पूजा के बर्तन, पूजा की सामग्री पूजन/विधान की पुस्तकें पचरंगा धागा (कलावा), भेंट करने हेतु जैन साहित्य, चटाई, दरी इत्यादि ।

१. सर्वप्रथम नूतन गृह में आवश्यक सफाई कराकर झन्डियाँ , वन्दनवार आदि से सजावट करा दें ।

२. घर के किसी सदाचारी व्यक्ति द्वारा गृह प्रवेश के २ दिन पूर्व निम्न मन्त्र की ५१ या ११० मालाओं का जंप करा लें । (जाप विधि पृष्ठ ८ पर दी गई है ।)

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं ह्रः असिआउसा सर्वशान्ति कुरु कुरु स्वाहा

३. घर के मुख्य कमरे में ऊँची चौकी या पाटे पर विनायक यन्त्र विराजमान करें तथा घर के सदस्यों की संख्या के अनुसार पूजन सामग्री धुलवा कर थाली में सजा लें । यन्त्र के बायें ओर पुष्प (रंगे हुए चावल) से स्वस्ति बनवाकर मंगल कलश विराजमान करा दें ।

३. यन्त्रजी का अभिषेक करावें

४. अमृत स्नान करावें ।

५. मंगलाष्टक एवं पूजा पीठिका पढ़कर पंचपरमेष्ठी, देव-शास्त्र-गुरु, चतुर्विंशति तीर्थंकर, आदि पूजा पढ़ें; अन्त में महाअर्घ्य चढ़ावें ।

नोटः- यदि समय हो तो शान्तिविधान (नव देव पूजन) करें

६. शान्तियज्ञ एवं पुण्याह्वाचन करके शान्तिपाठ एवं विसर्जन पाठ पढ़ें ।

७. पुण्याह्वाचन कराके घर के प्रत्येक कमरे में कुंकुम या रोली से स्वास्तिक बनवा दें तथा शुद्ध जल के छीटें देकर शुद्धि करा दें ।

८. आगन्तुक महानुभावों का उचित स्वागत सत्कार करते हुए जैन साहित्य भेंट करें ।

नोट :- यदि यन्त्रजी उपलब्ध न हो तो जिनवाणी विराजमान करके पूजन विधान करना चाहिए ।

जैन विवाह विधि

उद्देश्य

मनुष्य जन्म की सार्थकता सम्यग्दर्शन प्राप्त कर पाँचों पापों का त्याग करके महाव्रत धारण करके मुक्ति की साधना करने में है। पुरुषार्थ की कमजोरी के कारण जीव महाव्रत अंगीकार नहीं कर पाता, अत: जिनागम में अणुव्रत अंगीकार करने का उपदेश दिया गया है।

यद्यपि परस्त्रीत्याग तथा स्वस्त्रीसन्तोषपूर्ण जीवन अणुव्रती श्रावक की जीवन पद्धति में आता है तथापि अणुव्रत व सम्यग्दर्शन के पूर्व भी सामाजिक मर्यादाओं के अनुसार स्वदारसन्तोषपूर्वक गृहस्थ जीवन व्यतीत करना आवश्यक है। परस्त्री सेवन को सप्त व्यसन में सम्मिलित किया गया है, जो राजदण्ड, समाज दण्ड, तथा नरकादि कुगतियों का कारण है। अत: सदाचरण पूर्वक वंश परम्परा को चलाने के लिए शास्त्रोक्तविधि से देव-गुरु-शास्त्र की साक्षी से वरण, पाणिग्रहण तथा सप्तपदी पूर्वक विवाह की परम्परा है।

विवाह योग्य कन्या की आयु १८ वर्ष तथा वर की आयु २० वर्ष से कम नहीं होनी चाहिए। विवाह समारोह वैभव एवं विलासिता के अनावश्यक प्रदर्शन से बचते हुए सामाजिक एवं धार्मिक रीति-रिवाज पूर्वक आयोजित करना चाहिए। बारात निकासी एवं फेरे आदि की रस्म दिन में ही आयोजित किए जाए तथा रात्रि भोजन एवं अभक्ष्य पदार्थों का प्रयोग न किया जाए तो हमारी संस्कृति की रक्षा होगी तथा समाज का गौरव बढ़ेगा।

आवश्यक सामग्री

श्री फल (२), विनायक यन्त्र (१), शास्त्र (१), सिंहासन (१), छत्र (३), अष्टमंगल द्रव्य (ठोणा, चमर, छत्र , दर्पण, ध्वजा, झारी, कलश, पंखा) जलभरा सफेद लोटा, सफेद कपड़ा एक हाथ, लाल चोल एक हाथ, माला (२), तीन कटनी वाली बेदी (१), पक्की नम्बरी ईटें (८), सूखी काली मिट्टी (१ कि.), कुकंम (२५ ग्राम), हल्दी (५० ग्राम), मेंहदी (२५ ग्राम), लच्छा (२५ ग्रा.), नागरवेलपान (२), सुपारी (४), हल्दी गांठ (४), सरसों (२५ ग्रा.), दीपक (४), रुई माचिस (१), घी (५०० ग्रा.), देशी कपूर (१५ ग्रा.), पूजन द्रव्य (चावल) गिरी (१ कि.), चिटकें (१०० ग्रा.), केशर, (३ग्रा.), बादाम (५० ग्राम), लोंग (१०ग्रा.), पूजन उपकरण खोपरा (२५ ग्राम), पिस्ता (१० ग्रा.), इलायची (१० ग्राम), खारक (१५ ग्रा.), शक्कर का बूरा (१५ग्रा.), शुद्ध दशांग धूप (७५ ग्रा.), थाली (४), कटोरी (२), शुद्धगादी या गलीचा (१), पाटे (४), चौकी (२), आसन (२),चवन्नी (२), सूत की माला (१), पंचरत्न पुड़ी (१)।

नोट - विनायक यन्त्र मन्दिर से लाने और ले जाने में घर पर छुआछूत आदि से अविनय होता है। अत: रकाबी में बना लेना चाहिये। अष्ट मंगल द्रव्य मन्दिर से चांदी पर खुदे हुए मिलते हैं। पक्की नम्बरी आठ ईटों से एक हाथ

लम्बा-चौड़ा तथा ४ अंगुल ऊँचा शास्त्रानुसार स्थंडिल बन जाता है। ईंटें केवल रख देने और ऊपर से मिटटी बिछा देने से काम चल जाता है और कारीगर की आवश्यकता नहीं रहती। चादू १ हाथ लम्बा होता है ।

वाग्दान

(सगाई) में पंचों के समक्ष वर पक्ष और कन्या पक्ष अपने वंश एवं गोत्रादि का परिचय देकर सम्बन्ध निश्चित करते हैं जिसकी लिखापढ़ी पंचायत के मन्दिर में हो जाती है। पोरवाड़ आदि जातियों में इस समय विनायक यन्त्र की पूजन भी की जाती है। सगाई के समय वर पक्ष की ओर से जो सोना या अन्य नकद रकम का गुप्त रूप से सौदा होने लगा है, उसे बन्द कर दोनों पक्ष के प्रेम को बढ़ाने का खयाल रखने में सबका हित है। समधी की मिलनी में भी अधिक रकम दी जाना उचित नहीं है, इससे गरीब व्यक्ति को मजबूर होना पड़ता है।

बाना (विनायक) बैठाना

विवाह के दिन प्रात: कन्वा और वर अपने-अपने यहाँ के श्री जिन मन्दिर में जाकर शुभ मुहूर्त में पंच परमेष्ठी यानी विनायक यन्त्र की पूजा करें। वहाँ से घर आकर गृहस्थाचार्य से छोटा-बड़ा विनायक का दो बार कंकण बन्धन करावें। कंकण बन्धन कन्या के बायें हाथ में और वर के दाहिने हाथ में ५ गांठ और दूसरे में ७ गांठ लगावें।

कंकण बन्धन मन्त्र

जिनेन्द्र गुरु पूजनम् श्रुतवच: सदा धारणम्।
स्वशीलयमरक्षणं ददन सत्तपोवृहणम् ॥
इति प्रथितषट्क्रिया, निरतिचारमास्तां तवे-
त्यथ प्रथित कर्मणि विहित रक्षिकाबंधनम् ॥

टीका व लग्न

कन्या पक्ष की ओर से विवाह के पूर्व टीका में वर के लिए वस्त्र व अगूंठी तथा विवाह मुहूर्त लिखा हुआ मांगलिक लग्नपत्र पंचों के समक्ष भेजा जाता है जो वर को पाटे पर बैठा कर फल व पुष्पमाला के साथ गोद में रखा जाता है। इस समय वर की ओर से कोई भी ठहराव (शर्त) नहीं होना चाहिये। यही वर विक्रय का रूप माना जाता है, जबकी सोना व ऊँचा सामान तथा हजारों रुपये नगद दिये जाते हैं। इस समय व आगे भी उक्त सामान के सिवाय कुछ भी नहीं लेना चाहिये-वर को इस समय साहस दिखाना चाहिये।

मण्डप निर्माण (स्तंभारोपण)

विवाह के सात या पाँच दिन पूर्व विवाह मण्डप के लिये मण्डप की आवश्यकता हो तो स्तंभारोपण विधि की जाती है। यह स्तंभ ज्योतिषी से पूछकर आग्नेय दिशा में कन्या के यहाँ, कन्या के पिता या जो विवाह हाथ में लेता है उसके

द्वारा और वर के यहां वर के पिता या जो विवाह हाथ मे ले, उसके हाथ से शुभ मुहूर्त में होता है। कहीं-कहीं स्तम्भारोपण कन्या और वर के हाथ से भी करा लिया जाता है। जहाँ जैसा हो वहाँ वैसा करा लेवें। इसकी विधि में गृहस्थाचार्य स्तम्भारोपण के लिए गड्ढा खुदवा कर वर या कन्या के पिता-माता आदि को जोड़े सहित पूर्व या उत्तर की तरफ मुँह करके बैठा कर मंगलाष्टक मंगल कलश, संकल्प, यन्त्र पूजा पूर्वक स्तम्भ का आरोपण करावें । स्तम्भ के ऊपर के हिस्से में लाल चोल में श्रीफल, सुपारी, हल्दी गाँठ, चुअन्नी, सरसों, पान, आम के पत्ते, अमरबेल आदि लच्छे से बाँध दें और गड्ढे के पास स्तम्भ खड़ा कर जल, दूध, दही, पारा, कुंकुम आदि क्षेप कर गड्ढे में स्तम्भ का आरोपण करें। फिर शान्ति पाठ एवं विसर्जन पाठ करें।

विवाह वेदी

वर के यहां केवल मण्डप की रचना होती है और कन्या के यहाँ मण्डप और भावर (फेरे) के लिए विवाह-वेदी की रचना भी होती है। मण्डप में अथवा अन्यत्र जहाँ फेरे कराये जाते है। उस स्थान पर मण्डवा (चन्देवा) ताना जाता है और कहीं-कहीं मानस्तम्भ व कलश (मिटटी का) भी स्थापित किया जाता है। इस जगह वेदी की रचना की जाती है। वेदी बनाने के लिए कम से कम चार हाथ की लम्बी-चौड़ी जमीन के आस-पास चारों कोनों में चार कुण्डे रख कर चार-चार बाँस तथा ऊपर भी कुल चार बाँस लगाकर उन्हें मूंज की रस्सी और लच्छे से बाँध देना चाहिये। बीच में ऊँचा चन्देवा बाँधना चाहिये जिसके नीचे वर-कन्या खड़े रह सकें। इन वेदी के बिलकुल बीच में एक हाथ लम्बा चौड़ा स्थण्डिल को बनाया जाय। इसी पर हवन होगा, इस स्थण्डिल मे पश्चिम या दक्षिण की ओर आधा हाथ छोड़ कर एक हाथ की जगह में तीन कटनी वाली चौकी या उस हिसाब से एक हाथ लम्बाई से ईंटें रख देना चाहिये।

तोरण व पाणिग्रहण संस्कार विधि

कन्या के यहाँ वर पक्ष बरात लेकर जाता है। यह बरात बाहर गाँव की हो तो सारी विवाह सम्बन्धी कार्यवाही एक दिन में हो जाना चाहिए। बरात की शोभायात्रा में पुरुषों या महिलाओं द्वारा बाजार में भोंडा नृत्य कुलीन परिवार के योग्य नहीं है। वर्तमान परिस्थिति को देखते हुए एक दिन में तोरन और फेरे होकर दूसरे दिन बरात बिदा कर देना चाहिए। तोरन में भी बारात का स्वागत होकर तिलक आरती हो जाय तथा बरात का मर्यादा के भीतर जलपान-इत्र-पुष्प आदि से सम्मान कर दिया जावे। इस समय रात्रि को अन्न आदि व सिगरेट, कोकाकोला आदि अनुपसेव्य पदार्थों का उपभोग न किया जाय। दिन में ही पाणिग्रहण संस्कार हो जाना चाहिए।

तोरण का अभिप्राय है कन्या के यहाँ पर जाना, न कि लकड़ी का तोरण लगाकर छड़ी मारना, यह हिंसा का प्रतीक है। उत्तर प्रदेश में पहले और मध्य भारत में अब यह सुधार होने लगा है। अग्रवाल जाति में बरात जाते समय और कन्या

पक्ष के यहाँ आने पर यन्त्र पूजा होती है। आज कल बरात आने पर वर-वधू स्टेज पर परस्पर माला डालते हैं।

फेरे के आधा घण्टे पहले गृहस्थाचार्य विवाह की सामग्री देखकर उसे वेदी के स्थान पर यथा स्थान जमा दे। पुजारी से पूजन द्रव्य धुलवा कर मंगा लिया जाय। स्थंडिल पर कुंकुम से साथिया बना ले और चारों ओर दीपक रख दे। पूर्व या उत्तर मुख लगी हुई तीन कटनी में ऊपर यंत्रजी, बीच में शास्त्र और नीचे गुरुपूजा के निमित्त चौसठ ऋद्धि कागज पर मांडकर रखे तथा वही अष्टमंगल द्रव्य सजावें। वर कन्या के बैठने के लिए यंत्र के दक्षिण की ओर नई गादी बिछवा दें, जिस पर वे उत्तर मुख बैठ सकें।

विवाह विधि

विवाह में अग्रवालों में कन्या प्रदान और पाणिपीडन (हथलेवा) का मुहर्त मुख्य माना जाता है। ज्योतिषि इन्हीं मुहूर्तों को निकाला करते हैं। परन्तु जैन विधि के अनुसार खण्डेलवालों में जब वर-कन्या विवाह वेदी में आते है तब मंगलाष्टक बोलकर परस्पर वरमाला पहनाई जाती है, उसी का मुहूर्त माना जाता है।

कन्या को स्नान करा के स्त्रियाँ वर के स्थान (जनिवासा) पर वर को स्नान कराने आवें, और वर, मंदिर में जिन दर्शन कर ठीक मुहूर्त में १५ मिनिट पहले मंडप में आ जाय। दरवाजे पर कन्या की माता चावल का छोटा-सा चौक पूरकर पाटा रखे और उस पर वर के पैर जल से धोवे, फिर आरती करें। कन्या का मामा वर को तिलक कर एक रुपया व श्रीफल भेंट कर साथ में वेदी पर लाकर गादी पर पूर्व मुख खड़ा कर दे। पीछे कन्या को भी गादी पर लाकर वर के सामने पश्चिम मुख खड़ा कर दे। वर और कन्या को एक-एक पुष्पहार दे दे। वर और कन्या के मुँह में इस समय पान-सुपारी न हो और न कन्या चप्पलें पहिने वेदी में न आवे। गृहस्थाचार्य मंगलाष्टक पढे और ठीक मुहूर्त में कन्या वर को और वर कन्या को पुष्पमाला पहना दे। पीछे दोनों पूर्व मुख होकर गादी पर बैठ जावे, कन्या वर के दक्षिण ओर रहे। गृहस्थाचार्य वर से मंगल कलश स्थापन करावे। कलश में शुद्ध जल, सुपारी, हल्दी गाँठ, चुअन्नी और पुष्प डालकर श्रीफल व लाल चोल से ढक कर लच्छे से बाँधे और सूत की माला पहनावें।

मंगल कलश स्थापन मंत्र

ॐ अद्य भगवतो महापुरुषस्य श्रीमदादि ब्रह्मणो मतेऽस्मिन् विधियमान विवाह कर्मणि वीर निर्वाण संवत्सरे . . . . तिथौ . . .. दिने . . . . . . शुभ लग्ने, भूमि शुद्धयर्थ, पात्रशुद्धयर्थ, क्रियाशुद्धयर्थ, शांत्यर्थ, पुण्याहवाचनार्थं शुद्ध प्रासुकतीर्थ जल पूरित मंगलकलशस्थापनम् करोमि भ्वी इवीं हं सः स्वाहा।

नोट :- इसे पुण्याहवाचन कलश भी कहते हैं।

प्रत्येक छन्द के अन्त में वर-वधू से थाली में पुष्पक्षेपण कराते हुए मंगलाष्टक पढ़ें तथा निम्न अर्घ्य चढ़ाकर नवदेव पूजन करें।

देव-शास्त्र-गुरु को अर्घ्य

हरिगीतिका

जल परम उज्ज्वल गन्ध अक्षत पुष्प चरु दीपक धरूँ ।
वर धूप निर्मल फल विविध बहु जनम के पातक हरूँ ॥
इह भाँति अर्घ्य चढ़ाय नित भवि करत शिव पंकति मचूँ ।
अरहन्त - श्रुतसिद्धान्त – गुरु निर्ग्रन्थ नित पूजा रचूँ ॥

दोहा

वसुविधि अर्घ्य संजोय के अति उछाह मन कीन ।
जासों पूजों परमपद देव-शास्त्र-गुरु तीन ॥

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वामीति स्वाहा ।

चौबीस तीर्थकरों को अर्घ्य

अवतार

जल फल आठों शुचि सार, ताको अर्घ्य करों ।
तुमको अरपों भवतार, भवतरि मोक्ष वरों ॥
चौबीसों श्री जिन चन्द्र आनन्दकन्द सही ।
पद जजत हरत भवफन्द, पावत मोक्ष मही ॥

ॐ ह्रीं श्री ऋषभादि चतुर्विंशति तीर्थकरेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं नि० ।

बीस तीर्थकरो को अर्घ्य

रोला/दोहा

जल फल आठों दर्व अरघ कर प्रीति धरी है ।
गणधर इन्द्रनि हूतैं, थुति पूरी न करी है ॥
द्यानत सेवक जानके (हो) जगतैं लेहु निकार ।
सीमन्धर जिन आदि दे बीस विदेह मंझार ॥
श्री जिनराज हो, भव तारण तरण जिहाज ।

ॐ ह्रीं श्री सीमंधरादि विद्यमान विंशति तीर्थकरेभ्योऽर्घ्यम् ।

अकृत्रिम चैत्यालय को अर्घ्य

यावन्ति जिन-चैत्यानि, विद्यन्ते भुवन-त्रये ।
तांवति सततं भक्त्या, त्रि: परीत्य नमाम्यहम् ॥

ॐ ह्रीं श्री त्रिलोकसंबधि कृत्रिमाकृत्रिमजिन-बिम्बेभ्योऽर्घ्यं नि० स्वाहा ।

नवदेव पूजन

आर्या

अरिहन्तसिद्धसाधुत्रितयं, जिनधर्म बिम्बवचनानि ।
जिननिलयान्नवदेवान्, संस्थापये भावतो नित्यम् ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यः पुष्पांजलि क्षिपामि ।

उपजाति

ये घाति-जाति-प्रतिघात- जातं शक्राद्यलंध्यंजगदेकसारम् ।
प्रपेदिरेऽनंत चतुष्टयं तान्, यजे जिनेन्द्रानिह कर्णिकायाम् ॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्परमेष्ठिने अर्घ्यम् ॥ १ ॥

निःशेषबन्धक्षयलब्धशुद्ध — बुद्धस्वभावान्निज सौख्यवृद्धान् ।
आराधये पूर्वदले सुसिद्धान्, स्वात्मोपलब्ध्यै स्फुटमष्टधेष्ट्या ॥

ॐ ह्रीं श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यम ॥ २ ॥

ये पन्वधाचारपरं मुमुक्षूनाचारयन्ति स्वयमाचरन्तः ।
अभ्यर्चये दक्षिणदिग्दले तान्, आचार्यवर्यान्स्वपरर्थचर्यान् ॥

ॐ ह्रीं श्री आचार्य परमेष्ठिने अर्घ्यम् ॥ ३ ॥

येषामुपान्त्यंसमुपेत्य शास्त्राण्यधीयते मुक्तिकृते विजेयाः ।
अपश्चिमान्पश्चिमदिग्दलेऽस्मिन् नमूनुपाध्यायगुरून्महामि ॥

ॐ ह्रीं श्री उपाध्यायपरमेष्ठिने अर्घ्यम् ॥ ४ ॥

ध्यानैकतानानवहिः प्रचारान्, सर्व सहान्निवृत्ति-साधनार्थं ।
संपूजयाम्युत्तरदिग्दले तान्, साधूनशेषान् गृणशीलसिंधून् ॥

ॐ ह्रीं श्री साधुपरमेष्ठिने अर्घ्यम् ॥ ५ ॥

आराधकानभ्युदये समस्तान्निः श्रेयसे वा धरति ध्रुवं यः ।
तं धर्ममाग्नेयविदिग्दलांते, संपूजये केवलिनोपदिष्टम् ॥

ॐ ह्रीं श्री जिनधर्माय अर्घ्यम् ॥ ६ ॥

सुनिश्चितासंभवबाधकत्वात्, प्रमाणभूतं सनयप्रमाणम् ।
यजे हि नानाष्टकभेदवेदं, मत्यादिकं नैऋतकोणपत्रे ॥

ॐ ह्रीं श्री जिनागमाय अर्घ्यम् ॥ ७ ॥

व्यपेतभूषायुध — वेशदोषा, नृपेत — निःसंगत याद्रभूर्तीम् ।
जिनेन्द्रबिंबान्भुवनत्रयस्थान्, समर्चये वायुविदिग्दलेऽस्मिन् ॥

ॐ ह्रीं श्री जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यम् ॥ ८ ॥

शालत्रयान्सद्मनि केतुमान् स्तम्भालयान्मंगल मंगलाद्यान् ।
गृहान् जिनानामकृतान्कृतांश्च, भूतेशकोणस्थदले यजामि ॥

ॐ ह्रीं श्री जिनचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यम् ॥ ९ ॥

शार्दूलविक्रीड़ित

मध्येकर्णिकमर्हदार्यमनघं बाह्योऽष्टपत्रोदरे ।
सिद्धान् सूरिवरांश्च पाठकगुरून् साधूंश्च दिक् पत्रगान् ॥
सद्धर्मागम-चैत्य-चैत्य निलयान् कोणास्थदिक्पत्रगान् ।
भक्त्या सर्व सुरासुरेन्द्रमहितान् तानष्टधेष्ट्या यजे ॥

ॐ ह्रीं अर्हदादिनवदेवेभ्यः पूर्णार्घ्यम् ॥ १० ॥

नोट- विवाह में पूजा शुद्धतापूर्वक नहीं हो पाती अतः स्थापना नहीं की जा रही है।

विनायक यन्त्र पूजा

अनुष्टुप

परमेष्ठिन् ! जगत्राण करणे मंगलोत्तम् ।
इतः शरण ! तिष्ठ त्त्वं, सन्निधौभद पावनम् ॥

ॐ ह्रीं असिआउसा मंगलोत्तमशरणभूतेभ्यः पुष्पांजलिं क्षिपामि ।

उपजाति

पंकेरुहायातपराग पुन्जैः, सौगन्ध्यमद्भिः सलिलैः पवित्रैः ।
अर्हत्पदान्भाषित मंगलादीन्, प्रत्यूहनाशार्थमहं यजामि ॥

ॐ ह्रीं श्री मंगलोत्तमशरणभूतेभ्यः पंचपरमोष्ठिभ्यो जलम् ॥ १ ॥

काश्मीर-कर्पूर-कृतद्रवेण, संसार—तापापहृतौ युतेन ।
अर्हत्पदान्भाषित मंगलादीन् प्रत्यूह नाशार्थमहं यजामि ॥

ॐ ह्रीं श्री मंगलोत्तमशरणभूतेभ्यः पंचपरमेष्ठिभ्यः चंदनम् ॥ २ ॥

शाल्यक्षतैरक्षत-मूर्तिमद्भि-रब्जादिवासेन सुगन्धवद्भिः ।
अर्हत्पदान्भाषित मंगलादीन् प्रत्यूह नाशार्थमहं यजामि ॥

ॐ ह्रीं श्री मंगलोत्तमशरणभूतेभ्यः पंचपरमेष्ठयो अक्षतान् ॥ ३ ॥

कदंबजात्यादिभवैः सुरद्रुमै, जतितर्मनोजातविपाशदक्षैः ।
अर्हत्पदान्भाषित मंगलादीन् प्रत्यूह नाशार्थमहं यजामि ॥

ॐ ह्रीं श्री मंगलोत्तमशरणभूतेभ्यः पंचपरमेष्ठभ्य पुष्पम् ॥ ४ ॥

पीयूषपिंडैश्च शशांकशांति—स्पर्द्धद्भिरिष्टैर्नयन-प्रियैश्च ।
अर्हत्पदान्भाषित मंगलादीन् प्रत्यूह नाशार्थमहं यजामि ॥

ॐ ह्रीं श्री मंगलोत्तमशरणभूतेभ्य: पंचपरमेष्ठिभ्य: नैवेद्यम् ॥ ५ ॥

ध्वस्तांधकारप्रसरै: सुदीपै - र्धृतोद्भवैरत्नविनिर्मितै र्वा ।
अर्हत्पदान्भाषित मंगलादीन् प्रत्यूह नाशार्थमहं यजामि ॥

ॐ ह्रीं श्री मंगोत्तमशरणभूतेभ्य: पंचपरमेष्ठिभ्य: दीपं ॥ ६ ॥

स्वकीय धूमेन नभोवएकाश व्यापदिभरुधैश्च सुगंधधूपै: ।
अर्हत्पदान्भाषित मंगलादीन् प्रत्यूह नाशार्थमहं यजामि ॥

ॐ ह्रीं श्री मंगलोत्तशरण भूतेभ्य: पंचपरमेष्ठिभ्य: धूपं ॥ ७ ॥

नारंग पूगादिफलैरनर्ध्यै, हृन्मानसादिप्रियतर्पकैश्च ।
अर्हत्पदान्भाषित मंगलादीन् प्रत्यूह नाशार्थमहं यजामि ॥

ॐ ह्रीं मंगलोत्तमशरणभूतेभ्य: पंचपरमेष्ठिभ्य: फल ॥ ८ ॥

शार्दूल विक्रीडित

अंभश्चन्दन नन्दनाक्षत तरूद्भूतै र्निवेद्यैर्वरै ।
दीपर्धूप फलोत्तमै: समुदितै — रेभि: सुपात्रस्थितै: ॥
अर्हत्सिद्धसुसूरिपाठकमुनीन् लोकोत्तमान्मंगलान् ।
प्रत्यूहौघनिवृत्तये शुभकृत: सेवे शरण्याम्हम् ॥
ॐ ह्रीं श्री मगलोत्तमशरणभूतेभ्य: पंचपरमेष्ठिभ्योऽर्घ्यं ॥ ९ ॥

प्रत्येक पूजनम्

वसंततिलका

कल्याणपंचक कृतोदयनाप्तमीश-
मर्हन्तमच्युत चतुष्टयभासुरांगम् ।
स्याद्वादवागमृत—सिंधुशशांक कोटि-
मर्चे जलादिभिरनंतगुणालयं तम् ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्री अनन्तचतुष्टयसमवशरणादिलक्ष्मीविभ्रतेऽर्हत्परमेष्ठिने अर्घ्यम् ।

कर्माष्टकेंधनचय मुत्पथ माशु हुत्वा ।
सद्ध्यानवन्हिविसरे स्वयमात्मवन्तम् ।
नि:श्रेयसामृतसरस्यथ सन्निनाय,
तं सिद्धमुच्चपददं परिपूजयामि ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं श्री अष्टकर्मकाष्ठगण भस्मीकृतेसिद्धपरमेष्ठिनेऽर्घ्यम् ।

स्वाचार-पंचकमपि स्वयमाचरंति,
ह्याचारयन्ति भविकान्निजशुद्धि-भाजः ।
तानर्चयामि विविधैः सलिलादिभिश्च,
प्रत्यूहनाशनविधौ निपुणान् पवित्रैः ॥ ३ ॥

ॐ ह्रीं श्री पंचाचारपरायणाय आचार्यपरमेष्ठिनेऽर्घ्यम् ।

अंगांग-बाह्यपरिपाठन लालसाना-
मष्टांगभानपरिशीलन-भावितानाम् ।
पादारविंदयुगलं खलु पाठकानां,
शुद्धैर्जलादिवसुभिः परिपूजयामि ॥ ४ ॥

ॐ ह्रीं श्री द्वादशांगपठनपाठनोद्यताय उपाध्यायपरमेष्ठिनेऽर्घ्यम् ।

आराधना सुखविलास-महेश्वराणां,
सद्धर्मलक्षणमयात्मविकस्वराणाम् ।
स्तोतुं गुणान् गिरिवनादिनिदासिनां वै,
एषोऽर्धतश्चरणपीठभुवं यजामि ॥ ५ ॥

ॐ ह्रीं श्री त्रयोदशप्रकारचारित्राराधक साधुपरमेष्ठिनेऽर्घ्यम् ।

अनुष्टुप

अर्हन्मंगलमर्चामि, जगन्मंगल दायकम् !
प्रारब्धकर्मविघ्नौघ- प्रलयप्रदमब्मुखैः । ६ ॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हन्मंगलार्घ्यम् ।

चिदानन्दलसद्वीचि-मालिनं गुणशालिनम् ।
सिद्धमंगलमर्चेऽहं, सलिलादिभिरुज्ज्वलैः ॥ ७ ॥

ॐ ह्रीं श्री साधुमंगलायार्घ्यम् ।

बुद्धिक्रियारसतपो - विक्रियौषधिमुख्यकाः ।
ऋद्धयो यं न मोहंति, साधुमंगलमर्चये ॥ ८ ॥

ॐ ह्रीं श्री साधुमंगलायार्घ्यम् ।

लोकालोकस्वरूपज्ञ-प्रज्ञप्तं धर्म मंगलम् ।
अर्चे वादित्रनिर्घोष पूरिताशं वनादिभिः ॥ ९ ॥

ॐ ह्रीं श्री केवलिप्रज्ञप्तधर्म मंगलायार्घ्यम् ।

लोकोत्तमोऽर्हन् जगतां, भवबाधाविनाशकः ।
अर्च्यतेऽर्घेण स मया कुकर्मगणहानये ॥ १० ॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हल्लोकोत्तमायार्घ्यम् ।

विश्वाग्रशिखरस्थायी, सिद्धो लोकोत्तमो मया ।
मह्यते महसामंद- चिदानन्द सुमेदुरः ॥ ११ ॥

ॐ ह्रीं श्री सिद्धलोकोत्तमायार्घ्यम् ।

रागद्वेषपरित्यागी, साम्यभावावबोधकः ।
साधुलोकोत्तमोऽर्घेण, पूज्यते सलिलादिभिः ॥ १२ ॥

ॐ ह्रीं श्री साधुलोकोत्तमायार्घ्यम् ।

उत्तमक्षमया भास्वान् सद्धर्मो विष्टपोत्तमः ।
अनंतसुख संस्थानं यज्यतेऽम्भः सुमादिभिः ॥ १३ ॥

ॐ ह्रीं श्री केवलिप्रज्ञप्तधर्मलोकोत्तमायार्घ्यम् ।

सदार्हन्शरणं मन्ये नान्यथा शरणं मम ।
इति भावविशुद्ध्यर्थ-मर्हयामि जलादिभिः ॥ १४ ॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हच्छरणार्घ्यम् ।

व्रजामि सिद्धशरणं, परावर्तनपंचकम् ।
भित्वा स्वसुखसंदोह, सम्पन्नमिति पूजये ॥ १५ ॥

ॐ ह्रीं श्री सिद्धशरणायार्घ्यम् ।

आश्रये साधुशरणं, सिद्धांत प्रतिपादनैः ।
न्यक्कृताज्ञानतिमिर-मिति शुद्धयायजामि तम् ॥ १६ ॥

ॐ ह्रीं श्री साधुशरणायार्घ्यम् ।

धर्म एव सदा बन्धुः, स एव शरणं मम ।
इह वान्यत्र संसार इति तं पूजयेधुना ॥ १७ ॥

ॐ ह्रीं श्री केवलिप्रज्ञप्तधर्मशरणायार्घ्यम् ।

वसंततिलका

संसार दुःख हनने निपुणं जनानाम् ।
नाद्यन्त चक्रमिति सप्तदश प्रमाणम् ॥
संपूजये विविध भक्ति भरावनम्रः ।
शांतिप्रदं भुवनमुख्यपदार्थ सार्थैः ॥ १८ ॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हदादिसप्तदश मंत्रेभ्यः समुदायार्घ्यम् ।

जयमाला

वसंततिलका

विघ्नप्रणाशनविधौ सुरमर्त्यनाथा,
अग्रेसरं जिन वदन्ति भवंतमिष्टम् ।
आनाद्यनंतयुगवर्तिनमत्र कार्ये,
गार्हस्थ्य धर्मविहितेऽहमपि स्मरामि ॥ १ ॥
विनायकः सकलधर्मिजिनेषु धर्मम्,
द्वेधा नयत्यविरतं दृढसप्तभंग्या
यद्ध्यानतो नयनभावमुज्झनेन,
बुद्धः स्वयं सकलनायक इत्यवाप्तेः ॥ २ ॥

उपजाति

गणानां मुनीनामधीशत्वतस्ते,
गणेशाख्यया ये भवन्तं स्तुवन्ति ।
सदा विघ्नसंदोहशांतिर्जनानां,
करे संलुठत्यायतश्रायसानाम् ॥ ३ ॥
यो दृक्सुधातोषित भव्य जीवो,
यो ज्ञान पीयूष पयोधि तुल्यः ।
यो वृत्त दूरी कृत पाप पुंजः,
स एवं मान्यो; गणराज नाम्ना ॥ ४ ॥
यतस्त्वमेवासि विनायको मे-
दृष्टेष्टयोगादविरुद्ध- वाचः
त्वन्नाममात्रेण पराभवन्ति,
विघ्नारयस्तर्हि किमत्र चित्रम् ॥ ५ ॥

मालिनी

जय जय जिनराज त्वदगुणान्को व्यनक्ति,
यदि सुरगुरुद्विन्द्रः कोटि वर्ष प्रमाणं ।
वदितुमभिलषेद्वा पारमाप्नोति नो चेत्,
कथमित हि मनुष्यः स्वल्पबुद्ध्या समेतः ॥ ६ ॥

ॐ ह्रीं श्री मंगलोत्तमशरणभूतेभ्यः पंचपरमेष्ठिभ्यो जयमालाऽर्घ्यम् ।

अनुष्टुप

श्रियं बुद्धिमनाकुल्यं, धर्मप्रीति विवर्द्धनम् ।
गृहिधर्मे स्थितिर्भूयात्, श्रेयो मे दिशतु त्वरा ॥

पुष्पांजलिं क्षिपेत्

सिद्ध-पूजा

सिद्धान्विशुद्धान्वसुकर्ममुक्ता त्रैलोक्यशीर्षस्थितचिद्विलासान्
संस्थापये भावविशुद्धिदातृन् सन्मंगलं प्राज्यसमृद्धयेऽहम् ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं वसुकर्म रहित सिद्धेभ्यः पुष्पांजलि क्षिपामि ।

ॐ ह्रीं दर्पमथनाय नमः, जलम् ॥
ॐ ह्रीं शीलगंधाय नमः, चंदनम् ॥
ॐ ह्रीं अक्षताय नमः, अक्षतान् ॥
ॐ ह्रीं विमलाय नमः, पुष्पम् ॥
ॐ ह्रीं परमासेद्धाय नमः, नैवेद्यम् ॥
ॐ ह्रीं ज्ञानोद्योताय नमः, दीपम् ॥
ॐ ह्रीं श्रुतधूपाय नमः, धूपम् ॥
ॐ ह्रीं अभीष्टफलदाय नमः, फलम् ॥

वंशस्थ

अष्टकर्म गणनाशकारकान्, कष्टकुंडलिसुदष्टगारुडान् ।
स्पष्टज्ञानरिमीत विष्टपान्, अर्घ्यतोऽघनाशनाय पूजये ॥

ॐ ह्रीं श्री वसुकर्म रहितेभ्य सिद्धभ्योऽर्घ्यम् ।

द्वादशांगमखिलं श्रुतं हितं स्थाप्य पाणिपरिपीडनोत्सवे ।
पूज्यते यदधिधर्मसंभवो द्वैधयैष जगतां प्रसीदति ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्री द्वादशांगाश्रुताय अर्घ्यम् ।

ऋद्धयो बलरसादि विक्रियौषध्यसंज्ञक महानसादिकाः ।
तत्क्रमांबुरुहवासमासते, तान् गुरुनभिमहामि वार्मुखैः ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं श्री महर्द्धियारकपरमर्षिभ्योऽर्घ्यम् ।

अष्टमंगलमिदं पदांबुजे, भासते शतसुमंगलौघदम् ।
धर्मचक्रमभिपूजये वरं, कर्मचक्र-परिणाशनौद्यतम् ॥ ३ ॥

ॐ ह्रीं धर्मचक्रायार्घ्यम् ।

प्रदान और वरण

यन्त्र की पूजन के पश्चात् कन्या के पिता और मामा, हो सके तो दोनों ही सपत्नीक, यन्त्र के सामने हाथ जोड़कर खड़े होवें और वर के पिता और मामा भी उनके सामने अर्थात् यन्त्र के पीछे खड़े हो जावें। गृहस्थाचार्य कन्या के पिता से उनके बाद में मामा से, सबके समक्ष कन्या की सम्मतिपूर्वक वर के प्रति इस प्रकार वाक्य बुलवावें:- 'मैं आपको धर्माचरण में और समाज की एवं देश की सेवा में सहयोग देने के लिए अपनी यह कन्या प्रदान करना चाहता हूँ । आप इसे स्वीकार करे।

कन्या के पिता और मामा के इस प्रकार कहने पर वर भी यन्त्र को नमस्कार कर कहे "मैं आपकी कन्या को स्वीकार करता हूँ, और इसके सहयोग से धर्म, अर्थ, और काम का सेवन करूंगा"।

इस अवसर पर समस्त स्त्री-पुरुष वर-कन्या पर वृणीत्वं वृणीध्वं (वरो) कह कर अपनी अनुमोदना के साथ पुष्प वृष्टि करें। कन्या के पिता झारी या कलशी में जल लेकर वर के सीधे हाथ की कनिष्ठा अंगुली से कन्या की बाँये हाथ की कनिष्ठा अंगुली स्पर्श कराकर उन अंगुलियों पर निम्न प्रकार मन्त्र पढ़ कर जल-धारा छोड़े। गृहस्थाचार्य पिता से यह मन्त्र कहलावे :-

ओमद्य जंबूद्वीपे भरतक्षेत्रे आर्यखण्डे . . . . . . नगरे अस्मिन् स्थाने . . . . . वीर निर्वाण संवत्सरे . . . . मासे . . . . तिथौ. . . . . वासरे जैन धर्म परिपालकाय . . . . . गोत्रोत्पन्नाय . . . .. पुत्राय . . . . पौत्राय . . . . नाम्ने कुमाराय जैनधर्म परिपालकस्य . . .. गोत्रोत्पन्नस्य . . . . . पुत्री . . . पौत्री . . . . नाम्नी इमां कन्यां प्रददामि। ओं नमोर्हते भगवते श्रीमते वर्धमानाय श्रीबलायुरारोग्य संतानाभिवर्धनं भवतु क्ष्वीं क्ष्वी हं सः स्वाहा।

उक्त प्रदान और वरण की विधि में प्रदान से कन्यादान का मतलब, जैसा कि अन्य सम्प्रदायों में माना जाता है वैसा यहाँ नहीं है। कन्या अन्य वस्तुओं की भाँति दान की वस्तु नहीं मानी गई है। यहाँ तो सिर्फ सबके सामने विवाह की एक विधि मात्र बतलाई है।

नोट:- यहाँ दोनों पक्ष के गृहस्थाचार्य शाखोच्चारण पृष्ठ १ का यहाँ दोनो पक्ष के नाम व गोत्र पूर्वक पढ़ सकते हैं।

सप्तपदी पूजा

उपजाति

सज्जातिगार्हस्थ्य-परिव्रजत्वं सौरेन्द्रसाम्राज्य-जिनेश्वरत्वम् ।
निर्वाणिकं चेति पदानि सप्त, भक्त्या यजेऽहं जिनपादपद्मम् ॥

ॐ ह्रीं श्री सप्तपरमस्थानेभ्यः पुष्पान्जलिं क्षिपामि ।

द्रुतविलम्बित

विमलशीतलसज्जल धारया सदिधबन्धुरशीकरसारया ।
परमसप्त सुस्थानस्वरूपकं परिभजामि सदाष्टविधार्यनैः ॥

ॐ ह्रीं सप्तपरमस्थानेभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा ॥

मृसणकुंकुम चन्दन सद्रवैः सुरभितागतषट्पदसद्रसैः ।
परमसप्त सुस्थानस्वरूपकं परिभजामि सदाष्टविधार्यनैः ॥

ॐ ह्रीं सप्तपरमस्थानेभ्यः चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ।

विपुलनिर्मलतंदुलसंचयैः, कृतसुमौक्तिककल्पक निश्चयैः ।
परमसप्त सुस्थानस्वरूपकं परिभजामि सदाष्टविधार्चनैः ॥

ॐ ह्रीं श्री सप्तपरमस्थानेभ्योऽक्षतान् ।

कुसुमचंपक-पंकजकुंदकैः, सहजजाति-सुगंध-विमोदकैः ।
परमसप्त सुस्थानस्वरूपकं परिभजामि सदाष्टविधार्चनैः ॥

ॐ ह्रीं श्री सप्तपरमस्थानेभ्यः पुष्पम् ।

सकललोक विमोदन कारकैश्चरुवरैः सुसुधाकृतिधारकैः ।
परमसप्त सुस्थानस्वरूपकं परिभजामि सदाष्टविधार्चनैः ॥

ॐ ह्रीं श्री सप्तपरमस्थानेभ्य : नैवेद्यम् ।

तरलतारसुकांतिसुमन्डनैः, सदनरत्नचयैरपखण्डनैः ।
परमसप्त सुस्थानस्वरूपकं परिभजामि सदाष्टविधार्चनैः ॥

ॐ ह्रीं श्री सप्तपरमस्थानेभ्यः दीपम् ।

अगुरुधूपभवेन सुगंधिना, भ्रमरकोटि समेन्द्रियबंधिना ।
परमसप्त सुस्थानस्वरूपकं परिभजामि सदाष्टविधार्चनैः ॥

ॐ ह्रीं श्री सप्तपरमस्थानेभ्यो धूपम् ।

सुखदपक्वसुशोभनसत्फलैः क्रनुकर्निवुकमोचसुतांगतैः ॥
परमसप्त सुस्थानस्वरूपकं परिभजामि सदाष्टविधार्यनैः ॥

ॐ ह्रीं श्री सप्तपरमस्थानेभ्यो फलम्।

जिनवरागमसद्गुरुमुख्यकान्, प्रविज्ये गुरुसदगुण मुख्यकान्।
सुशुभचन्द्रतरान् कुसुमोत्करैः समयासारपरान्पयसादिकैः

ॐ ह्रीं श्री सप्तपरमस्थानेभ्यो ऽर्घ्यम्।

गठजोड़ा

हवन और सप्तपदी पूजा के बाद जीवनपर्यन्त पति-पत्नी बनने वाले दम्पति में परस्पर प्रेमभाव एवं लौकिक और धार्मिक कार्यो में साथ रहने का सूचक ग्रन्थिबन्धन (गठजोड़ा) किसी सौभाग्यवती (सुहागिनी) स्त्री के द्वारा कराना चाहिए। कन्या की लुगड़ी (साड़ी)के पल्ले मे १ चुअननी, १ सुपारी, हल्दी गाँठ , सरसों व पुष्प रख कर उसे बाँध लें और उससे वर के दुपट्टे के पल्ले को बाँध दें।

ग्रन्थिबन्धन मंत्र

अस्मिन् जन्मन्येष बन्धोर्द्वयोर्वै,कामे धर्मे वा गृहस्थत्वभाजि।
योगो जातः पंचदेवाग्नि साक्षी, जायापत्त्योरंचलग्रंथिबंधात् ॥

हथलेवा (पाणिग्रहण)

गठजोड़ा के पश्चात् कन्या के पिता कन्या के बाँये हाथ में और वर के सीधे हाथ में पिसी हुई हल्दी को जल से रकाबी में घोलकर लेपें। लोक में जो पीले हाथ करने की बात कही जाती है यह वही विधि है। फिर वर के सीधे हाथ में थोड़ी-सी गीली मेंहदी और १ चुअन्नी रख कर उस पर कन्या का बाँया हाथ रख कर कन्या का हाथ ऊपर व वर का हाथ नीचे करके वर कन्या के दोनों हाथ जोड़ दें। इस विधि से कन्या का पिता अपनी कन्या को वर के हाथ में सौंपता है। इसे पाणिग्रहण कहते हैं।

पाणिग्रहण मंत्र

वसंततिलका

हारिद्रपंकमवलिप्य सुवासिनीभिर्दत्तं द्वयोर्जनकयोः खलु तौ गृहीत्वा।
वामं करं निजसुताभवमग्रपाणिम्, लिम्पेद्वरस्य च करद्वययोजनार्थम् ॥

गृहस्थाचार्य प्रत्येक फेरे के बाद नीचे लिख हुआ अर्घ्य क्रमशः चढ़ाते रहें-

१. ॐ ह्रीं सज्जाति परमस्थानाय अर्घ्यम्।
२. ॐ ह्रीं सद्गृहस्थ परमस्थानाय अर्घ्यम्।
३. ॐ ह्रीं पारिव्राज्य परमस्थानाय अर्घ्यम्।

४. ॐ *ह्रीं सुरेन्द्र परमस्थानाय अर्घ्यम्।*

५. ॐ *ह्रीं साम्राज्य परमस्थानाय अर्घ्यम् ।*

६. ॐ *ह्रीं आर्हन्त्य परमस्थानाय अर्घ्यम्।*

फेरे और सप्तपदी

हथलेवा के बाद वर-कन्या को खड़ा करा के कन्या को आगे और वर को पीछे रखकर वेदी में चवरी के मध्य में यन्त्र सहित कटनी और हवन की प्रज्ज्वलित अग्नियुक्त स्थंडिल के चारों ओर छः फेरे दिलवावें।

बुन्देलखण्ड (परवार आदि जातियों) में वर-वधू का हाथ छुड़वा कर छह फेरे दिलाये जाते हैं। इस समय स्त्रियाँ फेरों के मंगल गीत गावें। वर और कन्या के कपड़ों को संभालते हुए फेरे दिलाना चाहिए एक-दो समझदार स्त्री और पुरुष दोनों को संभालते रहें। छः फेरों के बाद दोनों अपने पूर्व स्थान पर पहले के समान बैठ जावें। गृहस्थाचार्य निम्न प्रकार सात-सात वाहनों (प्रतिज्ञाओं) को क्रम से पहले वर से और फिर कन्या से कहलावें, साथ ही स्वयं उनको सरल भाषा में समझाता जाय।

वर की ओर से कन्या के प्रति सात वचन

(१) मेरे कुटुम्बी लोगों का यथायोग्य विनय सत्कार करना होगा।

(२) मेरी आज्ञा का लोप नहीं करना होगा, ताकि घर में अनुशासन बना रहे।

(३) कठोर वचन नहीं बोलना होगा, क्योंकि इससे चित्त को क्षोभ होकर पारस्परिक द्वेष हो जाने की संभावना रहती है।

(४) सत्पात्रों के घर पर आने पर उन्हें आहार आदि प्रदान करने में कलुषित मन नहीं करना होगा।

(५) मनुष्यों की भीड़ आदि में जहाँ धक्का आदि लगने की सभावना हो, वहां बिना खास कारण के अकेले नहीं जाना होगा।

(६) दुराचारी और नशा करने वाले लोगों के घर पर नहीं जाना होगा,क्योंकि ऐसे व्यक्तियों द्वारा अपने सम्मान में बाधा आने की संभावना है।

(७) रात्रि के समय बिना पूछे दूसरों के घर नहीं जाना होगा, ताकि लोगों को व्यर्थ ही टीका-टिप्पणी करने का मौका न मिले।

ये सात प्रतिज्ञायें तुम्हें स्वीकार करना चाहिए। इन वचनों में गार्हस्थ्य जीवन को सुखद बनाने की बातों का ही उल्लेख है। इनके पालन से घर में और समाज में पत्नी का स्थान आदरणीय बनेगा।

इन प्रतिज्ञाओं को कन्या अपने मुँह से निःसंकोच हो कर कहे और स्वीकार करे।

कन्या द्वारा वर के प्रति सात वचन

(१) मेरे सिवाय अन्य स्त्रियों को माता, बहन और पुत्री के समान मानना होगा अर्थात् पर-स्त्री सेवन का त्याग और स्व-स्त्री सन्तोष रखना होगा।

(२) वेश्या, जो परस्त्री से भिन्न मानी जाती है उसके सेवन का त्याग करना होगा।

(३) लोक द्वारा निन्दनीय और कानून से निषिद्ध द्यूत (जुआ) नहीं खेलना होगा।

(४) न्यायपूर्वक धन का उपार्जन करते हुए वस्त्र आदि से मेरा रक्षण करना होगा।

(५) आपने जो मुझ से अपनी आज्ञा मानने की प्रतिज्ञा कराई है उस सम्बन्ध में, धर्म स्थान में जाने और धर्माचरण करने में रुकावट नहीं डालनी होगी।

(६) मेरे सम्बन्ध में और घर की कोई बात मुझ से नहीं छिपानी होगी क्योंकि मै भी आपकी सच्ची सलाह देने वाली हूँ। कदाचित् उससे आपको लाभ हो जाय और अपना संकट दूर हो जाय, साथ ही इससे परस्पर विश्वास भी बढ़ेगा।

(७) अपने घर की गुप्त बात दूसरे के याने मित्र आदि के समक्ष प्रकट नहीं करनी होगी। लोगों की मनोवृत्ति प्रायः यह होती है कि वे दूसरे घर की छोटी-सी बात ' तिल का ताड ' की उक्ति के समान बड़ी करके अपवाद फैला देते हैं।

नोटः- उक्त वर-वधू की ७-७ प्रतिज्ञाये प्रचार में आने योग्य हैं।

वर और वधू द्वारा ली जाने वाली सात प्रतिज्ञायें

(१) जीवन पर्यन्त साथ रहते हुए सहनशील और कर्मवीर बन कर एक-दूसरे के लिए जीवित रहना, जीवन से निराश न होना।

(२) दाम्पत्य जीवन को सुखी बनाने और गृह जीवन के निर्माण में भीतर का उत्तरदायित्व नारी को और बाह्य जीवन का उत्तरदायित्व पुरुष पर है।

(३) एक-दूसरे के परिवार के सदस्य बन कर सबके स्नेह और आदर के पात्र बनना। विनय, सेवा करना एवं सद्व्यवहार से घर और ससुराल को स्वर्ग बनाना।

(४) परस्पर स्नेह, अभिन्नता, आकर्षण, विश्वास बना रहे - इसके उपाय आचरण में लाना। पति के लिए पत्नी सर्वाधिक सुन्दर व प्रिय और पत्नी के लिए पति परमराध्य रहे।

(५) वधू को कुल वधू (सीता, अन्जना, सुलोचना आदि के समान) और वर को कुल पुत्र (राम, जयकुमार, सुदर्शन आदि के समान) बनना, जिनसे घर का सम्मान , गौरव, प्रतिष्ठा, कीर्ति बनी रहे वैसे काम करना। निर्व्यसनी, शीलवान और विवेकी बनना।

(६) जिनेन्द्र देव, गुरु, शास्त्र की अर्चना एवं साक्षीपूर्वक विवाह सम्पन्न हो रहा है उनमें श्रद्धा बनाये रखें, इससे बुराइयों से बचने में बल मिलता रहे । आत्महित (वीतरागता) की ओर दृष्टि रखें ।

(७) समाज, जनता और राष्ट्र की सेवा में दोनों परस्पर सहयोग से आगे बढ़ें तथा विलासिता से बचें ।

इन सात प्रतिज्ञाओं को दोनों स्वीकार करें । इनके सिवा और भी कोई खास बात हो तो विवाह के पहले स्पष्ट कर लेना चाहिए, जिससे दाम्पत्य जीवन आजीवन आनन्दपूर्वक व्यतीत हो । सच यह है कि अपने साफ और शुद्ध परिणाम (नियत) ही से सम्बन्ध अच्छा रह सकता है ।

सप्तपदी के पश्चात् वर को आगे करके सातवाँ फेरा कराया जाये और अपने पहले के स्थान पर जब आवें तब वे पति-पत्नी के रूप में हो कर याने स्त्री पति के बाँये ओर और पति स्त्री के दाहिने ओर बैठे । इस अवसर पर स्त्रियाँ मंगलगीत गावें ।

उक्त सात फेरे या भाँवर सात परम स्थानों की प्राप्ति के द्योतक हैं । आगमानुसार संसार में (१) सज्जातित्व (२) सद्रगृहस्थत्व (३) साधुत्व (४) इन्द्रत्व (५) चक्रवर्तित्व (६) तीर्थकरत्व और (७) निर्वाण ये सात परम स्थान माने गये हैं ।

सातवें फेरे के बाद ' **ॐ ह्रीं निर्वाण परम स्थानाय अर्घ्यम्** ' बोल कर अर्घ्य चढ़ावें ।

सात फेरे होने पर गृहस्थाचार्य नवदम्पति पर निम्न प्रकार मन्त्र द्वारा पुष्प क्षेपण करे ।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसाधवः शान्ति पुष्टिं च कुरुत स्वाहा ।

यहाँ पर संक्षेप में गृहस्थ जीवन के महत्त्व पर उपदेश देकर अच्छी संस्थाओं को यथाशक्ति दोनों पक्ष की ओर से दान की घोषणा करा कर तत्काल यथास्थान भिजवाने का प्रबन्ध करा देना चाहिए ।

इसके बाद कन्या पक्ष की ओर से वर को तिलकपूर्वक १) एक रुपया और श्रीफल भेंट कर हथलेवा छुड़ा देना चाहिए और नवदम्पत्ति खड़े हो कर मंगल-कलश हाथ में ले लें । गृहस्थाचार्य पुण्याहवाचन पाठ पढ़े और सर्वशांतिर्भवतु वाक्य के आने पर नीचे एक पात्र में जलधारा स्वयं छोड़ता जाय और नवदम्पति से धारा छुड़ाता जाय ।

शांतिस्तवनम्

वसंततिलका

चिद्रूपभावमनवद्यमिमं त्वदीयं ।
ध्यायंति ये सदुपधिव्यतिहार मुक्तं ॥
नित्य निरंजनमनादिमनंतरूपं ।
तेषां महांसि भुवनत्रितये लसंति ॥ १ ॥

ध्येयस्त्वमेव भवपंचतयप्रसार,
निर्णाशकारणविधौ निपुणत्त्वयोगात् ॥
आत्मप्रकाशकृत लोकतदन्यभाव,
पर्यायविस्फुरणकृतपरमोऽसि योगी ॥ २ ॥

त्वन्नाममंत्रधन— मुद्धतजन्मजात ।
दुःकर्मदावमभिशस्य शुभांकुराणि ॥
व्यापादयत्यतुल भक्तिसमृद्धिभांजि ।
स्वामिन्नतोऽसि शुभदः शुभकृत्वमेव ॥ ३ ॥

त्वत्पादतामरस कोषनिवासमास्ते ।
चित्तद्विरेफसुकृति मम यावदीश ॥
तावच्च संसृतिजकिल्विषतापशापः ।
स्थानं मयि क्षणमपि प्रतियाति कच्चित् ॥ ४ ॥

त्वन्नाममंत्रमनिशं रसनाग्रवर्ति,
यस्यास्ति मोहमदघूर्णन नाशहेतुः ।
प्रत्याहराजिलगणोद् भवकालकूट,
भीतिर्हि तस्य किमुसंनिधिमेति देव ॥ ५ ॥

तस्मात्त्वमेव शरणं तरणं भवाब्धौ,
शांतिप्रदः सकलदोषनिवारणेन ।
जागर्ति शुद्धमनसा स्मरतो यतो मे,
शांतिः स्वयं करतले रभसाभ्युपैति ॥ ६ ॥

द्रुतविलम्बिता

जगति शांतिविवर्धनमंहसां, प्रलयमस्तु जिनस्तवनेन मे ।
सुकुतबुद्धिरलं क्षमयायुतो, जिनवृषो हृदय मम वर्तताम् ॥ ७ ॥

इसके बाद निम्नलिखित मन्त्र व पद्य से विसर्जन करें—

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा अर्हदादिपरमेष्ठिनः संपूजिताः जः जः जः अपराध क्षमापनं भवतु ।

शार्दूलविक्रीड़ित

मोहध्वांतविदारणं विशद विश्वोद्भासि श्रियम् ।
सन्मार्ग प्रतिभासकं विबुधसंदोहामृतापादकम् ॥
श्रीपाउं जिनचन्द्रशांति शरणं सद्भक्तिमानेऽपि ते ।
भूयास्तापहरस्य देव भवतो भूयात्पुनर्दर्शनम् ॥

आशीर्वाद

गृहस्थाचार्य निम्नलिखित श्लोक पढ़ कर वर-वधू को पुष्पमाला द्वारा आशीर्वाद दे ।

वसंततिलका

आरोग्यमस्तु चिरमायुरथो शचीव,
शक्रस्य शीतकिरणस्य च रोहिणीव ।
मेघेश्वरस्य च सुलोलनका यथैषा,
भूयात्तवेप्सित सुखानुभवादिदात्री ॥
दीर्घायुरस्तु शुभमस्तु सुकीर्तिरस्तु,
सद्बुद्धिरस्तु धनधान्य समृद्धिरस्तु ।
आरोग्यमस्तु विजयोऽस्तु महोऽस्तु पुत्र-
पौत्रोद्भवोऽस्तु तव सिद्धिपतिप्रसादात् ॥

आरती

वर की सास हाथ में दीपक लेकर वर को तिलक करके आरती करे । पलकाचार या पहरावली भी अल्प व्यय में बिना खींचतान सरलता पूर्वक कर दी जाये । पश्चात् वर-वधू को मंगलगीत पूर्वक विदा करे ।

विवाह के दूसरे दिन या उसी दिन वर -वधू जितेन्द्र देव के दर्शन करें । इस समय पंचायत (गोट) की ओर से जो सोलाणा में ध्वजा आदि के नाम पर रकम ली जाती है वह यथाशक्ति देना चाहिए ।

शाखाचार

वर और कन्या पक्ष के लोगों द्वारा पढा जाये ।

दोहा

वन्दों देव युगादि जिन, गुरु गणेश के पाँय ।
सुमरूं देवी शारदा, ऋद्धि सिद्धि वरदाय ॥ १ ॥
अब आदिश्वर कुमर को, सुनियो ब्याह विधान ।
विघन विनाशक पाठ है, मंगल मूल महान ॥ २ ॥
इस ही भारत क्षेत्र में, आरज खण्ड मंझार ।
सुख सों बीते तीन युग, शेष समय की वार ॥ ३ ॥
चौदह कुलकर अवतरे, अन्तिम नाभि नरेश ।
सब भूपन में तिलक सम, कौशलपुर परवेश ॥ ४ ॥
मरुदेवी राणी प्रगट, शुभ लक्षण आधार ।
तिनके तीर्थंकर भये, प्रथम ऋषभ अवतार ॥ ५ ॥
स्वामि स्वयंभू परम गुरु, वयं बुद्ध भगवान् ।
इन्द्र चन्द्र पूजत चरण, आदि पुरुष परिमान ॥ ६ ॥
तीन लोक तारन तरन , नाम विरद विख्यात ।
गुण अनन्त आधार प्रभु, जगनायक जगतात ॥ ७ ॥
जनमत ब्याह उछाह में, शुभ कारज की आदि ।
पहिले पूज्य मनाइये, विनशै विघन विनाश ॥ ८ ॥
सकल सिद्धि सुख सम्पदा, सब मन-वांछित होय ।
तीन लोक तिहुँकाल में, और न मंगल कोय ॥ ९ ॥
इस मंगल को भूलि के, करै और से प्रीति ।
ते अजान समझे नहीं, उत्तम कुल की रीति ॥ १० ॥
नाभि नरेश्वर एक दिन, कियो मनोरथ सार ।
आदि पुरुष परणाइये, बोले सुबुधि विचार ॥ ११ ॥
अहो कुमर तुम जगत गुरु, जगत्पूज्य गुणधाम ।
जन्मे योग त्रिलोक सब, कहें हमें गुरु नाम ॥ १२ ॥
ताते नहीं उल्लंघने मेरे वचन कुमार ।
ब्याह करो आशा भरो, चलै गृहस्थाचार ॥ १३ ॥
सुनके वचन सुतात के, मुसकाये जिन चन्द ।
तब नरेश जानी सही, राजी ऋषभ जिनन्द ॥ १४ ॥
बेटी कच्छ सुकच्छ की, नन्द सुनन्दी नाम ।
अगुण रूप गुण आगरी, मांगी बहु गुण धाम ॥ १५ ॥

उभय पक्ष आनन्द भयो, सब जग बढ़्यो उछाह ।
लग्न महूरत शुभ घड़ी, रोप्यो ऋषभ विवाह ॥ १६ ॥
खान- पान सन्मान विधि, उचित नाम प्रकाश ।
सन्तोषे पोषे स्वजन, योग्य वचन मुख भास ॥ १७ ॥
गज तुरंग वाहन विविध, बनी बरात अनूप ।
रथ में राजत ऋषभ जिन, संग बराती भूप ॥ १८ ॥
नाचें देवी अप्सरा, सब रस पोषें सार ।
मंगल गावें किन्नरी, देव करें जयकार ॥ १९ ॥
मंगलीक बाजे बजें, बहु विधि श्रवण सुहाहिं ।
नरनारी कौतुक निरख, हरषैं अंगना मांहि ॥ २० ॥
आदि देव दूल्हा जहां, पायन इन्द्र महान ।
तिस बरात महिमा कहन, समरथ कौन सुजान ॥ २१ ॥
आगे आये लेन को, कच्छ सुकच्छ नरेश ।
विविध भेट देके मिले, उर आनन्द विशेष ॥ २२ ॥
रतन पौल पहुँचे ऋषभ, तोरण घण्टा द्वार ।
रतन फूल वरषें घने, चित्र विचित्र अपार ॥ २३ ॥
चोरी मण्डप जगमगे, बहुविधि शोभे ऐन ।
चारों दिश चिलके परे, कंचन कलश रु बैन ॥ २४ ॥
मोती झालर झूमका, झलके हीरा होर ।
मानो आनन्द मेघ की, झरी लगी चहुँ ओर ॥ २५ ॥
वर कन्या बैठे जहां देखत उपजे प्रीत ।
पिक बैनी मृग लोचनी, कामिन गावें गीत ॥ २६ ॥
कन्यादान विधान विधि, और उचित आचार ।
यथायोग्य व्यवहार सब, कीनों कुल अनुसार ॥ २७ ॥
इह विधि विविध उछाह सों, भये मंगलाचार ।
कीनी सज्जन वीनती, शोभा दिपे अपार ॥ २८ ॥
हर्षित नाभि नरेश मन, हर्षित कच्छ- सुकच्छ ।
मरु देवी आनन्द थयो, हर्षे परिजन पच्छ ॥ २९ ॥
यह विवाह मंगल महा, पढ़त बढ़त आनन्द ।
सबको सुख सम्पति करो, नाभिराय कुलचन्द ॥ ३० ॥
वंश बेल बाढ़े सुखद, बढ़ै धर्म मर्याद ।
वर कन्या जीवे सुथिर, ऋषभदेव परसाद ॥ ३१ ॥

नोटः- उक्त शाखाचार कन्या प्रदान की विधि के समय अयदाल आदि जातियों में बोला जाता है। इसके साथ अग्रवालों में दोनों पक्ष की ओर से सात पीढ़ी के नाम बताकर वर कन्या की मंगल-कामना की जाती है।

विशेष ज्ञातव्य

(१) विवाह के दिन कन्या के रजस्वला हो जाने पर कन्या से पाँचवें दिन पूजन-हवन आदि विवाह की विधि कराना चाहिए। विवाह दिन मे किया जाना चाहिए।

(२) नवदेव पूजन में अर्हत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय, सर्व साधु, जिनधर्म, जिनागम, जिनचैत्य और जिनालय - इन नव देवों की पूजन की जाती है।

(३) गुरु पूजा में ऋद्धियों की स्थापना के लिए "ओं बुद्धि चारण विक्रियौषधतपोबलरसाक्षीण महानसचतु: षष्ठि ऋद्धिभ्यो नम:" यह मन्त्र कागज पर केसर से लिख कर नीचे की कटनी पर रख देना चाहिए।

(४) विवाह के मुहूर्त निकालने आदि में और अन्य ग्रहादिदोष को दूर करने के लिए जो पीली (गुरु ग्रह सम्बन्धी) पूजा, लाल (रवि ग्रह सम्बन्धी) पूजा आदि शांति के उपाय अन्य ज्योतिषी बताते हैं उनके उपाय जैनशास्त्रानुसार ही करना चाहिए। नवग्रह विधान के अनुसार विवाह के समय जिनेन्द्र पूजा करा देना चाहिए और विशेष करना हो तो नवग्रह मण्डल मंडवाकर "**ओं ह्रीं अर्हम् अ सि आ उ सा सर्वविघ्न शांति कुरु कुरु स्वाहा**" इस मन्त्र की ग्रह के हिसाब से यथाशक्ति जाप्य व विवाह के समय आहुति करा देना चाहिए।

(५) विनायक यन्त्र पूजा आदि के प्रारम्भ में यन्त्राभिषेक और आह्वानन आदि विनय और शुद्धि को ख्याल में रख कर ही नहीं लिखे गये हैं, क्योंकि शुद्ध धोती-दुपटटा पहने बिना पुजा और रात्रि में अभिषेक आदि करना उचित नहीं।

नव दम्पति को सम्बोधन

आप दोनों गार्हस्थ्य जीवन में प्रविष्ट हुए हैं। अपने मानव जीवन को पवित्र और सफल बनाने के लिए ही आपने यह क्षेत्र चुना है। इसको आनन्दपूर्ण और सुखमय बनाना आपके ही ऊपर निर्भर है। यह केवल इन्द्रिय भोग भोगने के लिए नहीं , वरन् संयमपूर्वक सदाचार और शील की साधना के उददेश्य से आपने अंगीकार किया है । आप दोनों एक-दूसरे के प्रति तो जवाबदार हैं ही, पर स्व-धर्म, स्व-समाज की और स्व-देश की सेवा का दायित्व भी आप पर आ पड़ा है। यह गृहस्थ का भार बहुत बड़ा और अनेक संकटों से युक्त है। गृहस्थ अवस्था में आने वाली अनेक आपत्तियों से घबराकर गृह-विरत हो जाने के बहुत उदाहरण मिलेंगे। परन्तु हमें आशा है आप जीवन की हरेक परीक्षा में उत्तीर्ण होंगे। समस्त कठिनाइयों को कर्मयोगी बन कर सहन करते हुए उत्तरोत्तर प्रगति पथ पर दृढ़ रहना आपका कर्त्तव्य होगा।

पुराणों में उल्लिखित जयकुमार- सुलोचना, राम-सीता या अन्य किसी के दाम्पत्य जीवन के आदर्श को आप अपने सामने रखें। हमारी यह शुभकामना है कि उन्हीं के समान भावी पीढ़ी आपका भी उदाहरण अपने समक्ष रखे ।

आप दोनों यौवन के वेग में न बह कर अपने कुल के सम्मान का ख्याल रखते हुए गौरवमय यशस्वी जीवन व्यतीत करें। आपका व्यवहार न्याय एवं नैतिकतापूर्ण हो।

पति का कर्तव्य है कि वह अपनी पत्नी को सहयोगिनी मान कर उसे ऊँचा उठाने के साधन सदा जुटाता रहे और पत्नी, पति के हर कार्य को सफल बनाने में पूरा योग देती रहे। दोनों भौतिकता में न लुभा कर आध्यात्मिकता के रहस्य को समझें, इसी में उन्हें यथार्थ सुख और शांति प्राप्त होगी। इसके लिए प्रतिदिन सामायिक और स्वाध्याय आवश्यक है। हमारी हार्दिक मंगल-कामना है कि आपकी यह जोड़ी दीर्घकाल तक बनी रहें।

भजन

निरखो अंग-अंग जिनवर के, जिनसे झलके शान्ति अपार ॥ टेक ॥

चरण – कमल जिनवर कहें, घूमा सब संसार।
पर क्षण – भंगुर जगत में, निज आत्म-तत्त्व ही सार।
यातें पद्मासन विराजे जिनवर, झलके शान्ति अपार ॥ १ ॥

हस्त – युगल जिनवर कहें, पर का करता होय।
ऐसी मिथ्या बुद्धि से, भ्रमण – चतुर्गति होय।
याते पद्मासन विराजे जिनवर, झलके शान्ति अपार ॥ २ ॥

लोचन – द्वय जिनवर कहें, देखा सब संसार।
पर दुःखमय गति-चार में, ध्रुव–आत्मतत्त्व ही सार।
यातैं नाशा दृष्टि विराजे, जिनवर झलके शान्ति अपार ॥ ३ ॥

अन्तर्मुख – मुद्रा अहो, आत्मतत्त्व दरसाय।
जिन–दर्शन कर निज दर्शन पर, सत-गुरु-वचन सुहाय ॥
यातैं अन्तर्दृष्टि विराजें जिनवर, झलके शान्ति अपार ॥ ४ ॥

जैनधर्म में हवन : एक स्पष्टीकरण

जैनधर्म अहिंसाप्रधान धर्म है; अतः इसमें पाप से बचने और पुण्योपार्जन के जितने भी साधन पूजा-विधानादि हैं, उनमें अहिंसात्मक पद्धति को प्रधान मानकर ही विधि-विधान हैं । यदि इसमें भी अन्य मत के समान पूजा-विधान आदि की पद्धति होती, तब तो हमें यह पता ही नहीं चलता कि जैनधर्म और अन्य धर्म में भेद भी है ।

यह तो सर्वविदित है कि जैन धर्म में पद-पद पर जिस कार्य में हिंसा कम और पुण्य अधिक हो, वही कार्य सराहनीय कहा गया है । यहाँ प्रत्येक क्रिया विवेकपूर्ण ही होती है । यदि हमने सावधानी न बरती और मात्र परम्परावश क्रिया करने के पक्षपाती रहे तो निश्चित है कि हमें पुण्य के बदले पाप ही बंधने वाला है ।

भगवान वासुपूज्य की स्तुति करते हुए आचार्य समन्तभद्र ने 'बृहतस्वयंभूस्तोत्र' में लिखा है :-

'पूज्यं जिनं त्वार्चयतो जनस्य सावद्यलेशो बहुपुण्यराशौ ।
दोषायनालं कणिका विषस्य न दूषिका शीतशिवाम्बुराशौ ॥

सराग परिणति अथवा आरम्भजनित थोड़ा-सा पाप का लेश, बहुत पुण्यकी राशि में दोष के लिए समर्थ नहीं है । जिस प्रकार विष की अल्पमात्रा शीतल एवं आल्हादकारी जल से युक्त समुद्र में दोष उत्पन्न करने वाली नहीं है ।

जिसमें आरम्भ थोड़ा और पुण्य बहुत प्राप्त हो, वह कार्य करना योग्य है ।

लेकिन आज जैनधर्म का मूल अहिंसा को जानने-मानने वाले और अपने को जैनधर्म का कट्टर श्रद्धानी बताने वाले भी रूढ़िवश भट्टारक परम्परा से प्राप्त विकृतियों को ही पीटते चले आ रहे हैं और विधान, वेदीप्रतिष्ठा, पंचकल्याणकों में शांति-विसर्जन में अन्य धर्मों के समान मेवा, घी, शक्कर आदि पदार्थों से बनी धूप, जिसमें शीघ्र ही त्रसजीवों की उत्पत्ति हो जाती है; को अग्नियुक्त कुण्ड में आहुति देकर हवन (यज्ञ) कराते जा रहे हैं ।

प्रथम तो अग्नि स्वयं एकेन्द्रिय जीव है तथा उसमें डाली गई धूप और समिधा में भी त्रस जीव पाये जाते हैं- यह साक्षात हिंसा प्रतिरूपक उदाहरण है ।

अतः जो हिंसा के कारण यज्ञादि (हवनादि) को धर्म का कारण मान रहे हैं और विधान आदि कराने वाले यजमान को भी धूप व अग्नि से हवन कराने को बाध्य करते हैं, उन्हें देखकर बड़ा खेद होता है ।

यज्ञ (हवन) आदि के सम्बन्ध में आचार्यकल्प पंडित टोडरमलजी ने भी मोक्षमार्गप्रकाशक में लिखा है :-

'अग्नि आदि का महा आरम्भ करते हैं, वहाँ जीव घात होता है, सो उन्हीं के शास्त्रों में व लोक में हिंसा का निषेध है, परन्तु ऐसे निर्दय हैं कि कुछ गिनते नहीं ।'

यद्यपि यह बात पंडित टोडरमलजी ने 'विविधमत समीक्षा' नामक पांचवें अधिकार के 'यज्ञ में पशुहिंसा का प्रतिषेध' नामक प्रकरण में लिखी है, परन्तु विचार करें कि जब हम अग्नि का महा आरम्भ कर जीवघात करते हैं तो क्या हमें मात्र जैन होने से ही उस अग्नि के महा आरम्भ में हिंसा नहीं होगी और उस अग्नि में जीवघात नहीं होगा ?

कई बार ऐसा देखने में आया है कि प्रतिष्ठाचार्य महोदय ने तो धूप लिखा दी और श्रावक बाजार से बनी हुई धूप ले आये; जबकि उस धूप में लट, तिरूला आदि दो-इन्द्रिय जीव भी पाये जाते हैं; लेकिन फिर भी उस धूप की अग्नि में आहुति देते जाते हैं।

साथ ही मेवा, शक्कर आदि खाद्य पदार्थों से बनी सुगन्धित धूप को अग्नि में खेते जाते हैं; जिससे मंदिर में चारों ओर धुँआ भर जाता है, यहाँ तक कि हवन में बैठने वालों की आंखों से आँसू बहने लगते हैं। जब मनुष्यों की यह दशा होती है; तब मक्खी, मच्छर आदि छोटे-छोटे जीवों की क्या दशा होती होगी-यह हमारे प्रतिष्ठाचार्यों की बुद्धि में क्यों नहीं आता ?

अरे इस सुगन्धित धूप का धुँआ भर जाने से मक्खी, मच्छर ही नहीं; राजा बज्रजंघ और रानी श्रीमती तक का मरण हो गया था। राजा बज्रजंघ के मरण के संदर्भ में पुराणों में जो उल्लेख मिलते हैं वे इस प्रकार हैं 'एक दिन राजा बज्रजंघ अपनी पत्नी रानी श्रीमती के साथ अपने शय्या गृह की कोमल शय्या पर शयन कर रहे थे। सेवक लोग प्रतिदिन की भांति धूपघड़ों में धूप डालकर शय्यागृह से बाहर निकल गये थे, लेकिन आज वे लोग झरोखों के द्वार खोलना भूल गये थे; इसलिये धूपघड़ों का धुँआ उसी गृह में रुककर भर गया था। उस धुएँ से वे पति-पत्नी (राजा बज्रजंघ और रानी श्रीमती) मूर्च्छित हो गये उनके श्वांस रुक गये, और उसी रात्रि में वे दोनों ही सदा के लिए इस लोक से विदा हो गये।'

हम जिस धूप को अग्नि में डालकर धर्म मानते हैं, महापुराण के रचयिता आचार्य जिनसेन ने तो उस धूप को भोग का कारण कहा है :-

भोगांगेनापि धूपेन तयोरासीत्परासुता।
धिगिमान् भोगि भोगावान् भोगान् प्राणापहारिणः ॥

"देखहु भोग का कारण जो धूप, ताकरि राजा-रानी (राजा बज्रजंघ व रानी श्रीमती) दोऊ मृतक अवस्था को प्राप्त भये; सो धिक्कार होऊ इन भोगनिकूं।"

समझ में नहीं आता कि मेवा, खोपरा, शक्कर, घी आदि को अग्नि में डालने से कौनसा धर्म होगा ? यदि अग्नि में भस्म करने के बजाय वह घी, खोपरा, शक्कर, मेवा आदि किसी गरीब को दें तो पुण्य हो सकता है; परन्तु ये गरीबों को तो नहीं देंगे और मान कषाय के वश अग्नि में डालते हैं। इस व्यर्थ के अपव्यय के बारे में जो लोग जैनों की निन्दा करते हैं, वे यह ठीक ही कहते हैं कि 'लोगों को घी खाने को नहीं मिल रहा और ये जैन लोग उसे अग्नि में डालते हैं।'

इसी संदर्भ में वयोवृद्ध प्रसिद्ध विद्वान पं. कैलाशचन्द्र जी शास्त्री, सिद्धान्ताचार्य बनारस ने लिखा है :–

'अग्नि में आहुति देकर देवताओं को तृप्त करने की वैदिक विधि इसके मूल में है। वैदिक धर्म में अग्नि को देवताओं का मुख कहा है, किन्तु जैनधर्ममें अग्नि न स्वयं कोई देवता है और न देवताओं का मुख है। वह तो भस्म कर देने वाली जड़ वस्तु है। अतः उसमें आहुति देकर किसी को तृप्त करने का कोई प्रश्न ही नहीं है। पूजन तो अग्नि में क्षेपण बिना भी सम्भव है।'

इसी प्रकार इस धूप से हवन की अनेक त्रुटियाँ बताते हुए श्री मिलापचन्दजी कटारिया ने भी साफ-साफ लिखा है :–

'हवन, यह जैनधर्म की मूल संस्कृति नहीं है। जैनधर्म की मूल चीज है-अन्तरंग में रागद्वेषादि कषायों की विजय और बाह्य में जीवदया का पालन; ये दोनों ही हवन में घटित नहीं होते हैं। हवन से अग्निकायिक जीवों की विराधना होती है। दूर-दूर तक फैलने वाले अग्नि के गरम-गरम धुएँ से वायुकाय आदि जीवों का विघात एवं मक्खी, मच्छर आदि उड़ने वाले छोटे-छोटे त्रसजीवों को बाधा आदि तो प्रत्यक्ष ही दिखती है। साथ ही उसके काले धुएँ से मन्दिर की सफेद दीवारों पर सुन्दर चित्रों, छत्र-चमरों और बहुमूल्य चन्दोवों की भी खासी मिट्टी-पलीद हुये बिना नहीं रहती है। इससे कभी-कभी आग लगने की सम्भावना भी रहती है।

इस प्रकार हवन से सिवाय हानि के कोई लाभ नहीं दीखता है। अहिंसामय जैनधर्म में यह निरर्थक सावद्य क्रिया कैसे पनप रही है? आज के जमाने में घृत, मेवा, मिष्ठान्न, फलादि पदार्थ वैसे ही मँहगाई की पराकाष्ठा तक पहुँचकर जनसाधारण के लिए अत्यन्त दुर्लभ हो गये हैं। उनको अग्नि में जलाकर धर्म मानना इससे बढ़कर अज्ञानता अन्य क्या हो सकती है?

सिद्धचक्र विधानों में हजारों रुपयों की सामग्री जलाकर खाक की जाती है। अगर ये ही रुपये दीन-अनाथों के काम में लगाये जायें तो कितना पुण्य हो। यह भी तो सोचना चाहियेकि अग्नि में घृतादि जलाने के साथ धर्म का सम्बन्ध कैसे है? अविचारपूर्ण क्रियाओं का कोई फल मिलने वाला नहीं है धर्म का असली तत्त्व छिपा जा रहा है और थोथे क्रियाकाण्डों का जोर बढ़ता जा रहा है। विवेकी विद्वान मन में सब कुछ जानते हुए भी अल्पज्ञ लोगों के रुख के विरुद्ध कदम उठाने का साहस नहीं कर रहे;-यह बड़े ही परिताप का विषय है।'

पद्मपुराण में कहा है :–

'प्रथम तो यज्ञ की कल्पना ही निरर्थक है। दूसरे यदि कल्पना करनी ही है तो विद्वानों को हिंसा द्वारा यज्ञ की कल्पना नहीं करना चाहिए, उन्हें धर्मयज्ञ ही करना चाहिए। वह इस तरह कि आत्मा यजमान है, शरीर वेदी है, संतोष साकल्य है, त्याग होम है, मस्तक के केश कुशा हैं, प्राणियों

की रक्षा दक्षिणा है, शुक्लध्यान द्वारा सिद्धपद की प्राप्ति फल है, सत्य बोलना स्तम्भ है,तप अग्नि है,चंचल मन पशु है और इन्द्रियाँ समिधायें हैं - यही धर्मयज्ञ कहलाता है।'

जैन निबंध रत्नावली, भाग १ में संकलित 'जैनधर्म और हवन' नामक निबंध में लेखक ने आचार्यों के प्रमाण और तर्कों से यह सिद्ध कर दिया है कि अग्नि से हवन करना जैनधर्म की मूल संस्कृति नहीं है। अतः जो भी भाई अग्नि से हवन कराते हैं अथवा करते हैं, उन सभी से निवेदन है कि एक बार उस निबंध को अवश्य पढ़ें, जिससे यह हिंसात्मक प्रवृति बन्द हो तथा पुष्पों से शांति विसर्जन की पद्धति को ही सभी अपनायें— यही भावना है।

भजन

रोम रोम से निकले प्रभुवर नाम तुम्हारा.. नाम तुम्हारा।
ऐसी भक्ति करूँ प्रभूजी, पाऊँ न जनम दुबारा॥ टेक॥

जिन मन्दिर में आकर जिनवर दर्शन पाया।
जिनवर सम निज शुद्धातम का अनुपम दर्शन पाया॥
जनम जनम तक ना भूलूँगा-२ यह उपकार तुम्हारा॥ १॥

अर्हन्तों को जाना शुद्धातम पहिचाना।
द्रव्य और गुण पर्यायों से निज को जिन सम माना॥
सम्यक् दर्शन होता प्रभुवर-२ मोहतिमिर क्षयकारा॥ २॥

पञ्च पाप को त्यागूँ, पंच महाव्रत धारूँ।
निग्रन्थों का पथ, अपनाकर, रत्नत्रय पथ साधूँ॥
पाप पुण्य की बन्ध श्रंखला नष्ट करूँ दुःखकारा॥ ३॥

देव—शस्त्र—गुरु मेरे हैं सच्चे हितकारी।
सहज शुद्ध चैतन्यराज की महिमा जग में न्यारी॥
भेद ज्ञान बिन नहीं मिलेगा-२ भव का कभी किनारा॥ ४॥

शान्ति पाठ

हूं शान्तिमय ध्रुव ज्ञानमय, ऐसी प्रतीति जब जगे।
अनुभूति हो आनन्दमय, सारी विकलता तब भगे ।।
निज भाव ही है एक आश्रय, शान्तिदाता सुखमयी।
भूल स्व दर-दर भटकते, शान्ति कब किसने लही ।।
निज घर बिना विश्राम नाहीं, आज यह निश्चय हुआ।
मोह की चट्टान टूटी, शान्ति निर्झर बह रहा ।।
यह शान्ति धारा हो अखण्ड, चिरकाल तक बहती रहे।
होवें निमग्न सुभव्य जन, सुख-शान्ति सब पाते रहें ।।
पूजोपरांत प्रभो यही, इक भावना है हो रही।
लीन निज में ही रहूं, प्रभू और कुछ वॉछा नहीं ।।
सहज परम आनन्दमय, निज ज्ञायक अविकार।
स्व में लीन परिणति विषें, बहती समरस धार ।।

विसर्जन पाठ

थी धन्य घड़ी जब निज ज्ञायक की, महिमा मैंने पहचानी।
हे वीतराग सर्वज्ञ महा उपकारी, तब पूजन ठानी ।।
सुख हेतु जगत में भ्रमता था, अंतर में सुखसागर पाया।
प्रभु निजानंद में लीन देख, मोहि यही भाव अब उमगाया ।।
पूजा का भाव विसर्जन कर, तुम सम ही निज में थिर होउँ।
उपयोग नहीं बाहर जावे, भव क्लेश बीज अब नहीं बोउँ ।।
पूजा का किया विसर्जन प्रभु, अरु पाप भाव में पहुंच गया।
अब तक की मूरखता भारी, तज नीम हलाहल हाय पिया ।।
ये तो भारी कमजोरी है, उपयोग नहीं टिक पाता है।
तत्वादिक चिंतन भक्ति से भी, दूर पाप में जाता है ।।
केवल अनंत के धनी विभो ! भावों में तब तक बस जाना।
निज से बाहर भटकी परिणति, निज ज्ञायक में ही पहुंचाना ।।
पावन पुरूषार्थ प्रकट होवे, बस निजानंद में मग्न रहूँ।
तुम आवागमन विमुक्त हुए, मैं पास आपके जा तिष्ठूं ।।